राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

SM

स्वर्णिम मुंबई

जून - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

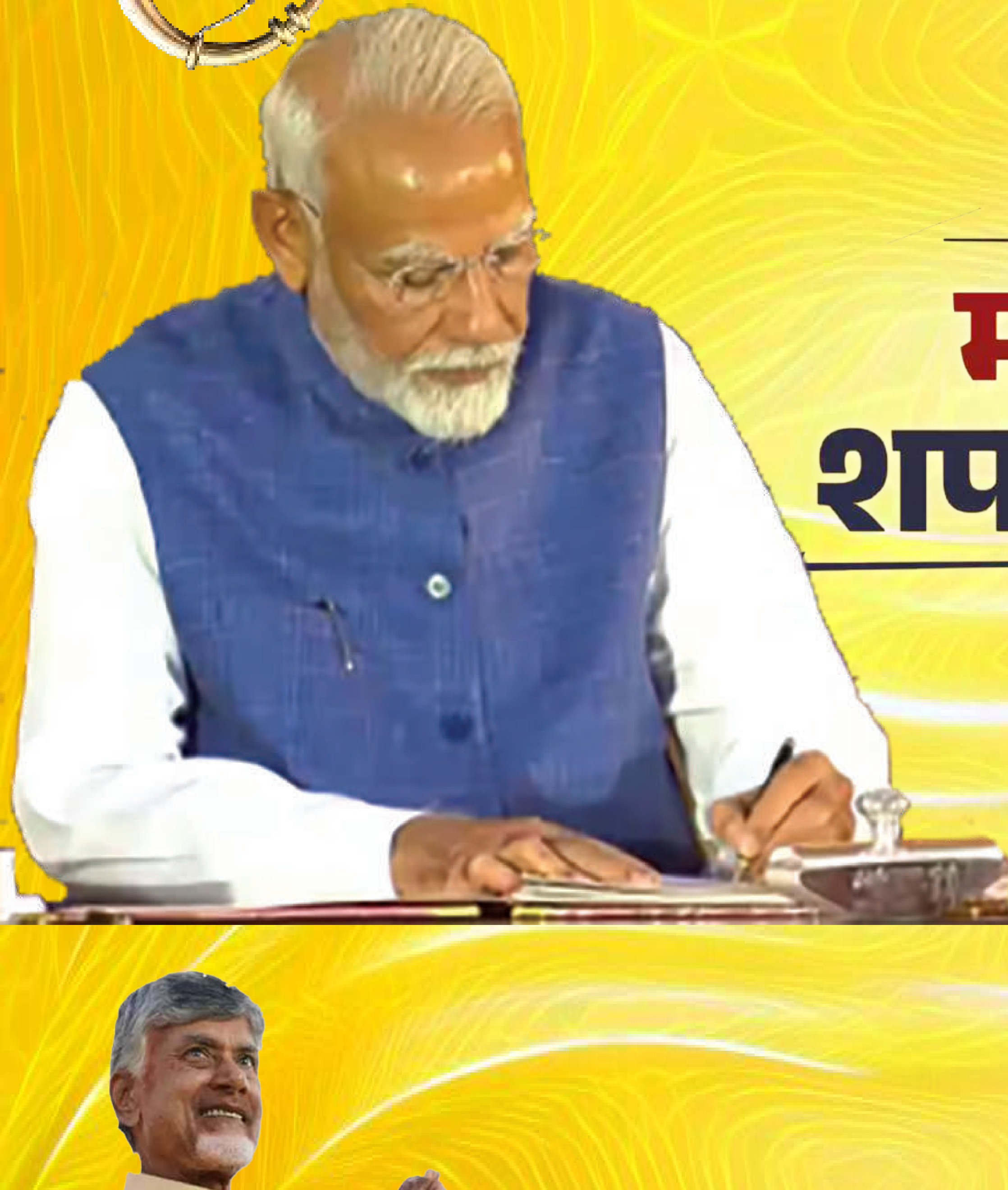

मोदी 3.0 शपथग्रहण

चंद्रबाबू नायडू की चौथी पारी

ओडिशा के नए मुख्यमंत्री मोहन माझी

जल है।
तो कल है।
पृथ्वी के सतह पर दो-तिहई
जल है, लेकिन 0.002% ही
ताजा जल है पृथ्वी पर।
ताजा जल
अपशिष्ट
ना करें।

Save Water !

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

• वर्ष : 9 • अंकः 03 • मुंबई • जून -2024

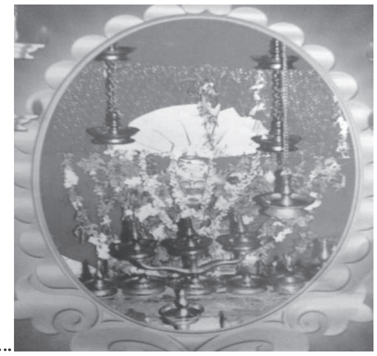

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला, संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

मोदी के मंत्रिमंडल में महाराष्ट्र को कितने विभाग मिलेंगे?	05
राष्ट्रपति ने मोदी को दिया नई सरकार बनाने का न्योता	10
कांग्रेस अध्यक्ष बोले- जनादेश मोदी के खिलाफ	14
देश-दुनिया	18
पकवान	20
राशिफल	24
कुल्लू-मनाली	26
सिनेमा	28
महान शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत का वास्तविक जीवन-दर्शन : ...	30
ओडिशा हलचल	32
विविधा	34
नसीब का लिखा...	37
नदी के लुटेरे...	40
वंशबेल (कथा सागर)	46
आंवला की खेती..	56

सुविचारः

संकोच युवाओं के लिए एक आभूषण है, लेकिन बड़ी उम्र के लोगों के लिए धिक्कार.

संपादकीय

मोदी की अपनी विशिष्ट शैली ...

चुनाव प्रचार समाप्त हो चुका है। नेताओं की यात्राएं भी 'हर गयी हैं, परंतु पीएम मोदी की कन्याकुमारी की यात्रा और विपक्ष का उस यात्रा के खिलाफ शोर, चुनाव की गहमागहमी को कम नहीं होने दे रहा। बीजेपी के खिलाफ लड़ रही सभी पार्टियों का एक सुर में कहना है कि एक जून को चुनाव वाले दिन भी मोदी अपने अलग अंदाज में चुनाव प्रचार करते हुए ही नजर आएंगे। क्योंकि अपनी साधना के दौरान भी पूरे दिन वह टीवी स्क्रीन पर ही रहेंगे। भारत और दुनिया भर के तमाम मीडिया चैनल रामेश्वरम पहुँच चुके हैं, और वे सभी पीएम मोदी के हर पल की रिपोर्टिंग १ जून की शाम तक करने वाले हैं।

नरेंद्र मोदी के बारे में अब एक आम धारणा बन भी गई है कि वह एक चुनाव मशीन की तरह काम करते हैं। २००२ से लेकर आज तक अपना कोई चुनाव नहीं हारने वाले मोदी बीजेपी के लिए एकदम अपरिहार्य बन गए हैं। वह हैं तो एक व्यक्ति, लेकिन कई भूमिकाएँ निभाते हैं। पिछल ` १० सालों से वह हर चुनाव में बीजेपी के लिए सलामी बल्लेबाज बन कर सबसे आगे उतरते हैं। मोदी सुनिश्चित करते हैं कि पार्टी हर हाल में जीते। बीजेपी के चुनाव में जीतने के आधार पर वह अपनी योजनाएँ बनाते हैं। यह देखा गया है कि जब कभी किसी राज्य में बीजेपी चुनाव हार भी जाती है, तो भी मोदी रक्षात्मक नहीं होते। वह अगली पहल के लिए खुद को तैयार कर लेते हैं। वह सत्ता प्राप्त कर के भी कभी आराम नहीं करते। शायद वह अपने विरोधियों को उम्मीद की कोई किरण नहीं देना चाहते। मोदी अपने ही जाल में विपक्ष को फंसाना जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि विरोधियों द्वारा उनकी साधना पर बात करना या कटाक्ष करना भी उनके प्रति मीडिया का ध्यान आकर्षित करने में सहायता प्राप्त करेगा। जो अंततः उनके चुनावी अभियान के लिए बहुत बढ़िया सिद्ध होने वाला है। लगभग ढाई महीने के सघन चुनावी अभियान में विभिन्न पार्टियों ने अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल किया, कुछ वर्ग की भावनाओं को चोट पहुंचाने की कोशिश की, कुछ राजनीतिज्ञों ने लोगों को धमकाया भी। उसके बाद भी मतदाताओं ने शांति पूर्वक वोट दिया और अपनी पसंद के उम्मीदवार के चयन की प्रक्रिया पूरी की।ॅंनुैंगसहू प्रायः चुनाव प्रचार समाप्त होने के बाद राजनीतिक लोग अपने पुराने दिनों की ओर लौट जाते हैं। लेकिन कुछ नेता उसके बाद भी संकेतों और भावों से लोकतंत्र निर्णयकर्ताओं को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। विपक्ष मोदी पर इसी तरह की कोशिश करने का आरोप लगा रहा है और मोदी के हर अभियान को ट्रैक करता है और यही मीडिया के आकर्षण का कारण भी है। कुछ लोग इसे चुनावी कानून का उल्लंघन भी बता रहे हैं। वे मोदी की साधना को इवेंट बता रहे हैं। इसकी तुलना टीवी विज्ञापन से कर रहे हैं। चुनावी अभियान पर हर पार्टी अपनी रणनीति बनाती है। अब पार्टियों की अपनी चतुराई और योजनाओं पर निर्भर करता है कि वह किस तरह की रणनीति बना रहे हैं। चुनावी सर्वेक्षणों से पता चलता है कि परस्पर विरोधी दलों के बीच कीचड़ उछालने, विरोधियों के बारे में झू ी खबरें या भय फैलाने वाल ` वाले अभियानों को लोग ज्यादा पसंद नहीं करते। लेकिन यह भी सत्य है कि भारतीय चुनावों में गंदे खेल की भी खुली छूट मिलती रहती है। प्रायः हम सभ्य तरीकों का उपयोग नहीं करते। राजनीतिक संबद्धता ज्यादा मायने रखती है। नकारात्मकता या लोगों का अपमान करना चुनाव प्रचार का हिस्सा माना जाता है। पीएम जैसे पद के लिए अपमान जनक शब्दों का प्रयोग इस चुनाव में भी खूब हुआ है। वहीं प्रधानमंत्री के भी कुछ शब्दों पर भी मर्यादा की कसौटी कसी गई। चुनाव में जीत ही अंतिम लक्ष्य है। विपक्ष ने भी चुनाव के अंतिम घंटे तक खुद को खबरों में बनाए रखने की जुगत लगाई है। इंडिया ग'बंधन ने चुनाव वाले दिन ही अपनी बै'क बुलाई है। अभी से ही यह दावा भी कर रहे हैं कि उनको ३०० से अधिक सीटें आ रही हैं। वे १ जून को देश में अपनी सरकार बनाने के एजेंडे पर बात करने वाले है, ताकि अंतिम दौर के चुनाव के दिन भी उनका संदेश नीचे कार्यकर्ताओं तक पहुँच सके। यह भी प्रचार का ही एक तरीका होगा। आम मतदाता और अपने लोगों को अंतिम घंटे तक अपने साथ जोड़कर रखना ही तो चुनाव प्रचार का उद्देश्य है। इसी तरह टीमसी की नेता ममता बनर्जी भी १ जून को बंगाल में चक्रवात राहत के नाम पर लोगों से जुड़ी रहेंगी। भले ही उन्होंने अपनी दिल्ली यात्रा टाल दी हो, पर चुनावी अभियान को विराम नहीं दिया है।

वह अधिक से अधिक समय तक टेलीविजन के लाइव प्रसारित कार्यक्रमों में बने रहने की कला बाकी लोगों से ज्यादा जानते हैं। वह कभी राम की मूर्ति के सामने नतमस्तक हो जाते हैं और पूरे दिन देश की जनता उन्हें ही देखती रह जाती है, तो कभी किसी निर्माण साइट पर मजदूरों के साथ बात करते, साथ में भोजन करते हुए लाइम लाइट चुरा लेते हैं। मोदी ने कोशिश की है कि भारत के १४० करोड़ लोगों को अपनी चेतना और राष्ट्र सेवा से लोगों को जोड़े रखें। इसलिए वह हजार साल के बाद की पीढ़ियों के लिए भारत के निर्माण की बात करते हैं। वह स्वयं का सार्वजनिक रूप से शुद्धिकरण अनुष्ठान करते हैं। फर्श पर सोते हैं। केवल नारियल या नीबू पानी के सहारे रहने का व्रत लेते हैं। यही वह रामेश्वरम में भी कर रहे हैं। मोदी के लिए राजनीति का अस्तित्व धर्म से अलग नहीं है। यही उन्हें दुनिया के बाकी राजनीतिज्ञों से अलग भी करता है और शायद लोकप्रिय भी बनाता है। भारत में चुनाव परिणाम बेहद अप्रत्याशित होते हैं। चुनाव-पूर्व सर्वेक्षणों में यह दिख रहा है कि इस बार भारतीय जनता पार्टी कई जगह फंसी हुई है। ४ जून को बहुमत का फैसला भी हो जाएगा। ल `किन उसके पहले १ जून का मतदान ज्यादा महत्वपूर्ण है। मोदी स्वयं इसी दिन के परिणाम के अनुसार आगे भारत का नेतृत्व कर पाएंगे। उनके १० साल का शासन यदि आगे बढ़ेगा तो हर सीट का अपना महत्व होगा। कोई कुछ भी कहे, मोदी यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि अंतिम वोट भी बीजेपी को मिले। ■

राजनीति

मोदी के मंत्रिमंडल में महाराष्ट्र को कितने विभाग मिलेंगे?

एकनाथ शिंदे ने कहा, 'राज्य के विकास के लिए...'

पूरा राज्य देख रहा है कि शिंदे गुट और अजित पवार गुट को महाराष्ट्र से कितनी सीटें मिलती हैं। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने दिल्ली में एनडीए सांसदों की बैठक के बाद मीडिया से बात की। उन्होंने कैबिनेट की बहस का भी जवाब दिया है।

नरेंद्र मोदी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। भव्य समारोह ९ जून की शाम को होगा। सरकार बनने से पहले ही देश में अब कैबिनेट के लिए बातचीत चल रही है। सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि मंत्रिमंडल में किसे जगह मिलेगी। चूंकि एनडीए के तहत सरकार भी बनेगी, इसलिए सभी सहयोगियों को नाराज किए बिना मंत्री पद देना होगा. इसलिए पूरा प्रदेश देख रहा है कि शिंदे गुट और अजित पवार गुट को महाराष्ट्र से कितनी सीटें मिलती हैं। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने दिल्ली में एनडीए सांसदों की बैठक के बाद मीडिया से बात की। उन्होंने कैबिनेट की बहस का भी जवाब दिया है।

उन्होंने कहा, 'बाकी का कुछ काम अगले पांच साल में किया जाएगा। अपने भाषण में मोदी ने कहा कि आम आदमी, गरीब, मध्यम वर्ग, किसान, महिला और युवा का जीवन बदलना चाहिए और सरकार के तौर पर यह हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा, 'हमने सरकार के तौर पर अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं और बहुत बड़े फैसले लिए जाएंगे। मैंने उन्हें शुभकामनाएं दी हैं कि हर तरह से न्याय देने वाली सरकार काम करेगी। यह पूछे जाने पर कि कैबिनेट में कब जगह मिलेगी, एकनाथ शिंदे ने कहा, 'हम मोदी को प्रधानमंत्री बनाना चाहते हैं, यह हमारी प्राथमिकता है। अभी तक कोई चर्चा नहीं हुई है। मोदी ने अपने भाषण में यह भी कहा है। शिवसेना और भाजपा का वैचारिक गठबंधन है। यह गठबंधन देश के विकास के लिए बनाया गया है। यह गठबंधन इस बारे में है कि लोगों को क्या मिलेगा और यह देश कैसे आगे बढ़ेगा, बजाय इसके कि किसे क्या मिलेगा। महाराष्ट्र को विकास से काफी उम्मीदें हैं। और मोदी जी निश्चित रूप से महाराष्ट्र के विकास में बहुत योगदान देंगे.' उन्होंने कैबिनेट पर सीधे टिप्पणी करने से परहेज किया।

महाराष्ट्र में कितनी सीटों पर चर्चा हो रही है?

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे को भी केंद्र में एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखा जाता है। उनकी पार्टी शिवसेना ने सात लोकसभा सीटें जीती हैं। शिवसेना ने कथित तौर पर एनडीए सरकार में एक कैबिनेट और दो राज्य मंत्रियों की मांग की है। एबीपी न्यूज ने खबर दी थी कि अजित पवार गुट को भी एक सीट मिलेगी.

(फोटो - एकनाथ शिंदे /X)

नरेंद्र मोदी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। भव्य समारोह ९ जून की शाम को होगा। सरकार बनने से पहले ही देश में अब कैबिनेट के लिए बातचीत चल रही है। सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि मंत्रिमंडल में किसे जगह मिलेगी। चूंकि एनडीए के तहत सरकार भी बनेगी, इसलिए सभी सहयोगियों को नाराज किए बिना मंत्री पद देना होगा. इसलिए पूरा प्रदेश देख रहा है कि शिंदे गुट और अजित पवार गुट को महाराष्ट्र से कितनी सीटें मिलती हैं। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने दिल्ली में एनडीए सांसदों की बैठक के बाद मीडिया से बात की। उन्होंने कैबिनेट की बहस का भी जवाब दिया है।

क्या एनडीए में घर वापसी करेंगे उद्धव ठाकरे?

लोकसभा चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद से राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन ने रफ्तार पकड़ी है। पर्दे के पीछे बहुत सारे प्रयोग हो रहे हैं। इस बीच, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और ठाकरे गुट के प्रमुख उद्धव ठाकरे के एनडीए में शामिल होने की संभावना है। वह कल (५ जून) दिल्ली में हुई इंडिया अलायंस की बैठक से अनुपस्थित थे। इसलिए बहुत सारी बहस चल रही है। हालांकि, ठाकरे खेमे के नेताओं ने इन दावों का खंडन किया है.

महा विकास अघाड़ी (एमवीए) सहयोगियों ने महाराष्ट्र में अच्छा प्रदर्शन किया है। ठाकरे गुट, राकांपा और कांग्रेस ने ४८ में से ३० सीटें जीतीं। हालांकि एनडीए ने देश भर में बहुमत हासिल किया है, लेकिन इंडिया अलायंस ने भी कई राज्यों में अधिकांश सीटों पर कब्जा कर लिया है। इसलिए इंडिया अलायंस और एनडीए दोनों की ओर से सरकार बनाने की कोशिशें की जा रही हैं. इस बीच महाराष्ट्र की राजनीति से चौंकाने वाली खबर सामने आ रही है। उद्धव ठाकरे आने वाले दिनों में एनडीए में शामिल हो सकते हैं। चर्चा यह भी है कि इसके लिए किसी केंद्रीय मंत्री को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस पर ठाकरे गुट के नेताओं ने प्रतिक्रिया दी है। एक अन्य ट्वीट में उन्होंने भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा, 'एक गोदी 'पत्रकार' की जान। उन्होंने कहा कि २०१९ में भाजपा को बहुमत मिलेगा। बाद में उन्होंने कहा कि एग्जिट पोल ने उस गोदी पत्रकारिता को साबित कर दिया है जिसे मोदी चश्मे से देखते हैं। हालांकि, अब बहुमत नहीं है। इसलिए उन्होंने अफवाह फैलाई कि उद्धव ठाकरे एनडीए में लौटेंगे। मोये मोए। यह नहीं होना चाहिए। आप रो सकते हैं।

उद्धव ठाकरे के एनडीए में शामिल होने की अफवाहों के बीच आदित्य ठाकरे ने एक्स पर एक पोस्ट कर बीजेपी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा, ''देश ने संविधान को बदलने और लोकतंत्र को समाप्त करने के भाजपा के प्रयासों को खारिज कर दिया। इस चुनाव ने साबित कर दिया है कि हमारे देश में अहंकार का कोई स्थान नहीं है। देश अहंकारी, अधिनायकवादी, लोकतंत्र विरोधी ताकतों और उन लोगों को नकार देगा जो हमारे संविधान की जगह अपनी ही पार्टी के नियमों को लागू करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा, ''महाराष्ट्र में भाजपा ने हमारे राज्य को लूटकर अपनी आर्थिक ताकत और स्वाभिमान खो दिया है। महाराष्ट्र विरोधी भाजपा को महाराष्ट्र के मतदाताओं ने नकार दिया है और इस बार फिर देखने को मिलेगा। शिवसेना के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने भी मीडिया से कहा, 'अभी तक ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई है। हमने पहले भी कहा है कि पीएम मोदी के पास बहुमत है, उनके पास करीब २४० सीटें हैं। इसलिए उन्हें शपथ लेनी चाहिए। उन्हें तीसरी बार शपथ लेनी चाहिए। फिर हम चौथी शपथ के बारे में सोचेंगे।

'देवेंद्र फडणवीस, छोटा राजन और नरेंद्र मोदी... : संजय राउत

देश में ईडी केवल राजनीतिक विरोधियों की संपत्तियों के पीछे जा रहा है। संजय राउत ने मांग की कि जो न्याय प्रफुल्ल पटेल के साथ किया गया था, वही न्याय सभी पर लागू होना चाहिए। उन्होंने कहा, 'मोदी का मतलब बड़ा राजन और देवेंद्र फडणवीस का मतलब छोटा राजन है. संजय राउत ने एनडी के सरकार बनाने के दावे पर टिप्पणी की। उन्होंने कहा, 'भले ही एनडी ने सरकार बनाने का दावा पेश किया हो, लेकिन मोदी जब सरकार चलाएंगे तो नौ नेता होंगे. एनडीए कहां है? चंद्रबाबू और नीतीश कुमार एनडीए में क्यों हैं? ये दोनों सभी के हैं। आज वे आपके साथ हैं, कल वे हमारे पास आएंगे। सरकार बनने से पहले ही अग्निवीर योजना का विरोध होता रहा है। वे अन्य योजनाओं का भी विरोध करेंगे। वे कल राम मंदिर का विरोध

भी कर सकते हैं। चंद्रबाबू मुस्लिम आरक्षण के पक्ष में हैं। मोदी अब क्या करेंगे? ऐसे कई मुद्दे हैं जिन पर चर्चा की जा रही है। उन्हें सरकार बनाने दीजिए, जो वे बनाना चाहते हैं। लेकिन मोदी और भाजपा के पास बहुमत नहीं है। मोदी कहते थे कि मैं कांग्रेस मुक्त भारत बनाऊंगा। लेकिन हमने मिल कर भाजपा को बहुमत मुक्त बनाया है। फिर भी वे दावा कर रहे हैं कि वे सरकार बनाना चाहते हैं, जो लोकतंत्र का मजाक है।

एकनाथ शिंदे की आलोचना

उन्होंने कहा कि शिंदे गुट के सांसद चोरी करके चुने गए हैं। जहां तक मुझे पता है, एकनाथ शिंदे समूह के सांसदों को विदेश में चार उच्चायुक्त पद भी देंगे। यह पता चला है कि उन्होंने इसके लिए कहा था। मुझे नहीं पता कि वे और क्या मांगने जा रहे हैं। वे चोरी करके चुने गए थे। चोरी की पार्टी, अमोल कीर्तिकर की तरह चुराई गई जीत। इसलिए, कुछ दिनों के बाद, आप उन्हें उच्चायुक्त के रूप में निर्वाचित होते देखेंगे।

उन्होंने कहा, 'अगर देवेंद्र फडणवीस दिल्ली जा रहे हैं, तो यह उनका फैसला है. उनकी पार्टी का आलाकमान दिल्ली में है। महाराष्ट्र में हार होती है तो वहां कहा जाता है। हम देखेंगे कि हम कहां हारे। भाजपा को भी ऐसा ही करना होगा। मैं महाराष्ट्र में क्या करने गया था और क्या हुआ था? इस पर परिलक्षित होगा। यह उनकी पार्टी का मामला है।

Maharashtra Lok Sabha Election Results 2024 Live: मुंबई दक्षिण मध्य से जीते शिवसेना (UBT) के अनिल देसाई , I.N.D.I.A २७ सीटों पर आगे...

Maharashtra Lok Sabha Election Results 2024 Live: महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव के परिणाम के लिए वोटों की गिनती शुरू हो चुकी है। महाराष्ट्र में मुख्य रूप से महायुति गठबंधन (भाजपा, सीएम एकनाथ शिंदे की शिवसेना और डिप्टी सीएम अजित पवार की एनसीपी) और महा विकास अघाड़ी (शरद पवार की एनसीपी, उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) और कांग्रेस) के बीच कड़ा मुकाबला है। दो साल के राजनीतिक उथल-पुथल के बाद, यह चुनाव राज्य की राजनीतिक दिशा तय करेगा। महाराष्ट्र की ४८ लोकसभा सीटों पर कुल १,१२१ उम्मीदवार मैदान में हैं।

एग्जिट पोल के अनुसार, एनडीए को २३ से ३२ सीटें और इंडिया ब्लॉक को १६ से २५ सीटें मिलने की संभावना है। अब सभी राजनीतिक दलों और जनता की निगाहें आधिकारिक नतीजों पर टिकी हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि एग्जिट पोल के अनुमान कितने सटीक साबित होते हैं।

बीते साल शरद पवार को अपने ही परिवार में बगावत का सामना करना पड़ा था। उनके भतीजे अजित पवार ने पार्टी का नाम और निशान दोनों छीन लिया। शरद पवार बस कुछ मुट्ठी भर नेताओं और विधायकों के साथ अकेले रह गए थे। अब ग्यारह महीने बाद एक बार फिर से इस शरद पवार ने अपनी ताकत दिखा दी है। शरद पवार की पार्टी एनसीपी शरद पवार ने महाराष्ट्र की १० लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ था और इनमें से ८ सीटों पर आगे चल रही है। लोकसभा चुनाव में पवार पर सबसे ज्यादा नजर थी। इसकी सबसे बड़ी वजह यह रही कि पवार को इंडिया ब्लॉक के गठन के पीछे का मास्टरमाइंड माना जा रहा है। इसके साथ ही इस लोकासभा चुनाव में शरद पवार की पार्टी का भविष्य दांव पर लगा था। पवार ने लोकसभा चुनाव २०२४ में वापसी कर दिखा दिया है कि उनकी भले ही ज्यादा हो गई हो, लेकिन राजनीति कौशल के मामले में अब भी वह सियासत के बड़े खिलाड़ियों में से एक हैं।

महाराष्ट्र की सात लोकसभा सीटों पर वोटों का अंतर १ लाख से ज्यादा हो गया हैः

जलगांव - बीजेपी की स्मिता वाघ (१.९ लाख वोटों का अंतर)

मुंबई उत्तर - बीजेपी के पीयूष गोयल (२ लाख वोटों का अंतर)

रावर - बीजेपी की रक्षा खाड़े (१.४ लाख वोटों का अंतर)

उस्मानाबाद - ओम राजेनिंबलकर (१.६ लाख वोटों का अंतर)

कल्याण - शिवसेना के श्रीकांत शिंदे (१.८ लाख वोटों का अंतर)

ठाणे - शिवसेना के नरेश म्हस्के (१.५ लाख वोटों का अंतर)

नंदुरबार - कांग्रेस के गोवाल पदवी (१.४ लाख वोटों का अंतर)

प्रकाश अम्बेडकर की अगुवाई वाले वंचित बहुजन अघाड़ी (ॉ)बीते दो लोकसभा चुनावों की तुलना में इस लोसकभा चुनाव में लोगों का समर्थन जुटाने में विफल रही। पुणे में बीजेपी के मुरलीधर मोहोल को सिर्फ ११,८०० वोट ही मिल पाए हैं। २०१९ के लोकसभा चुनाव में वीबीए के कैंडिडेट को ४१ हजार वोट मिले थे। वीबीए के मावल कैंडिडेट माधवी जोशी को ८,५०० वोट मिले हैं। शिवसेना के कैंडिडेट संजोग वाघेरे से ३७,००० वोटों से आगे चल रहे हैं। शिरूर में वीबीए के कैंडिडेट डॉ. अनवर शेख को दोपहर १.३० बजे तक सिर्फ ३१०० वोट मिले हैं। इस सीट से एनसीसी शरद पवार गुट के डॉ. अमोल कोल्हे २९,००० वोटों से आगे चल रहे हैं।

शुरुआती दौर में बढ़त के बाद, बीड लोकसभा सीट से भाजपा की पंकजा मुंडे ६,८०८ वोटों से पीछे चल रही हैं।

मुंबई उत्तर सीट के पीयूष गोयल १.६ लाख वोटों से आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर मध्य में उज्ज्वल निकम ५०,६९९ वोटों से आगे चल रहे हैं।

वंचित बहुजन अघाड़ी के उम्मीदवार संतोष अंबुलगे को ३,९०९ वोट मिले हैं और वे नोटा वोटों से पीछे हैं।

उस्मानाबाद में, शिवसेना यूबीटी के ओमराजे निंबालकर ८६,००० से अधिक वोटों से आगे चल रहे हैं। ठाणे में, शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के उम्मीदवार नरेश म्हास्के वर्तमान

में २,५८,६८८ पर हैं, जो ८९,००० से अधिक वोटों से आगे हैं। सेना (यूबीटी) के उम्मीदवार राजन विचारे को अब तक १,६९,१८३ वोट मिले हैं।

रुझानों के मुताबिक उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण मध्य और मुंबई उत्तर पूर्व सीटों पर आगे चल रही है। बीजेपी मुंबई उत्तर और मुंबई उत्तर मध्य सीटों पर आगे चल रही है। वहीं, एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना मुंबई उत्तर पश्चिम सीटों पर आगे चल रही है।

मुंबई दक्षिण से मौजूदा लोकसभा सांसद अरविंद सावंत शिंदे के नेतृत्व वाली सेना की यामिनी जाधव से २५,२७२ से अधिक मतों से आगे चल रहे हैं, जबकि मुंबई दक्षिण मध्य से अनिल देसाई शिंदे सेना के मौजूदा सांसद राहुल शेवाले से २१,२१० मतों से आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर पूर्व से संजय दीना पाटिल भाजपा के मिहिर कोटेचा से ८३४९ मतों से आगे चल रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल कांग्रेस उम्मीदवार भूषण पाटिल से ७०,०७१ मतों से आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर मध्य से उज्ज्वल निकम कांग्रेस की वर्षा गायकवाड़ से ३६,९२२ मतों से आगे चल रहे हैं।

शिवसेना शिंदे गुट के रवींद्र वायकर उद्धव शिवसेना गुट के अमोल कीर्तिकर से केवल २,५८० मतों से आगे चल रहे हैं।

२०१९ में बीजेपी और शिवसेना ने मुंबई की सभी छह सीटें जीती थीं।

मुंबई उत्तर से केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल १२,३५२ वोटों से आगे चल रहे हैं।

शिरुर एनसीपी (एसपी) अमोल कोल्हे १८,००० वोटों से आगे चल रहे हैं।

पालघर से बीजेपी उम्मीदवार हेमंत सावरा आगे चल रहे हैं।

औरंगाबाद से एआईएमआईएम इम्तियाज जलील बढ़त बनाए हुए हैं।

धुले से कांग्रेस उम्मीदवार शोभा बच्छाव ३,३०४ वोटों से आगे चल रहे हैं।

नंदुरबार से कांग्रेस उम्मीदवार गोवाल पडवी १९,३९६ वोटों से आगे चल रहे हैं।

भिवंडी से बीजेपी उम्मीदवार राज्य मंत्री कपिल पाटिल आगे चल रहे हैं।

अहमदनगर से बीजेपी उम्मीदवार सुजय विखे पाटिल आगे चल रहे हैं।

चौथे राउंड के अंत में सोलापुर सीट पर प्रणीति शिंदे २१,००० वोटों से आगे चल रही हैं।

मुंबई उत्तर पश्चिम सीट से शिवसेना के रवींद्र वायकर शिवसेना यूबीटी के अमोल कीर्तिकर से ५,१५५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

अमरावती में नवनीत राणा २,८९५ वोटों से पीछे चल रहे हैं।

बारामती में सुप्रिया सुले १४,००० वोटों से आगे चल रही हैं।

वर्धा एनसीपी (एसपी) अमर काले आगे चल रहे हैं।

कल्याण सीट पर श्रीकांत शिंदे २५,३३४ वोटों से आगे चल रहे हैं।

रावेर बीजेपी उम्मीदवार रक्षा खडसे ४५,००० वोटों से आगे चल रही हैं।

बीड एनसीपी (एसपी) बजरंग सोनवाना पंकजा मुंडे से २,००० वोटों से आगे चल रहे हैं।

नागपुर में नितिन गडकरी आगे चल रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल मुंबई उत्तर से १२,३५२ वोटों से आगे चल रहे हैं।

शिरुर एनसीपी (एसपी) अमोल कोल्हे १८,००० वोटों से आगे चल रहे हैं।

अब तक के रुझानों के मुताबिक शिवसेना (यूबीटी) के कैंडिडेट ओमराजे निंबालकर धाराशिव सीट पर ५३,००० वोटों से आगे चल रहे हैं।

डॉ. अमोल कोल्हे एनसीपी (एसपी) शिवाजीराव पाटिल एनसीपी (एसपी) से २०,००० से अधिक वोटों से आगे चल रहे हैं।

शिरडी निर्वाचन क्षेत्र से शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के भाऊसाहेब राजाराम वाकचौरे ९,८१८ वोटों से आगे चल रहे हैं, जबकि शिवसेना के लोखंडे सदाशिव किसान और वीबीए के उत्कर्षा रूपवते पीछे चल रहे हैं।

सतारा सीट पर बीजेपी के कैंडिडेट उदयनराजे भोसले २०,००० वोटों से पीछे चल रहे हैं। वहीं, एनसीपी (एसपी) के शशिकांत शिंदे आगे चल रहे हैं।

औरंगाबाद में राज्य मंत्री संदीपन भूमरे ६७९१ वोटों से आगे चल रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री भारती पवार और भाजपा के कपिल पाटिल पीछे चल रहे हैं।

चंद्रपुर में, कांग्रेस उम्मीदवार प्रतिभा धनोरकर भाजपा के सुधीर से आगे चल रही हैं मुनगंटीवार २४,६०५ वोटों से आगे चल रहे हैं

रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग में केंद्रीय मंत्री नारायण राणे पीछे चल रहे हैं।

ठाणे से शिवसेना उम्मीदवार नरेश मस्के १०,१७३ वोटों से आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर मध्य से भाजपा उम्मीदवार उज्ज्वल निक्कम कांग्रेस की वर्षा गायकवाड़ से आगे चल रहे हैं।

सतारा से एनसीपी (सपा) शशिकांत शिंदे आगे चल रहे हैं।

बीड में बीजेपी कैंडिडेट पंकजा मुंडे तीसरे राउंड में एनसीपी (शरद पवार) के कैंडिडेट बजरंग सोनवाने से पीछे चल रही हैं।

बारामती में दूसरे राउंड के बाद एनसीपी (एसपी) की सुप्रिया सुले भाभी सुनेत्रा पवार से ११,५३२ वोटों से आगे चल रही हैं।

यवतमाल-वाशिम में शिवसेना (यूबीटी) के कैंडिडेट संजय देशमुख १,१०४ वोटों से आगे चल रहे हैं।

सांगली से कांग्रेस के कैंडिडेट बागी विशाल पाटिल २५०५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

हटकनंगले में शिवसेना के प्रत्याशी धैर्यशील संभाजीराव माने १,२७५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

जलगांव में बीजेपी की स्मिता उदय वाघ ने बढ़त हासिल कर ली है।

पालघर में बीजेपी के कैंडिडेट डॉ. हेमंत विष्णु सावरा १,००१ वोटों से आगे चल रहे हैं।

शिरडी सीट से भाऊसाहेब राजाराम वाकचौरे आगे चल रहे हैं।

जालना में रावसाहेब दानवे ३८६ वोटों से आगे चल रहे हैं।

भिवंडी में बीजेपी के कैंडिडेट कपिल मोरेश्वर पाटिल ३,०३५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर पूर्व से शिवसेना यूबीटी के कैंडिडेट संजय दीना पाटिल बीजेपी से ७,२४५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

आदिवासी बहुल नंदुरबार में कांग्रेस के गोवाल पडवी बीजेपी की कैंडिडेट हिना गावित से ५,५५० वोटों से आगे चल रहे हैं।

AIMIM के इम्तियाज जलील सैयद ने औरंगाबाद में पार्टी का खाता खोला है। जहां से सैयद १०,८२९ वोटों से आगे चल रहे हैं।

महाराष्ट्र में एनडीए २१ सीटों पर आगे चलरही है। वहीं, इंडिया गठबंधन १६ सीटों पर आगे चल रहा है। बारामती से सुप्रिया सुले और मुंबई उत्तर मध्य सीट से बीजेपी कैंडिडेट उज्जवल निकम आगे चल रहे हैं।

पहले चरण की काउंटिंग के बाद मौजूदा रुझान

एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण मध्य और बुलढाणा सीटों पर आगे चल रही है।

नासिक में शिवसेना यूबीटी के कैंडिडेट राजाभाऊ वाजे आगे चल रहे हैं।

शिवसेना कैंडिडेट राहुल शेवाले ५,६१६ वोटों से आगे चल रहे हैं।

मावल में शिवसेना के श्रीरंग अप्पा चंदू बारने ३,३९५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

बारामती में सुप्रिया सुले को ३३,२८५ वोट मिले हैं, जबकि सुनेत्रा पवार को पहले राउंड के बाद २६,५५२ वोट मिले हैं।

पुणे में भाजपा के मुरलीधर मोहोल ५,०५५ वोटों से आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर मध्य में भाजपा के उज्ज्वल निकम कांग्रेस की वर्षा गायकवाड़ से आगे चल रहे हैं।

रायगढ़ में शिवसेना यूबीटी के उम्मीदवार अनंत गीते चुनाव आयोग के अनुसार ४,४६८ वोटों से आगे चल रहे हैं।

कोल्हापुर में छत्रपति शाहू महाराज २,०१६ वोटों से आगे चल रहे हैं।

चुनाव आयोग के आंकडों के मुताबिक बीजेपी और शिवसेना दोनों साथ मिलाकर ११ सीटों पर आगे चल रही हैं। वहीं, इंडिया गठबंधन ५ सीटों पर आगे चल रहा है। अजित पवार की अगुवाई वाली एनसीपी सभी सीटों पर पीछे है।

चुनाव आयोग के आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना दो सीटों पर आगे चल रही है। मुख्यमंत्री के बेटे श्रीकांत शिंदे कल्याण से २,०९३ वोटों से आगे चल रहे हैं। वहीं, ठाणे से शिवसेना के कैंडिडेट नरेश म्हास्के शुरुआती रुझानों में ६१३ वोटों से आगे चल रहे हैं। इस बीच, बारामती सीट से सुप्रिया सुले पहले दौर की काउंटिंग में अपनी भाभी और डिप्टी सीएम अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार से ६,००० वोटों से आगे चल रही हैं।

शुरुआती रुझानों में पुणे लोकसभा सीट से कांग्रेस के कैंडिडेट रवींद्र धांगेकर पहले दौर की काउंटिंग में आगे चल रहे हैं। धांगेकर का मुकाबला दो बार के सांसद मुरलीधर मोहोल से है।

शुरुआती रुझानों के मुताबिक महाराष्ट्र में विपक्षी एमवीए २८ सीटों पर और महायुति गठबंधन २६ सीटों पर आगे चल रही है। एनसीपी (एसपी) सांसद सुप्रिया सुले ने बारामती में अपनी भाभी सुनेत्रा पवार को पीछे छोड़ती नजर आ रही हैं। कांग्रेस के श्यामकुमार बर्वे रामटेक भी आगे चल रहे हैं। कोल्हापुर से कांग्रेस के कैंडिडेट शाहू महाराज छत्रपति ६००० से अधिक सीटों से आगे चल रहे हैं।

पोस्टल बैलट के रुझानों के मुताबिक महाराष्ट्र की ४८ सीटों में से सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन २६ सीटों पर और विपक्ष २२ सीटों पर आगे चल रहा है।

शुरुआती रुझान के मुताबिक, मुंबई दक्षिण से शिवसेना (यूबीटी) के सिटिंग एमपी अरविंद सावंत आगे चल रहे हैं।

कोल्हापुर सीट से कांग्रेस के कैंडिडेट शाहू महाराज आगे चल रहे हैं।

रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग-रत्नागिरी में केंद्रीय मंत्री नारायण राणे शुरुआती चरण में आगे चल रहे हैं।

रावेर लोकसभा सीट से भाजपा की मौजूदा सांसद रक्षा खडसे आगे चल रही हैं।

नागपुर सीट से केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी आगे चल रहे हैं।

मुंबई उत्तर पश्चिम में शिवसेना (यूबीटी) के उम्मीदवार अमोल कीर्तिकर आगे चल रहे हैं।

पश्चिमी महाराष्ट्र के कोल्हापुर में छत्रपति शाहू महाराज शिवसेना उम्मीदवार संजय मंडलिक से आगे चल रहे हैं।

सोलापुर में कांग्रेस की उम्मीदवार प्रणति शिंदे भाजपा के राम सतपुते से आगे चल रही हैं।

सांगली में निर्दलीय उम्मीदवार विशाल पाटिल आगे चल रहे हैं।

बीड में भाजपा की राष्ट्रीय सचिव पंकजा मुंडे आगे चल रही हैं।

भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी नागपुर लोकसभा सीट से आगे चल रहे हैं, जबकि पार्टी के ही नेता पीयूष गोयल भी मुंबई उत्तर सीट से आगे चल रहे हैं। वहीं, एनसीपी (एससीपी) की सुप्रिया सुले बारामती सीट से अपनी भाभी से आगे चल रही हैं।

अमरावती के विधायक रवि राणा ने मंगलवार को दावा किया कि शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के १५ दिन बाद मोदी सरकार में शामिल हो जाएंगे। अमरावती जिले के बडनेरा से विधायक ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि वह जानते हैं कि उद्धव ठाकरे और शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में किस तरह बोल रहे हैं।

रवि राणा ने दावा किया, 'मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूं कि मोदी जी के दोबारा प्रधानमंत्री बनने के १५ दिन बाद उद्धव ठाकरे मोदी सरकार में और मोदी जी के साथ नजर आएंगे। उन्होंने कहा कि आने वाला दौर पीएम मोदी जी है और उद्धव ठाकरे को भी यह पता है।' युवा स्वाभिमान पार्टी के विधायक ने कहा कि राज्य में विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) के नेताओं को ब्ल्ड प्रेशर की दवा और डॉक्टर साथ रखना चाहिए क्योंकि चुनाव नतीजे आने के बाद उनमें से कई नेता बीमार पड़ सकते हैं। महाराष्ट्र के काउटिंग सेंटर्स पर चुनाव अधिकारी पहुंच गए हैं। मतगणना केंद्रों पर काउंटिंग की सारी व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई हैं। नागपुर के एक काउंटिंग सेंटर पर मंगलवार को मतगणना से पहले सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है।

२०१९ में कैसा रहा था मुकाबलाः

२०१९ का लोकसभा चुनाव बीजेपी और शिवसेना ने साथ मिलकर लड़ा था। वहीं, कांग्रेस और एनसीपी ने एक गठबंधन में चुनाव लड़ा था। मौजूदा चुनाव में शिवसेना और एनसीपी दोनों दो धड़ों में बंट चुकी है। २०१९ के लोकसभा चुनाव में शिवसेना और बीजेपी गठबंधन ने प्रदेश की ४८ लोकसभा सीटों में से ४२ पर जीत हासिल की थी। बीजेपी ने २५ सीटों पर चुनाव लड़ा था और इनमें से २३ सीटों पर जीत हासिल की थी। वहीं शिवसेना ने १८ सीटों पर चुनाव लड़ा था और १८ सीटों पर जीत हासिल की थी। कांग्रेस ने २४ सीटों पर चुनाव लड़ा था लेकिन महज एक ही सीट पर जीत हासिल कर चुकी है। जबकि शरद पवार की अगुवाई वाली एनसीपी ने २० सीटों पर चुनाव लड़ा था और महज ४ सीटों पर ही जीत हासिल कर सकी थी।

९ जून को शपथ ग्रहण

राष्ट्रपति ने मोदी को दिया नई सरकार बनाने का न्योता

पीएम ने कहा- १८वीं लोकसभा कुछ कर गुजरने वाली रहेगी...

नरेंद्र मोदी को शुक्रवार को नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस (NDA) की संसदीय दल का लगातार तीसरी बार नेता चुना गया। पुराने संसद (संविधान सदन) के सेंट्रल हॉल में सुबह ११ बजे शुरू हुई मीटिंग में NDA के १३ दलों के नेता शामिल हुए।

बैठक में NDA के सभी २९३ सांसद, राज्यसभा सांसद और सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और डिप्टी एश मौजूद थे। इसके बाद NDA ने दोपहर ३ बजे सरकार बनाने का दावा पेश किया। गठबंधन के नेताओं ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को समर्थन का पत्र सौंपा। बैठक के बाद मोदी भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से उनके घर जाकर मिले। इसके बाद पीएम शाम को ६ बजे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिल ने पहुंचे। राष्ट्रपति ने उन्हें सरकार बनाने का न्योता दिया। इसके बाद मोदी ने कहा कि १८वीं लोकसभा नई ऊर्जा और कुछ कर गुजरने वाली लोकसभा रहेगी।

१. राजनाथ ने प्रधानमंत्री पद के लिए मोदी के नाम का प्रस्ताव रखा
२. भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने स्वागत भाषण दिया।
३. राजनाथ सिंह ने प्रधानमंत्री पद के लिए नरेंद्र मोदी के नाम का प्रस्ताव रखा। अमित शाह ने इसका समर्थन किया
४. नितिन गडकरी ने अनुमोदन किया।
५. जेडीएस अध्यक्ष कुमारस्वामी ने प्रस्ताव का समर्थन किया।
६. प्रधानमंत्री मोदी ने पुराने संसद भवन में रखे गए संविधान को नमन किया।
७. भाजपा को बहुमत नहीं, १४ सहयोगी दलों के ५३ सांसदों का समर्थन

पीएम मोदी ९ जून को शाम करीब ६ बजे तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले हैं। रविवार को होने वाले शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए दुनिया के कई नेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है।

इसके बाद TDP प्रमुख चंद्रबाबू नायडू, JDU प्रमुख और बिहार के CM नीतीश कुमार ने समर्थन का ऐलान किया। मोदी ९ जून को शाम ६ बजे राष्ट्रपति भवन में प्रधानमंत्री पद की तीसरी बार शपथ ले सकते हैं। खबर है कि मोदी के साथ पूरा मंत्रिमंडल शपथ ले सकता है। लोकसभा चुनाव में भाजपा को २४० सीटें मिली हैं। यह बहुमत के आंकड़े (२७२) से ३२ सीटें कम हैं। हालांकि, NDA ने २९३ सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया। NDA में भाजपा के अलावा १४ सहयोगी दलों के ५३ सांसद हैं।

गठबंधन में चंद्रबाबू की TDP १६ सीटों के साथ दूसरी और नीतीश की JDU १२ सीटों के साथ तीसरी सबसे बड़ी पार्टी है। दोनों ही पार्टियां इस वक्त भाजपा के लिए जरूरी हैं। इनके बिना भाजपा का सरकार बनाना मुश्किल है।

NDA गठबंधनः मोदी को NDA का नेता चुना गया, राष्ट्रपति ने लोकसभा भंग की

लोकसभा चुनाव में भाजपा को २४० सीटें मिली हैं। यह बहुमत के आंकड़े (२७२) से ३२ सीटें कम हैं। हालांकि NDA ने २९२ सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया। गठबंधन में चंद्रबाबू की TDP १६ सीटों के साथ दूसरी और नीतीश की JDU १२ सीटों के साथ तीसरी सबसे बड़ी पार्टी है। दोनों ही पार्टियां इस वक्त भाजपा के लिए जरूरी हैं। इनके बिना भाजपा का सरकार बनाना मुश्किल है।

NDA के साथियों ने मंत्रालयों की लिस्ट सौंपी, टीडीपी ने ६ मंत्रालय और स्पीकर पद मांगा

सूत्रों के मुताबिक, टीडीपी ने ६ मंत्रालयों समेत स्पीकर पद की मांग की। वहीं, JDU ने ३, चिराग ने २ (एक कैबिनेट, एक स्वतंत्र प्रभार), मांझी ने एक, शिंदे ने २ (एक कैबिनेट, एक स्वतंत्र प्रभार) मंत्राल यों की मांग की है। वहीं, जयंत ने कहा है कि हमें इलेक्शन के पहले एक मंत्री पद देने का वादा किया गया था। इसी तरह अनुप्रिया पटेल भी एक मंत्री पद चाहती हैं। TDP प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ने कहा, 'बैठक अच्छी रही। हम NDA के साथ मिलकर चुनाव लड़े तभी आज मीटिंग में शामिल हुए। आप लोगों को क्यों शक है। अगर हम गठबंधन का हिस्सा नहीं होते तो साथ मिलकर चुनाव कैसे लड़ते। हम साथ रहे, ३ पार्टियों ने साथ मिलकर चुनाव लड़ा।

NDA की बैठक में १५ पार्टियों के २१ नेता शामिल हुए

नरेंद्र मोदी, पीएम
जे.पी.नड्डा,भाजपा अध्यक्ष
राजनाथ सिंह, रक्षामंत्री
अमित शाह, गृहमंत्री
चंद्रबाबू नायडू, टीडीपी
Mनीतीश कुमार, जदयू
एकनाथ शिंदे, SHS
.एच.डी. कुमारस्वामी, JD(S)
चिराग पासवान, LGP (RV)
जीतन राम मांझी, HAM
पवन कल्याण, JSP
सुनील तटकरे, राकांपा
अनुप्रिया पटेल, AD(S)
जयन्त चौधरी, रालोद
प्रफुल्ल पटेल, NCP
प्रमोद बोरो, UPPAL
अतुल बोरा, AGP
इंद्रा हैंग सुब्बा, SKM
सुदेश महतो, AJSU
राजीव रंजन सिंह, जदयू
संजय झा, जदयू

पीएम मोदी ने बुधवार दोपहर २ बजे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को इस्तीफा सौंप दिया। साथ ही मंत्रिमंडल भंग करने की सिफारिश की। राष्ट्रपति ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया। साथ ही उनसे व मंत्रिपरिषद से अनुरोध किया कि वे नई सरकार के कार्यभार संभालने तक पद पर बने रहें।

इससे पहले मोदी मंत्रिमंडल की सुबह ११.३० बजे आखिरी बैठक हुई। बैठक में १७वीं लोकसभा भंग करने की सिफारिश हुई। इसमें सरकार ने तीसरी बार जीत को लेकर धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इसके बाद मोदी राष्ट्रपति भवन गए और अपना इस्तीफा सौंपा। मोदी अब कार्यवाहक पीएम रहेंगे।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, टीडीपी नेता चंद्रबाबू नायडू, आजसू प्रमुख सुदेश महतो, बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, आरएलडी प्रमुख जयंत चौधरी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और पवन कल्याण भी पीएम आवास पहुंचे। एकनाथ शिंदे के बेटे श्रीकान्त शिंदे ने चंद्रबाबू नायडू से मुलाकात की

मोदी उपराष्ट्रपति धनखड़ से मिलने पहुंचे, बैठक के दौरान पेड़ा और मेरठ का गुड़ परोसा गया उपराष्ट्रपति ऑफिस ने बताया कि पीएम मोदी और उपराष्ट्रपति धनखड़ के बीच बैठक हुई। इस दौरान राजस्थान के झुंझुनू इलाके की खास डिश पेड़ा और मेरठ का गुड़ परोसा गया। एकनाथ शिंदे बोले- जिन्हें बहुमत नहीं मिला, वे सरकार बनाने की बात कर रहे

सूत्रों के मुताबिक, 'चंद्रबाबू नायडू ने अब तक कोई भी डिमांड बीजेपी के सामने नहीं रखी है। स्पीकर और अन्य मंत्रालय मांगने की बात जो मीडिया में आ रही है। वह गलत है।' चंद्रबाबू के करीबी सूत्र ने बताया कि वे फिलहाल NDA में दूसरे नंबर पर हैं। बीजेपी के साथ विधानसभा का चुनाव लड़े हैं। वे अगर I.N.D.I.A. में गए तो सीटों की संख्या के आधार पर उनका नंबर चौथा या पांचवां रहेगा। सूत्रों ने बताया कि उन्हें यकीन है कि अगर वे इंडिया गठबंधन के साथ सरकार बना भी लेते हैं, तो उसमें शामिल घटक दल, छोटी-छोटी बातों पर पार्टी तोड़ने की बात करेंगे। इसलिए इंडिया की सरकार ज्यादा दिन तक नहीं चलेगी। ऐसे में वे आंध्र की सत्ता संभालेंगे और NDA में रहते हुए केंद्र में एक-दो मंत्रालय लेंगे। आज की मीटिंग में वे आंध्र को स्पेशल स्टेटस वाली बात रख सकते हैं। साथ ही कुछ मंत्रालय को लेकर भी चर्चा हो सकती है।

देवेंद्र फडणवीस ने इस्तीफे की पेशकश की

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा, 'मैं विधानसभा चुनाव की तैयारी में पूरी तरह से लगना चाहता हूं। इसलिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से मंत्रिमंडल की जिम्मेदारी से मुक्त करने का निवेदन करूंगा।'

चिराग पासवान ने कहा- बिहार में हमारा १००% स्ट्राइक रेट

मीडिया से बात करते हुए चिराग पासवान ने कहा कि ५ सीटों पर जीत बड़ी उपलब्धि है। बिहार की जनता ने पार्टी पर विश्वास किया है। सौ प्रतिशत स्ट्राइक रेट के लिए बिहार की जनता का आभार। ४०० का आंकड़ा न पाने के सवाल पर कहा कि कुछ कमी रही है, जिस पर जरूर मंथन होगा। अभी उत्साह है कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन रहे हैं। केरल में बीजेपी का खाता खुलने पर प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष के सुरेंद्रन ने कहा, 'केरल में बीजेपी के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण जीत है। हमने राज्य में पहली सीट जीतकर अपना खाता खोला है। हमारा वोट शेयर २०% हो गया है। यह एक बड़ी यात्रा की शुरुआत है। आगे हमारे सामने स्थानीय निकाय और विधानसभा चुनाव हैं। इनमें भाजपा मुख्य दावेदार होगी।'

नीतीश कुमार बुधवार (५ जून) को पटना से दिल्ली रवाना हुए। फ्लाइट में उनकी सीट के पीछे राजद नेता तेजस्वी बैठे हैं। चंद्रबाबू नायडू आंध्र प्रदेश से दिल्ली के लिए रवाना हो गए हैं। बिहार के सीएम नीतीश कुमार भी पटना से दिल्ली के लिए निकल गए हैं। नीतीश जिस फ्लाइट से दिल्ली जा रहे हैं, उसमें RJD नेता तेजस्वी यादव भी सवार हैं। तेजस्वी INDIA ब्लॉक की बैठक में शामिल होने के लिए जा रहे हैं। नीतीश के अलावा NDA की बैठक में लोजपा (रामविलास) अध्यक्ष चिराग पासवान और हम सुप्रीमो जीतन राम मांझी भी शामिल होंगे।

जदयू प्रवक्ता केसी त्यागी ने बुधवार (५ जून) को कहा कि हमारी पार्टी NDA के साथ है। INDIA ब्ल ॉक में वापस जाने का कोई सवाल ही नहीं है। कांग्रेस और पार्टी अध्यक्ष खड़गे के गलत व्यवहार की वजह से ही जदयू उनके गठबंधन से बाहर हुई थी। केसी त्यागी ने बताया कि ७ जून को NDA के सभी सांसदों की बैठक होगी। जदयू NDA के साथ-साथ प्रधानमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी को समर्थन देने का संकल्प पत्र भी सौंपेगी। सूत्रों के मुताबिक, ७ जून को संसद के सेंट्रल हॉल में दोपहर २ बजे NDA के सभी सांसदों की बैठक होगी।

हेमा मालिनी ने मथुरा से दर्ज की शानदार जीत...

हेमा मालिनी और एशा देओल। फोटो- इंस्टाग्राम

मंगलवार को लोक सभा चुनाव के नतीजे घोषित किये गये, जिसमें बॉलीवुड सितारों की किस्मत का फैसला भी हुआ। वेटरन एक्ट्रेस और बीजेपी लीडर हेमा मालिनी ने लोक सभा चुनाव में शानदार जीत हासिल की है। मथुरा लोक सभा क्षेत्र से चुनाव समर में उतरीं हेमा मालिनी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के मुकेश धनगर को करारी शिकस्त दी। मथुरा सीट पर चुनाव लड़कर हेमा तीसरी बार संसद पहुंचेंगी। बता दें, हेमा मालिनी ४ जून की मतगणना के मद्देनजर २ जून को ही मथुरा पहुंच गई थीं। उन्होंने एग्जिट पोल्स के आधार पर बीजेपी की भारी जीत की उम्मीद को लेकर ट्वीट भी किया था। हेमा मालिनी का राजनैतिक करियर १९९९ में शुरू हुआ था। उन्हें सियासत में ले जाना का श्रेय विनोद खन्ना को जाता है, जिनके लिए उन्होंने गुरदासपुर में कैम्पेन किया था। हेमा मालिनी २००३ में पहली बार राज्यसभा पहुंची थीं और फिर २००४ में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी ज्वाइन कर ली थी। २०१० में वो भाजपा की महासचिव नियुक्त की गईं और २०११ में दोबारा राज्यसभा पहुंचीं।

अखिलेश यादव की रणनीति नहीं समझ पाई बीजेपी, यूपी में बुरी तरह हारी...

उत्तर प्रदेश में मंगलवार को हो रही लोकसभा चुनाव की काउंटिंग में सपा ४ सीटें जीत चुकी है और ३४ सीटों पर बढ़त बनाए हुए है. बीजेपी को करारा झटका लगा है और पार्टी ६ सीटें जीत चुकी है और २६ पर आगे है. बीजेपी ने प्रदेश की सभी ८० सीट जीतने का दावा किया था लेकिन परिणाम इसके उलट नजर आ रहे हैं. सपा ने पिछला लोकसभा चुनाव बसपा के लड़ा था और पांच सीट जीती थी. इस बार अखिलेश की पार्टी ने प्रदेश में बीजेपी को तगड़ा झटका दिया है. बीजेपी ने २०१९ में ६२ सीट जीती थीं.

सीट शेयरिंग की सही रणनीति : राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण यूपी में अखिलेश यादव ने विपक्ष के अभियान का नेतृत्व किया. सपा ने गठबंधन के तहत ६२ सीट पर चुनाव लड़ा और शेष सीट कांग्रेस तथा अन्य दलों के लिए छोड़ दीं. सीट शेयरिंग की रणनीति काम आई.

पूरे परिवार ने दिखाई एकजुटता : २०१९ के लोकसभा चुनाव में सपा का कुनबा बिखरा हुआ था. चाचा शिवपाल सिंह यादव ने अलग पार्टी बनाकर चुनाव लड़ा. परिवार में आपकी कलह का खामियाजा अखिलेश को लोकसभा चुनाव में उठाना पड़ा था. इस बार यादव फैमिली ने एकजुटता दिखाई. कुछ शिवपाल झुके तो कुछ बातें अखिलेश ने भी मानी. अखिलेश के पूरे परिवार ने चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी उठाई.

'पीडीए' का फॉर्मूला : अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव में 'पीडीए' यानि पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक का फॉर्मूला दिया और इसी फॉर्मूले को ध्यान में रखते हुए प्रत्याशियों का चयन किया. समाजवादी पार्टी ने १७ सीटों पर दलित, २९ पर ओबीसी, ४ पर मुस्लिम और बाकी पर सवर्ण उम्मीदवार उतारे. गाजीपुर से अफजाल अंसारी, कैराना से इकरा हसन, संभल से जियाउर्रहमान बर्क और रामपुर से मोहिबुल्लाह नदवी पर भरोसा जताकर चुनावी मैदान में उतारा. अखिलेश का यह दांव बिल्कुल सही बैठा और पार्टी को अप्रत्यशित सफलता मिली.

पेपर लीक का मुद्दा उठाया : अखिलेश यादव ने चुनाव प्रचार में यूपी में पेपर लीक को मुद्दा बनाया. परीक्षाओं में हो रही देरी को भी जोर-शोर से उठाया. राज्य में पेपर लीक और बेरोजगारी के चलते युवा वोटर नाराज था. अखिलेश ने उनकी नाराजगी को आवाज दी. इतना ही नहीं, अखिलेश ने अग्निवीर योजना को कैंसिल कराने का वादा किया. सपा की जीत में यह भी बड़ा फैक्टर माना जा रहा है.

सॉफ्ट हिंदुत्व और सवर्णों वोटों पर नजर : अखिलेश यादव ने स्वामी प्रसाद मौर्य के विवादित बयानों खुद को और अपनी पार्टी दूर रखा. बहुत ही सधे अंदाज में सॉफ्ट हिंदुत्व की छवि बनाए रखी. अखिलेश ने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा पर सीधे कोई प्रतिक्रिया नहीं दी. इटावा में शिव मंदिर की नींव रख दी. सवर्णों वोटरर्स को साधने के लिए चंदौली से राजपूत और भदोही से ब्राह्मण प्रत्याशी उतारे.

Cabinet Ministers Portfolios Allocation: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी मंत्रिपरिषद के शपथ ग्रहण के २४ घंटे बाद आखिरकार विभागों का बंटवारा हो गया। अहम मंत्रालयों की जिम्मेदारी भाजपा के मंत्रियों के पास ही रखी गई है। फोटो : amarujala.com

राजनीति

I.N.D.I.A ब्लॉकः

कांग्रेस अध्यक्ष बोले- जनादेश मोदी के खिलाफ गठबंधन में सभी का स्वागत

दिल्ली स्थित मल्लिकार्जुन खड़गे के घर INDIA ब्लॉक के तमाम नेता।

लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद I.N.D.I.A. गठबंधन आगे की रणनीति तय करने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के घर बैठक हुई। नेताओं ने करीब डेढ़ घंटे चर्चा की। मीटिंग में सोनिया, राहुल और प्रियंका गांधी, NCP(SCP) के शरद पवार और उनकी बेटी सुप्रिया सुले, शिवसेना (उद्धव गुट) के संजय राउत, सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव, TMC नेता अभिषेक बनर्जी, RJD के तेजस्वी यादव, DMK नेता एमके स्टालिन, झारखंड के सीएम चंपई सोरेन और हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना, AAP नेता राघव चड्ढा और CPI(M) के सीताराम येचुरी समेत कई नेता मौजूद हैं।

खड़गे ने कहा कि हम बहुत अच्छा और एकसाथ लड़े। इंडिया गठबंधन उन सभी पार्टियों का स्वागत करता है, जो संविधान में लिखी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक न्याय की बातों का सम्मान करते हैं। मोदी और उनके तरीके की राजनीति के खिलाफ जनादेश मिला है। व्यक्तिगत रूप से यह उनके लिए बड़ा राजनीतिक नुकसान है। यह उनकी नैतिक हार है। दरअसल, नतीजों में गठबंधन को कुल २३४ सीटें मिली हैं। सरकार बनाने के लिए गठबंधन को २७२ सांसदों का समर्थन चाहिए। ऐसे में बहुमत के लिए उसे मौजूदा सीट शेयरिंग से बाहर भी पार्टनर खोजने होंगे।

भाजपा को बहुमत नहीं, अब जोड़-तोड़ की सरकार बना रहे- संजय राउत

शिवसेना (उद्धव गुट) के नेता संजय राउत ने कहा- NDA की बैठक है तो NDA को करने दीजिए। उनके पास नीतीश बाबू है, चंद्रबाबू हैं, चिराग बाबू हैं। लोगों ने भाजपा को बहुमत से पहले रोक दिया। अब वे जोड़-तोड़ वाली सरकार बना रहे हैं। लोकतंत्र में ऐसी कोशिशें होती हैं। अगर उनके पास नंबर हैं तो वे सरकार बनाएंगे। संजय राउत बोले- राहुल गांधी के

प्रधानमंत्री बनने पर हमें आपत्ति नहीं

संजय राउत ने कहा- अगर राहुल गांधी I.N.D.I.A ब्लॉक का नेतृत्व करना स्वीकार करते हैं तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। वह राष्ट्रीय नेता हैं। उन्होंने खुद को साबित किया है। वह लोकप्रिय हैं। हम सभी उनसे प्यार करते हैं।I.N.D.I.A ब्लॉक में इस बात पर कोई मतभेद नहीं है कि प्रधानमंत्री कौन होगा।

४०० पार वालों को २३५ पर रोक दिया- अरविंद सावंत

शिवसेना (उद्धव गुट) के नेता अरविंद सावंत ने कहा कि जनता चाहती है कि जो नफरत फैलाते हैं, उन्हें दूर रखना चाहिए। भारत जोड़ो अभियान जरूरी है, हमें जोड़ने वाले चाहिए, तोड़ने वाले नहीं। अघाड़ी के नेता दिल्ली में हैं, बातें हो रही हैं। हम जल्दबाजी में नहीं हैं। ४०० पार वालों को हमने २३५ पर रोक दिया, इसे ध्यान में रखना चाहिए।

सिब्बल बोले- नायडू ने तानाशाही सरकार का विरोध किया था

राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा-नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू ने हमेशा संघीय ढांचे को बनाए रखा है। कुछ साल पहले नायडू ने कहा था कि तानाशाही सरकार नहीं चल सकती। ईडी और सीबीआई जो कुछ भी कर रही है वह उनकी सहमति के बिना है। ये राज्यों को स्वीकार नहीं है। मुझे उम्मीद है कि दोनों नेता उन मूल्यों को बरकरार रखेंगे जिनका वे मुख्यमंत्री रहते हुए समर्थन करते थे।

प्रियंका का भाई राहुल के लिए इमोशनल पोस्ट, लिखा- आपने सच्चाई के लिए लड़ना कभी नहीं छोड़ा

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने अपने भाई राहुल गांधी के लिए X पर इमोशलन पोस्ट किया। उन्होंने लिखा- आप खड़े रहे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्होंने आपसे साथ क्या कहा और क्या किया। आप कभी भी विपरीत परिस्थितियों से पीछे नहीं हटे। आपने विश्वास करना कभी नहीं छोड़ा, भले ही उन्होंने आपके दृढ़ विश्वास पर कितना भी संदेह किया हो। उनके द्वारा फैलाए गए झूठ के जबरदस्त प्रचार के बावजूद आपने सच्चाई के लिए लड़ना कभी नहीं छोड़ा। आपने क्रोध और घृणा को कभी भी अपने ऊपर हावी नहीं होने

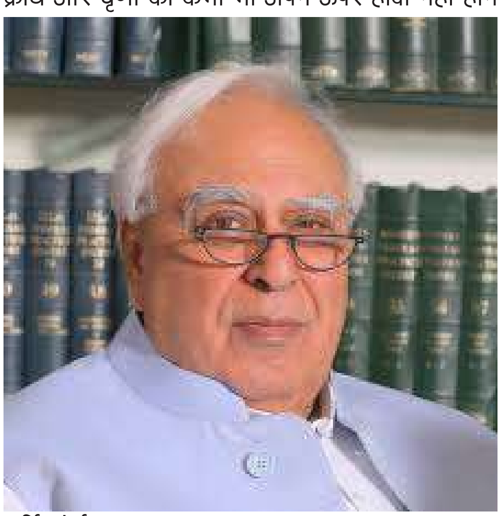

दिया।

आप अपने दिल में प्यार, सच्चाई और दया लेकर लड़े। जो लोग आपको नहीं देख सके, वे अब आपको देखते हैं, लेकिन हममें से कुछ लोगों ने हमेशा आपको सबसे बहादुर के रूप में देखा और जाना है। आपकी बहन होना गर्व की बात है।

शरद-सुप्रिया दिल्ली पहुंचे

#WATCH एनसीपी-एससीपी प्रमुख शरद पवार और पार्टी सांसद और बारामती से विजयी उम्मीदवार सुप्रिया सुले आज होने वाले INDIA गठबंधन बैठक के लिए मुंबई से दिल्ली पहुंचे।

उद्धव की जगह राउत मीटिंग में जाएंगे

I.N.D.I.A ब्लॉक की बैठक में उद्धव ठाकरे नहीं जाएंगे। उनकी जगह पार्टी के नेता संजय राउत और सांसद अरविंद सावंत मीटिंग में शामिल होंगे।

नीतीश और तेजस्वी एक ही फ्लाइट से दिल्ली रवाना

बिहार के सीएम नीतीश कुमार सुबह ११ बजे पटना से दिल्ली रवाना हो गए हैं। वे दिल्ली में शाम चार बजे NDA की बैठक में शामिल होंगे। नीतीश जिस फ्लाइट से दिल्ली जा रहे हैं, उसमें RJD नेता तेजस्वी यादव भी सवार हैं। तेजस्वी नीतीश की ठीक पीछे वाली सीट पर बैठे हैं। तेजस्वी INDIA ब्लॉक की बैठक में शामिल होने के लिए जा रहे हैं। यह बैठक शाम ६ बजे होगी। फ्लाइट में नीतीश और तेजस्वी का आमना-सामना हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को नमस्कार किया।

सपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बोले- नीतीश-चंद्रबाबू नायडू हमारे साथ हैं

सपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरणमय नंदा बोले- यूपी की जनता ने बीजेपी को हराया, इस जीत का पूरा क्रेडिट अखिलेश यादव को जाता है। २०१४ से लेकर २४ तक बीजेपी के पास सिर्फ जुमलेबाजी बयान थे। I.N.D.I.A गठबंधन सरकार बनाने की पूरी कोशिश करेगा। हमें विश्वास है कि नीतीश और चंद्रबाबू नायडू हमारे साथ हैं।

बिहार अब किंग मेकर बनकर उभर रहाः तेजस्वी

दिल्ली रवाना होने से पहले तेजस्वी यादव ने एयरपोर्ट पर कहा कि आरजेडी को सबसे ज्यादा वोट मिले हैं। सीट भी पिछले बार की तुलना में बढ़े हैं। देश की जनता ने भाजपा को सबक सिखाया है। भाजपा जो नफरत की राजनीति किया करती थी, लोगों ने उन्हें रोका है। देश की जनता ने लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए वोट किया। इसलिए भाजपा के पास खुद का अब बहुमत नहीं है। बिहार तो अब किंग मेकर बनकर उभर रहा है। जो भी किंगमेकर हो बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाएं। ७५% आरक्षण पर काम हो और देशभर में जाति जनगणना कराएं।

अखिलेश यादव ने लिखा- ये दलित-बहुजन भरोसे की जीत

अखिलेश यादव ने X पर लिखा- प्रिय यूपी के समझदार मतदाताओं, यूपी में इंडिया गठबंधन की जन-प्रिय जीत उस दलित-बहुजन भरोसे की भी जीत है जिसने

और वर्ग के अच्छे लोग अपने सहयोग व योगदान से और भी मजबूत बनाते हैं। ये नारी के मान और महिला-सुरक्षा के भाव की जीत है। ये नवयुवतियों-नवयुवकों के सुनहरे भविष्य की जीत है। ये किसान-मजदूर-कारोबारियों-व्यापारियों की नई उम्मीदों की जीत है। ये सर्व समाज के सौहार्द-प्रिय, समावेशी सोचवाले समता-समानतावादी सकारात्मक लोगों की सामूहिक जीत है। ये निष्पक्ष, निष्कलंक मीडिया के निरंतर, अथक, निर्भय, ईमानदार प्रयासों की जीत है। ये संविधान को संजीवनी मानने वाले संविधान-रक्षकों की जीत है। ये लोकतंत्र के हिमायती-हिम्मती लोगों की जीत है। ये गरीब की जीत है। ये लोकतंत्र की जीत है। ये सकारात्मक राजनीति की जीत है। ये मन के सच्चे और अच्छे लोगों की जीत है।

INDIA को सरकार बनाने के लिए इन पार्टियों के सपोर्ट की जरूरत

१. तृणमूल कांग्रेसः २९ सांसद

जब कांग्रेस की अगुआई में INDIA ब्लॉक बना था, तब ममता बनर्जी इसकी बैठक में शामिल हुई थीं। उन्होंने ही INDIA के संयोजक के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का नाम सुझाया था। हालांकि बंगाल में सीट शेयरिंग के मुद्दे पर तृणमूल और कांग्रेस के बीच सहमति नहीं बन पाई और दोनों ने अलग-अलग चुनाव लड़ने का फैसला किया। इसके बावजूद ममता बनर्जी ने कहा था कि वे INDIA के साथ हैं। लिहाजा अगर सरकार बनाने की नौबत आती है, तो तृणमूल गठबंधन को समर्थन दे सकती है।

२. जदयू : १२ सांसद

बिहार में भाजपा ने जनवरी २०२४ में जदयू के साथ मिलकर सरकार बनाई थी। इससे पहले नीतीश राजद और कांग्रेस के गठबंधन की सरकार के मुखिया थे। नीतीश ने ही INDIA ब्लॉक की पहली बैठक पटना में आयोजित की थी। नीतीश ने गठबंधन छोड़ा, तब भी लालू ने उनकी वापसी की संभावना जताई थी। ऐसे में अगर INDIA yलॉक नीतीश को अच्छी पोजिशन ऑफर करता है, तो उनकी वापसी हो सकती है।

३. तेलुगू देशम : १६ सांसद

आंध्र प्रदेश में भाजपा और तेलुगू देशम पार्टी (TDP) साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है। राज्य विधानसभा की कुल १७५ सीटों में से TDP को १३० से ज्यादा पर जीत मिलने के आसार है, वहीं भाजपा ७ सीटों पर आगे है। लोकसभा इलेक्शन में TDP के १६ सांसद जीत के करीब हैं।

दक्षिण में TDP के असरदार प्रदर्शन के बाद कांग्रेस नायडू को साथ लाने की कोशिश कर सकती है। इसके बदले चंद्रबाबू आंध्र को विशेष दर्जा मांग सकते हैं।

४. वाईएसआर कांग्रेस : ४ सांसद

तेलंगाना के मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी की बहन शर्मिला कांग्रेस में शामिल हो चुकी हैं। केंद्र में सरकार बनने की स्थिति में कांग्रेस उन्हें भाई को गठबंधन के साथ लाने की जिम्मेदारी सौंप सकती है। रेड्डी के पिता वाईएस राजशेखर रेड्डी कांग्रेस के बड़े नेता रहे हैं। ऐसे में जगन मोहन को पुराने संबंधों का हवाला देकर INDIA गठबंधन के साथ आने को कहा जा सकता है।

५. बीजू जनता दल : १ सांसद

ओडिशा में २००० से बीजू जनता दल की सरकार है। इस बार विधानसभा की १४७ सीटों में से ७४ पर भाजपा जीत सकती है, जो बहुमत के बराबर है। वहीं नवीन पटनायक की पार्टी बीजद को ५५ और कांग्रेस को १४ सीटें मिल रही हैं। लोकसभा में बीजद के पास कुल १ सीट आ रही है, ऐसे में वह INDIA गठबंधन के साथ आगे बढ़ सकती है।

सामना ने संपादकीय में लिखा- अहंकार की गाड़ी रोक दी...

खुद को ईश्वर का अवतार मानने वाले नरेंद्र मोदी का भारतीय जनता ने दारुण पराभव कर दिया है। इसे तानाशाही और भीडतंत्र पर लोकतंत्र की जीत कहा जाना चाहिए। नरेंद्र मोदी का 'चार सौ पार' का नारा सूखे पत्तों की तरह उड़ गया है। भारत ने बता दिया कि जनता ही अंत में लोकतंत्र की रक्षक होती है। चार सौ सीटें चुने। नहीं, चार सौ सीट जीतेंगे ही इस अहंकार को आखिरकार भारतीय जनता ने कुचल दिया। वाराणसी में ही जब नरेंद्र मोदी शुरू में पिछड़ गए तो जाहिर हो गया कि भगवान हैं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने भारत को जेल बना दिया। लोगों को स्वतंत्र रूप से बोलने और कार्य करने की भी स्वतंत्रता नहीं थी। खिलाफ बोलने वालों को सीधे जेल में डाल दिया गया।

दिल्ली, झारखंड के बहुमत वाले मुख्यमंत्रियों को सीधे जेल में डालने वाले मोदी-शाह ने भारतीय जनता पार्टी को वॉशिंग मशीन बना दिया। देश की सभी पार्टियों के भ्रष्ट नेताओं को भाजपा में लाकर जनता ने आएगा तो मोदी ही का नारा लगाने वालों को जगह दिखा दी। लोकसभा चुनाव का नतीजा जनादेश है। क्या नरेंद्र मोदी इस जनादेश का सम्मान करेंगे?

पहली सच्चाई तो यह है कि भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है और तथाकथित एनडीए का बहुमत का आंकड़ा कगार पर है। यानी मोदी जो चार सौ पार के रथ पर सवार होना चाहते थे। टायर पंक्चर हुए रिक्शा में बैठकर रायसीना हिल पर घूमना पड़ेगा। देश की तस्वीर साफ है।

उत्तर प्रदेश में जहां मोदी राम मंदिर की राजनीति कर खुद को हिंदुओं के नए शंकराचार्य के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे, वहां मोदी और भाजपा को सबसे बड़ा झटका लगा है। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश की ८० में से ४० सीटें जीतीं।

अमेठी में स्मृति ईरानी आखिरकार राहुल गांधी के सामान्य कार्यकर्ता से हार गईं। रायबरेली में राहुल गांधी खुद जीते। आखिरकार उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र ने मोदी के अहंकार को रोकने का काम किया।

मोदी-शाह ने शिवसेना और एनसीपी को तोड़कर गंदी राजनीति की। मराठी लोगों ने यह भ्रम तोड़ दिया कि महाराष्ट्र में शिवसेना-राष्ट्रवादियों में फूट डालकर एकतरफा जीत हासिल की जा सकती है। शक्ति का असीमित उपयोग, धन की धनाधन बरसात शिंदे सेना ने की।

अजीत पवार ने कई निर्वाचन क्षेत्रों को धमकाया और आतंकित किया। फडणवीस ने अनाजिपंत की राजनीति की। महाराष्ट्र ने इन सभी साजिशों का पराभव किया। मोदी-शाह ने मिलकर महाराष्ट्र में पचास बैठकें कीं, लेकिन हाथ कुछ नहीं लगा। महाराष्ट्र में भाजपा के कई दिग्गज नेता हार गए।

शिवसेना अपने हक के कुछ क्षेत्रों में विफल रही। बेशक शिवसेना ने विषम परिस्थितियों में संघर्ष किया। पार्टी चल ी गई, चुनाव चिह्न चला गया, आर्थिक ताकत नहीं रही। ऐसे में शिवसेना ने दोहरे अंक में सीटें जीतीं। महाविकास आघाड़ी के रूप में ३० सीटें जीतना धनबल और सरकारी मशीनरी की हार है।

केरल, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश राज्य भाजपा के साथ नहीं खड़े हुए। तमिलनाडु ने भी यही रास्ता अख्तियार किया। जगनमोहन रेड्डी और उनकी पार्टी आंध्र में हार गई। वहां तेलुगु देशम और चंद्रबाबू ने बाउंस बैक किया। कर्नाटक, बिहार में इंडिया गठबंधन को अपेक्षित सफलता नहीं मिली। अगर मिल जाती तो इंडिया गठबंधन आसानी से बहुमत का आंकड़ा पार कर सकता था।

हालांकि ऐसा नहीं हुआ, मोदी के अहंकार का रथ कीचड़ में फंस गया। जो लोग यह राग अलाप रहे थे कि मोदी और उनके लोग तीसरी बार दिग्विजय प्राप्त करेंगे, वे अब ठंडे पड़ गए हैं। जिन लोगों ने यह शेखी बघारते कहा था कि राहुल गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को ५० सीटें भी नहीं मिलेंगी, उनकी बोलती बंद हो गई है।

मोदी की तथाकथित देवत्व का पर्दाफाश हो गया। दिल्ली में आगे क्या होगा ये अहम सवाल है। क्या मोदी अल्पमत एनडीए का नेतृत्व स्वीकार कर तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के लिए आगे बढ़ेंगे? भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जरूर है, लेकिन उनके एनडीए का बहुमत टेकू पर आधारित है और टेकू भी अस्थिर है।

देश की जनता ने अहंकारी मोदी और उनके अमित शाह को अलविदा कह दिया है। उनके अहंकार की गाड़ी रोक दी है। अगर वे सत्ता बरकरार रखने के लिए फिर से भ्रष्ट और तोड़फोड़ का रास्ता अपनाएंगे तो लोगों का आक्रोश सड़कों पर उतर आएगा। देश में लोकतंत्र की बहुत बड़ी, अभूतपूर्व, अलौकिक जीत हुई है। यह देश के जीवन में परम आनंद का क्षण है और ऐसा ही रहेगा।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

देश-दुनिया

ओडिशा के मुख्यमंत्री के रूप में १२ जून शपथ लेंगे मोहन माझी, पीएम नरेंद्र मोदी रहेंगे मौजूद

२०२३ में माझी तब सुर्खियों में आए थे जब उन्होंने ७०० करोड़ रुपये के मिड डे मील घोटाले को उजागर करने के लिए अनूठे तरीके से विधानसभा में विरोध किया था। माझी ने तब एक कटोरी बिना पकी दाल स्पीकर की तरफ उछाल दी थी।

भाजपा पहली बार ओडिशा में अपनी सरकार बनाने जा रही है। भाजपा सरकार का शपथ ग्रहण १२ जून होना है। क्योंझर से विधायक मोहन चरण माझी भाजपा के पहले मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। उनके साथ राज्य के डिप्टी सीएम के रूप में केवी सिंह देव और प्रवती परिदा भी शपथ लेंगे। माझी के शपथ ग्रहण में शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दोपहर २:३० बजे पहुंचेंगे। शपथ ग्रहण समारोह शाम ५ बजे होगा। इसके लिए भुवनेश्वर के जनता मैदान को संवारा जा रहा है। ओडिशा भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल ने कहा कि कई राज्यों के मुख्यमंत्री और जानी-मानी हस्तियां शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगी।

माझी के नाम का एलान ११ जून को हुई विधायक दल की बैठक में किया गया। भाजपा ने वरिष्ठ पार्टी नेता राजनाथ सिंह और भूपेंद्र यादव को ओडिशा में विधायक दल के नेता के चुनाव के लिए केंद्रीय पर्यवेक्षक नियुक्त किया था। सीएम चुने जाने के बाद माझी ने कहा कि वह मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए पुरी जाएंगे।

घोटाला उजागर करने के लिए विस अध्यक्ष पर फेंक दी थी दाल

२०२३ में माझी तब सुर्खियों में आए थे जब उन्होंने ७०० करोड़ रुपये के मिड डे मील घोटाले को उजागर करने के लिए अनूठे तरीके से विधानसभा में विरोध किया था। माझी ने तब एक कटोरी बिना पकी दाल स्पीकर की तरफ उछाल दी थी।

भाजपा ने जताया भरोसा

चार बार एक ही विधानसभा क्षेत्र से जीत हासिल करने वाले माझी पर इस बार भारतीय जनता पार्टी ने भरोसा जताया और उन्हें ओडिशा का १५वां मुख्यमंत्री नियुक्त किया है। आपको बता दें कि इस बार ओडिशा विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने राज्य में बीजू जनता दल के विजयरथ को रोका और बड़ी जीत दर्ज की। १४७ में से ७८ सीटों पर जीत हासिल कर भारतीय जनता पार्टी ओडिशा में सबसे बड़ा दल बनकर उभरी। पार्टी ने मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किए बिना पीएम मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा था। उधर, बीजू जनता दल को ५१ सीटों पर जीत हासिल हुई।

विधानसभा चुनाव में क्योंझर सीट से जीते

आदिवासी नेता मोहन माझी ने विधानसभा चुनाव में क्योंझर सीट से जीत हासिल की है। इस चुनाव में उन्होंने बीजू जनता दल की मीना माझी को ११,५७७ मतों से शिकस्त दी। ५२ वर्षीय भाजपा नेता की विधानसभा चुनाव में यह चौथी जीत है। वह पहली बार २००० में क्योंझर (एसटी) विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा के विधायक चुने गए थे। इसके बाद २००४, २०१९ और अब २०२४ में भी क्योंझर सीट से जीते हैं। माझी ओडिशा विधानसभा में भाजपा के मुख्य सचेतक भी रह चुके हैं।

ऐसा रहा है सियासी सफर

मोहन चरण माझी का जन्म १९७२ में ओडिशा में हुआ था। उनके पिता का नाम गुनाराम माझी है। उनकी शादी डॉ. प्रियंका मरांडी से हुई है और उनके दो बेटे हैं। मोहन चरण माझी ने अपना सियासी करियर एक सरपंच के रूप में शुरू किया था। उन्होंने यह जिम्मेदारी १९९७ से २००० के बीच संभाली। १९९७ में उन्हें भाजपा ओडिशा आदिवासी मोर्चा के सचिव की जिम्मेदारी मिली। इसके अलावा मोहन स्थानीय स्तर पर युबज्योति क्लब, रायकला के अध्यक्ष, बाबा धबलेश्वर महादेव मंदिर समिति, रायकला के सदस्य और भाजपा ओडिशा एसटी मोर्चा के महासचिव जैसे पदों पर भी रहे।

फुटबॉल खिलाड़ी रहे हैं मोहन

हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनाव में मोहन ने अपनी संपत्ति १.९७ करोड़ रुपये घोषित की थी। वह खुद को पेशे से किसान और समाजसेवक बताते हैं। शैक्षिक योग्यता की बात करें तो माझी स्नातक पेशेवर हैं। १९९३ में सीएस कॉलेज चंपुआ से बीए किया है। इसके बाद मोहन ने २०११ में ढेंकनाल लॉ कॉलेज से एल.एल.बी. किया है। यात्रा और खेल का शौक रखने वाले मोहन रायकला, क्योंझर में राइजिंग स्टार क्लब के फुटबॉल खिलाड़ी रहे हैं

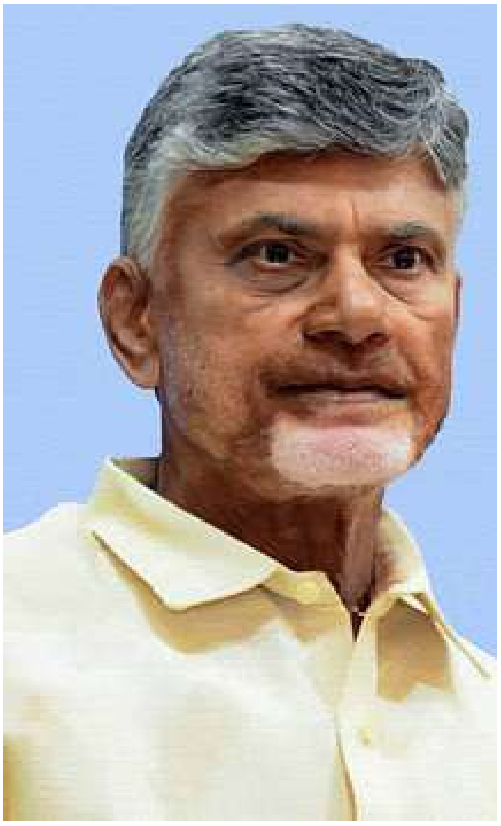

चंद्रबाबू नायडू ने ली आंध्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ, बतौर CM चौथा कार्यकाल

आंध्र प्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव में राज्य की १७५ में से १३५ सीटें जीतकर चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व वाली तेलुगु देशम पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनी थी। चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। बतौर सीएम यह नायडू की चौथी पारी है। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा समेत कई दिग्गज मौजूद रहे। नायडू सरकार में टीडीपी से २०, जनसेना से दो और भाजपा से एक को मंत्री पद की शपथ दिलाई गई। इससे पहले मंगलवार को टीडीपी और एनडीए ने नायडू को अपने विधायक दल नेता चुना था।

मंगलवार को विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद विजयवाड़ा में टीडीपी, भाजपा, जनसेना गठबंधन के नेताओं ने राज्यपाल एस अब्दुल नजीर से मुलाकात की और सरकार बनाने का दावा पेश किया था। बुधवार को नायडू के साथ कई और नेता भी मंत्री पद की शपथ ले सकते हैं।

नायडू ने शपथ ग्रहण से एक दिन पहले घोषणा की कि अमरावती राज्य की एकमात्र राजधानी होगी। एनडीए विधायक दल की बैठक के दौरान उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने दक्षिणी राज्य के लिए केंद्र सरकार से सहयोग मांगा है और उन्हें इसका आश्वासन भी मिला है। आंध्र प्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव में राज्य की १७५ में से १३५ सीटें जीतकर चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व वाली तेलुगु देशम पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनी। चुनाव में पवन कल्याण की जनसेना पार्टी ने २१ सीटें जीती हैं और भाजपा को भी आठ सीटों पर जीत हासिल हुई है। वहीं जगनमोहन रेड्डी की पार्टी वाईएसआरसीपी महज ११ सीटों पर सिमट गई है। आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में टीडीपी, जनसेना और भाजपा गठबंधन बनाकर चुनाव मैदान में उतरीं थीं।

Kuwait Fire: भीषण अग्निकांड में अब तक ४९ की मौत, कई भारतीय हताहत

कुवैत में एक इमारत में भीषण आग लग गई। एक स्थानीय न्यूज एजेंसी के अनुसार इस हादसे में ४९ लोगों की मौत हो गई है। खबर है कि मृतकों में से कई भारतीय भी शामिल हैं। भारतीय दूतावास के अनुसार इस हादसे में ३० से अधिक भारतीय घायल हो गए हैं। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार सुबह कुवैत के दक्षिणी अहमदी प्रांत के मंगफ इलाके में छह मंजिला इमारत की रसोई में आग लग गई थी। जिस इमारत में यह भीषण आग लगी, उसमें १९० से अधिक लोग मौजूद थे और सभी एक ही संस्थान में काम करते हैं। बताया गया है कि इन मजदूरों में कई भारत के रहने वाले थे।

कुवैत के फॉरेंसिक विभाग के महानिदेशक मेजर जनरल ईद अल-ओवैहान का कहना है कि मृतकों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। उन्होंने बताया कि मृतकों में से अधिकांश केरल, तमिलनाडु और उत्तर भारतीय राज्यों के नागरिक थे। मृतकों की उम्र २० से ५० साल के बीच बताई गई है।

भारतीय दूतावास ने जारी किया हेल्पलाइन नंबर

कुवैत स्थित भारतीय दूतावास ने इसे लेकर हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। दूतावास का कहना है कि इस अग्निकांड में भारतीयों की मौत के संबंध में जानकारी हासिल करने के लिए ±९६५-६५५०५२४६ हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क किया जा सकता है। दूतावास की तरफ से हर संभव मदद का एलान किया गया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक प्रकट किया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुवैत में हुए अग्निकांड पर शोक प्रकट किया है। उन्होंने एक्स पर लिखा 'कुवैत में आग की दुर्घटना दुखद है। मेरी संवेदनाएं उन सभी के साथ हैं, जिन्होंने अपने परिजनों को खो दिया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल जल्द से जल्द ठीक हो जाएं। कुवैत में भारतीय दूतावास द्वारा इस घटना पर बारीकी से नजर रखी जा रही है

वेजिटेबल लॉलीपॉप

सामग्रीः
१. ३-४ उबले आलू
२. २ उबली हुई मूली
३. २ कप मटर
४. १ कप गाजर
५. १ टुकड़ा अदरक
६. ४-५ हरी मिर्च
७. लाल मिर्च स्वादानुसार
८. गरम मसाला स्वादानुसार
९. १ छोटा चम्मच चाट मसाला
१०. ब्रेडक्रंब
११. स्वादानुसार नमक
१२. सीलेंट्रो
१३. आवश्यकतानुसार तेल

विधिः सबसे पहले अदरक को बारीक काट लें और इसमें थोड़ा नमक डालकर छांट लें। फिर गाजर को कद्दूकस करके मटर को मिक्सर से निकाल लें। अब फ्राई पैन में तेल डालें, अदरक का पेस्ट, मिर्च का पेस्ट, गाजर का पेस्ट, मटर का पेस्ट, उबले आलू, कुटी हुई मूली डालें, थोड़ा नमक डालें और इस मिश्रण को भूनें। फिर बारीक कटा हुआ हरा धनिया डालें, गरम मसाला, मिर्च पाउडर, चाट मसाला, नमक डालें, इसे बारीक मिलाएं और ब्रेडक्रंब के साथ कोट करें। फिर इस लॉलीपॉप को गर्म तेल में फ्राई करें। तैयार गरमा गरम वेजिटेबल लॉलीपॉप सॉस के साथ परोसें।

खानदेशी बैंगन

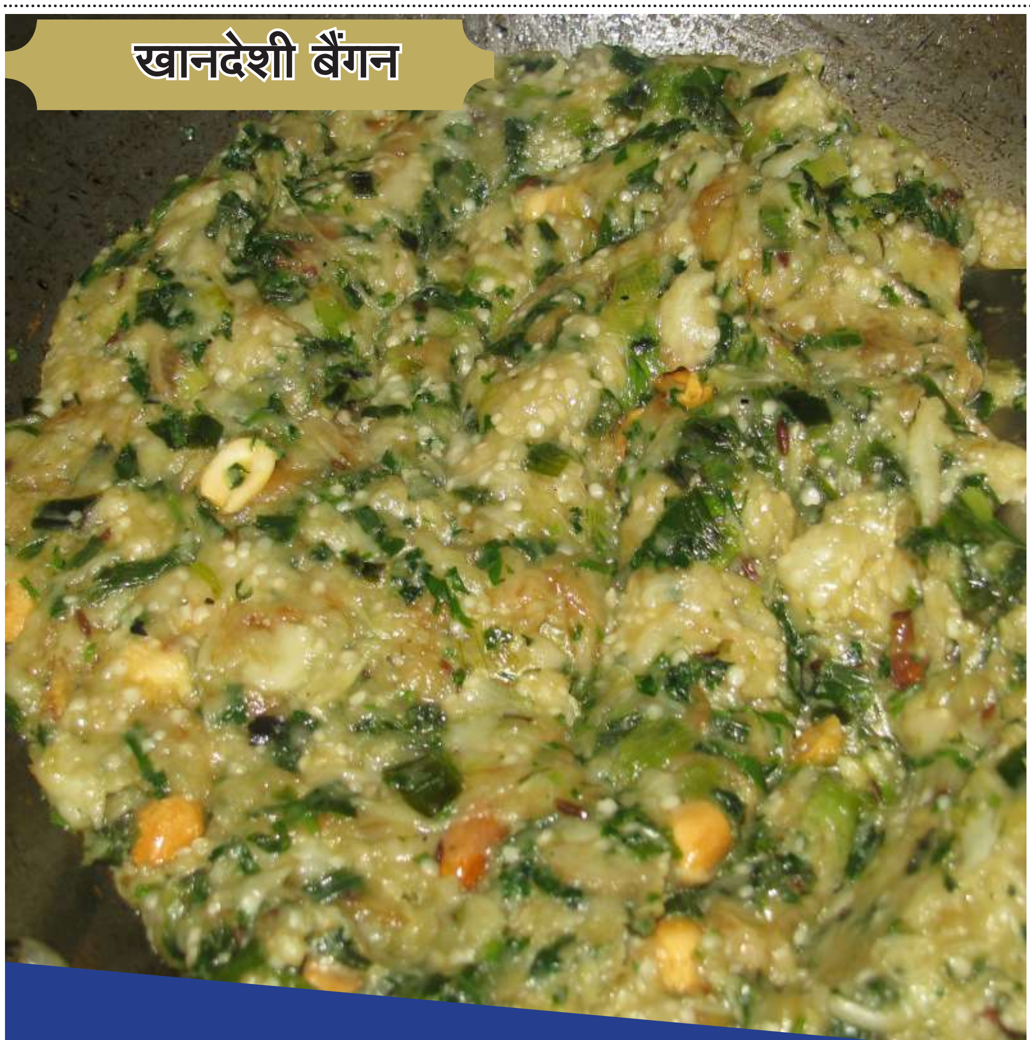

सामग्रीः
१ बड़ा हरा बैंगन
१५ प्याज के पत्ते
८ से १० हरी मिर्च
१ बड़ा चम्मच मूंगफली
१/२ कप और बारीक कटा हुआ धनिया
१० करी पत्ते
२ बड़े चम्मच मूंगफली का तेल
१५ लहसुन
लौंग स्वादानुसार
नमक१/२ छोटा चम्मच
जीरा चुटकी भर
हींग तलने के लिए
तेल २ कप
फूलगोभी
नमक और थोड़ा सा तेल
२ कप ज्वार का आटा

विधिः सबसे पहले बैंगन को धो लें। फिर बैंगन को भूनकर गैस पर ढक दें। आधे घंटे बाद इसके छिलके उतार लें। मिर्च गैस पर एक पैन पर मिर्च लहसुन और नमक को अच्छी तरह से भूनें। इसमें प्याज की कुछ पत्तियां डालें और फिर इसमें छिलके वाले बैंगन डाल दें और बचे हुए प्याज के पत्तों को बारीक काट लें। फिर पैन को गैस पर रखें और उसमें तेल डालकर मूंगफली को भूनकर ऊपर के घोल में डालें। बचे हुए तेल में जीरा डालें और प्याज के पत्ते और दो मिर्च को वर्टिकल डालें।

गार्लिक पोटैटो फ्राई

सामग्री :
छोटे वाले आलू- ½ किलो
ज़ीरा- ½ टीस्पून
सरसों के दाने- १ टीस्पून
करीपत्ते- ८ से १०
लहसुन की कलियाँ– ३ से ४
लाल मिर्च पाउडर- ½ टीस्पून
हल्दी पाउडर- ½ टीस्पून
चिल्ली फलैक्स- ½ टीस्पून
गर्म मसाला पाउडर- ½ टीस्पून
अमचूर पाउडर- १ टीस्पून
नमक- स्वाद अनुसार
हरा धनिया- २ टेबलस्पून बारीक कटा हुआ
ऑइल- ३ टेबलस्पून
काली मिर्च- ८ से १०
साबुत धनिया- २ टीस्पून
सौंफ- १ टीस्पून
ज़ीरा- १ टीस्पून

विधिः सबसे पहले आलू को बॉईल कर ले। आलू को अलग निकालकर ठंडा होने के लिए रख ले। तब तक मसालों का दरदरा पाउडर बना ले। एक नॉन स्टिक पैन में काली मिर्च, साबुत धनिया, सौंफ और ज़ीरा डालकर इनको धीमी आंच पर एक मिनट तक ड्राई रोस्ट करले और फिर मसालों को एक मिक्सी के जार में डालकर दरदरा पाउडर बना ले। सारे आलू का छिलका उतारकर रख ले। अब आलू फ्राई बनाने के लिए एक नॉन स्टिक पैन में ऑइल डालकर मीडियम आंच पर गर्म होने के लिए रख ले। आलू को फ्राई करने के लिए नॉन स्टिक पैन का ही इस्तेमाल करे इसमें मसाले और आलू जलेगे नहीं। ऑइल के गर्म होते ही इसमें सरसों के दाने, ज़ीरा और लहसुन डाल कर हल्का सा फ्राई करने के बाद करीपत्ते डाले।

फिर बॉईल आलू डालकर इनको हल्के हाथ से आधा मिनट तक मिक्स करते हुए फ्राई कर ले आलू को हलके हाथ से चलायें। जिससे ये टूटे नही। उसके बाद आंच को धीमा कर ले। फिर आलू में स्वाद अनुसार नमक, लाल मिर्च पाउडर, चिल्ली फलैक्स, हल्दी पाउडर, अमचूर पाउडर और गर्म मसाला पाउडर डालकर मसालों को अच्छी तरह से आलू में मिक्स कर ले। मसालों के साथ आलू को एक मिनट तक पका ले। उसके बाद जो दरदरे मसालों का पाउडर बनाकर रखा हैं, उस दरदरे मसाले को आलू के ऊपर डाले और मिलाएं। फिर इसमें हरा धनिया डालकर मिक्स कर ले। अब आलू को ढककर २ मिनट धीमी आंच पर ही पकने दे। जिससे सारे मसालों का फ़्लेवर आलू को अच्छे से मिल जाएँ। आपके चटपटे मसाला स्वादिष्ट आलू बनकर तैयार हैं। इसे पराठे या पूरी के साथ सर्व करे।

मैंगो कस्टर्ड

सामग्रीः
३/४ कप (१५० ग्राम)- चीनी
१/४ कप से थोड़ा सा अधिक- वनीला कस्टर्ड
१ लीटर (फुल क्रीम)- दूध
४०० ग्राम- आम (चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ)

विधिः - कस्टर्ड बनाने के लिए सबसे पहले गैस पर एक बर्तन में दूध रखें और इसे उबलने दें, लगभग ३/४ कप ठंडा दूध अलग से रख लें. अब इस ठंडे दूध में कस्टर्ड पाउडर डालकर अच्छी तरह तब तक घोलिए जब तक कि कस्टर्ड की गुठलियां पूरी तरह से खत्म न हो जाएं. दूध में उबाल आने के ४-५ मिनट बाद तक दूध को उबलने दें. दूध में कस्टर्ड घोल डालते जाइए और दूध को बड़े चम्मच से चलाते जाएं. इस तरह से सारा कस्टर्ड घोल डालकर अच्छी तरह मिक्स कर दें. इसमें चीनी भी मिला दें.

कस्टर्ड को दूध के साथ लगातार चलाते हुये, लगभग १० मिनट तक गाढ़ा होने तक पका लें. इसके बाद आंच बंद कर दें. कस्टर्ड ठंडा होने के बाद इसमें आम के टुकड़े डालकर मिला लें.

तैयार मैंगो कस्टर्ड को २ घंटे के लिये फ्रिज में रख दें. लीजिए ठंडा और स्वादिष्ट मैंगो कस्टर्ड तैयार है.

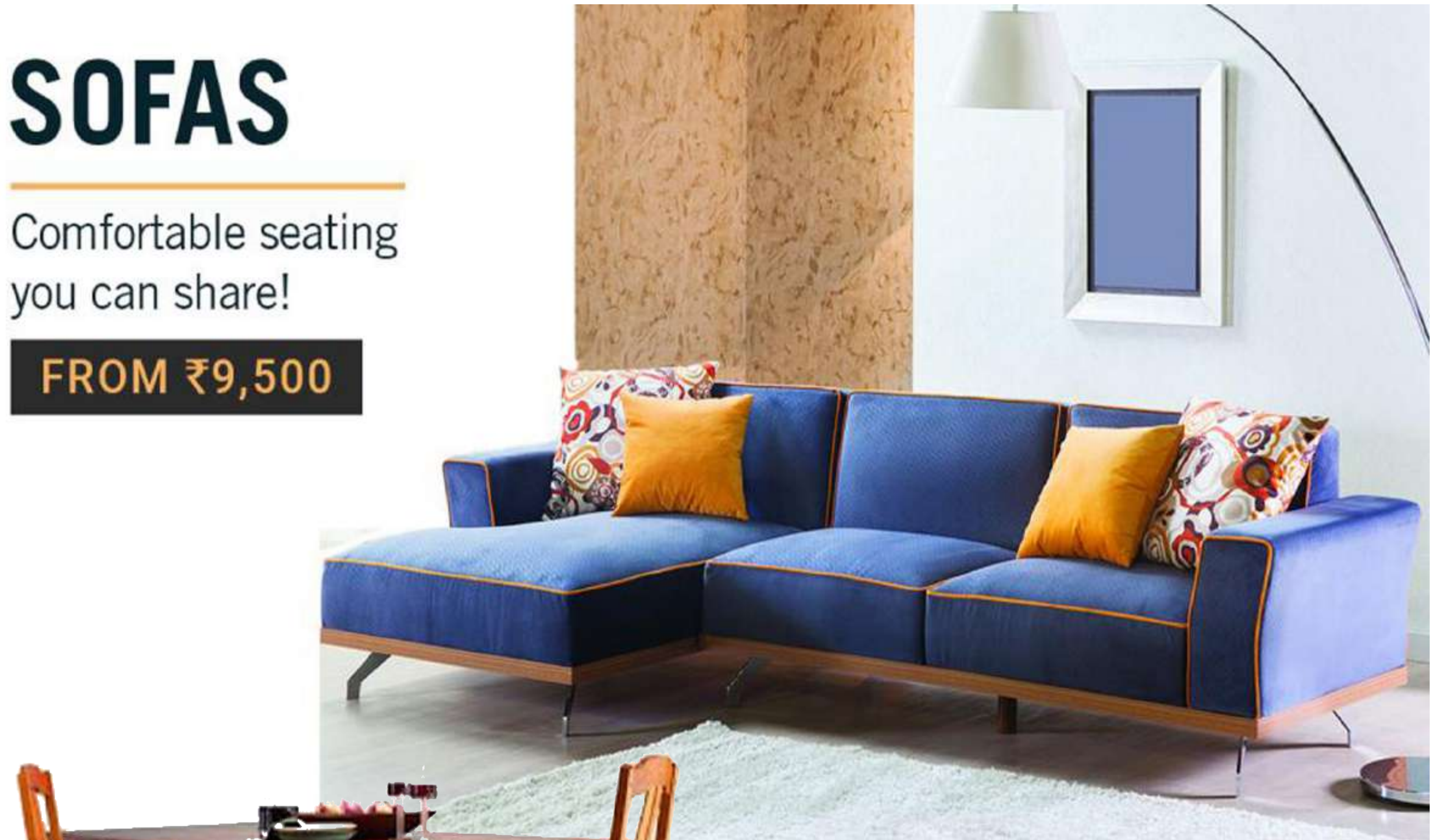
SOFAS
Comfortable seating
you can share!
FROM ₹9,500

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

मेष :

मेष राशि के जातकों के लिए इस माह ढेर सारी खुशियां, सुख-समृद्धि के साथ कुछ चुनौतियां भी लेकर आ रहा है.कार्यक्षेत्र में आपके द्वारा पेश किए जाने वाले प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया जाएगा। सीनियर और जूनियर आपके प्रपोजल की तारीफ करते नजर आएंगे और आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। करियर में जहां आपका ग्राफ उपर उठता हुआ नजर आएगा वहीं कारोबार में आप मनचाहा लाभ अर्जित करने में कामयाब होंगे। इस दौरान आपके धन के भंडार में वृद्धि होगी।

वृषभः

इस माह आप धन लाभ कमाने के लिए शार्टकट या फिर कहें तिकड़म आदि का सहारा ले सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को माह की शुरुआत में अपने कार्यक्षेत्र में अचानक से हुए बड़े बदलाव के कारण कुछ परेशानी झेलनी पड़ सकती है। इस दौरान अनचाही जगह पर तबादले या फिर अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल जाने के कारण आपका बना-बनाया शेड्यूल बिगड़ सकता है। इस माह वृष राशि के जातकों को बड़ी सूझ-बूझ के साथ अपने सहकर्मियों को मिलाकर काम करने की आवश्यकता रहेगी। माह के तीसरे सप्ताह में आप अपने करियर अथवा कारोबार से जुड़ा कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं। हालांकि किसी भी तरह का रिस्क लेते समय आपको अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए अन्यथा आपको बाद में पछतावा करना पड़ सकता है।

मिथुनः

मिथुन राशि के जातकों के लिए इस माह तमाम तरह की उपलब्धियां और सफलताओं को समाहित किए हुए है। इस माह आपको जीवन में तरक्की करने के कई अवसर प्राप्त होंगे। आपको घर और बाहर दोनों जगह लोगों का सहयोग और समर्थन मिलता हुआ नजर आएगा। कार्यक्षेत्र में आपके कामकाज की तारीफ होगी। आपके पदोन्नति एवं विभाग में बदलाव की पूरी संभावना है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में जुटे छात्रों का शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। उच्च शिक्षा के लिए किए जा रहे प्रयास सफल होंगे। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए मई का महीना ठीक-ठीक रहने वाला है।

इस माह कारोबार के सिलसिले में की गई यात्राएं और प्रयास सफल होंगे। माह के मध्य में आपको व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ होने की संभावना है। इस दौरान आप नई योजनाओं से जुड़कर काम कर सकते हैं। माह के उत्तरार्ध में आप किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे।

कर्कः

कर्क राशि के लिए इस महीने की शुरुआत शुभता और लाभ लिए रहने वाली है। इस दौरान आपके जीवन में अचानक से कुछ चुनौतियों के साथ बड़े अवसर भी सामने आएंगे। माह के प्रारंभ में नौकरीपेशा लोगों को नई संस्थाओं से अच्छे आफर आ सकते हैं। आपकी उन्नति के योग बनेंगे। आपको विभिन्न स्रोतों से धन लाभ की प्राप्ति होगी। सुख-सुविधाओं में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप अपने करियर को नई दिशा देना चाहते हैं तो इसके लिए आपको माह की शुरुआत में आश्वासन तो तमाम जगह से मिलेंगे लेकिन माह के मध्य तक ही आपको असल कामयाबी मिल पाएगी। इस दौरान आपके जीवन से जुड़ी तमाम तरह की समस्याओं का समाधान निकल सकता है। पैतृक संपत्ति की प्राप्ति में अड़चनें दूर होंगी। कोर्ट-कचहरी के मामलों में फैसला आपके हक में आ सकता है। माह के मध्य में आप अपनी आय के स्रोत को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

सिंह :

सिंह राशि के जातकों के लिए इस माह शुभता और सौभाग्य लिए हुए है लेकिन इसे पाने के लिए आपको अपने कर्म की साख को हिलाना पड़ेगा। इस माह आप जितने मनोयोग के साथ किसी भी कार्य को करेंगे आपको उसमें उतनी ही सफलता प्राप्त होगी। माह की शुरुआत में बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति तो वहीं पहले से नौकरीपेशा लोगों के कामकाज में बदलाव की संभावना बनेगी। इस दौरान आप अपने करियर-कारोबार में कुछ बड़े प्रयोग करने का रिस्क उठा सकते हैं। ऐसा करने से पहले आपको अपने शुभचिंतकों की सलाह लेना उचित रहेगा। इसके साथ आपको अपने भीतर अहंकार का भाव लाने से बचते हुए वाणी एवं व्यवहार में विनम्रता बनाए रखनी होगी। माह के मध्य में आपको कार्यक्षेत्र में कार्य विशेष के लिए सम्मानित किया जा सकता है।

कन्याः

कन्या राशि के जातक जून माह की शुरुआत में घर-गृहस्थी के कुछ बड़े मसले सुलझाने में व्यस्त रह सकते हैं। इस सिलसिले में आपको लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा भी करनी पड़ सकती है। माह की शुरुआत में आपका मन धर्म-अध्यात्म में ज्यादा लगेगा। इस दौरान आप अचानक से किसी तीर्थ स्थान की यात्रा पर निकल सकते हैं। आपको धार्मिक कार्यों में सहभागिता के अवसर प्राप्त होंगे। व्यवसाय से जुड़े लोगों को इस दौरान धीमी गति से ही सही लेकिन लाभ की प्राप्ति

होगी। बाजार में अपनी साख को बनाए रखने के लिए आपको माह के मध्य में अचानक से अपनी रणनीति में बदलाव करना पड़ सकता है, जिसका फायदा आपको भविष्य में मिल सकता है। यह समय विदेश से जुड़े काम करने वालों के लिए विशेष फायदेमंद रहने वाला है। उन्हें कारोबार में मनचाहा लाभ मिलेगा। माह के उत्तरार्ध में आपको घर-परिवार के सदस्यों के साथ क्वालिटी टाइम बिताने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको कुटुंब में बड़ों और छोटों का सहयोग और समर्थन मिलेगा।

तुला :

इस माह तुला राशि वालों को पास के फायदे में दूर का नुकसान करने से बचना होगा। महीने की शुरुआत में आपको करियर-कारोबार आदि को लेकर चुनौती बनी रह सकती है। इस दौरान कार्यक्षेत्र में आपके गुप्त शत्रु सक्रिय रह सकते हैं। तुला राशि के जातकों को जून महीने के पूर्वार्ध में अपने शुभचिंतकों का भी सहयोग और समर्थन कम मिल पाएगा। जिसके चलते उनके भीतर निराशा का भाव बना रहेगा। हालांकि माह के मध्य तक एक बार फिर परिस्थिति बदलेगी और गेंद आपके पाले में आ जाएगी। इस दौरान आप अपनी हिम्मत और मेहनत के बल पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम देते हुए आगे बढ़ेंगे। आप पाएंगे कि जिन मामलों को लेकर आपकी आलोचना हो रही थी अब उसी में सफल परिणाम आने पर लोग आपकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। माह के मध्य में करियर-कारोबार के सिल सिले में आपको अपने जन्मस्थान से दूर यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा सुखद और नए संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। यह समय कारोबार की दृष्टि से अनकूल रहने वाला है।

वृश्चिकः

वृश्चिक राशि वाले जातकों को जून महीने में बड़े बदलाव के लिए तैयार रहना होगा। इस माह आपको जीवन में नई रणनीति और बदलाव को अपनाते हुए आगे बढ़ना होगा। खास बात यह कि ये दोनों ही चीजें आपके लिए सकारात्मक और शुभ साबित होंगी। माह की शुरुआत में इष्टमित्र और शुभचिंतक आपके करियर और कारोबार को आगे बढ़ाने में काफी मददगार साबित होंगे। इस दौरान आपका जुड़ाव किसी प्रभावशाली व्यक्ति के साथ हो सकता है। आप नये कारोबार में भी हाथ आजमा सकते हैं। कुल मिलाकर जून महीने की शुरुआत व्यवसाय की दृष्टि से फल दायी रहने वाली है। यदि आपका भूमि-भवन से संबंधित कोई विवाद चल रहा है तो माह के दूसरे हफ्ते तक इसका बातचीत अथवा कोर्ट के निर्णय से समाधान निकल सकता है।

धनुः

धनु राशि के जातकों को इस माह तमाम तरह की परेशानियों और कर्ज आदि से मुक्ति मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी-रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं तो आपको इस माह मनचाहा काम मिल सकता है। हालांकि मिले हुए अवसर को भुनाने के लिए आपको आलस्य छोड़कर समय पर बेहतर तरीके से काम करके दिखाना होगा। नौकरीपेशा लोगों को मई महीने की शुरुआत में खुद को बेहतर साबित करने के लिए अधिक परिश्रम और प्रयास की जरूरत रहेगी। इस दौरान आपको अपने विरोधियों से भी खूब सतर्क रहते हुए दूसरों पर आश्रित रहने से बचना होगा अन्यथा किसी कार्य विशेष को हाथ में लेने के बाद लोगों का सहयोग और समर्थन न मिल पाने पर वह अधूरा रह सकता है। इस माह आपको व्यवसाय में थोड़ा उतार-चढ़ाव देखना पड़ सकता है।माह की शुरुआत में आपको कारोबार में औसत लाभ मिलने की संभावना है। हालांकि यह स्थिति ज्यादा समय तक नहीं रहेगी और माह के मध्य तक आपका कारोबार एक बार फिर से तेजी से आगे बढ़ता हुआ नजर आएगा।

मकरः

इस माह यदि अपने काम को सही समय पर सही तरीके से करने का प्रयास करते हैं तो आपको निश्चित रूप से परिश्रम और प्रयास का पूरा फल मिल सकता है। करियर और कारोबार की दृष्टि से जून का महीना काफी महत्वपूर्ण रहने वाला है। माह की शुरुआत में ही आपको रोजी-रोजगार से जुड़ा कोई शुभ समाचार मिल सकता है। इस दौरान मनचाही जगह पर तबादले या प्रमोशन की मनोकामना पूरी हो सकती है। न सिर्फ नौकरीपेशा लोगों के लिए बल्कि व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भी मई माह की शुरुआत शुभता लिए है। मकर राशि के जातकों को इस माह किसी भी काम को छोटा या बड़ा समझने की बजाय उसे पूरे मनोयोग के साथ करने का प्रयास करना चाहिए। माह के मध्य में आप नई चीजों को सीखने अथवा नए कारोबार की तरफ कदम आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसा करते समय आपको स्वजनों का पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा। इस दौरान आप भूमि-भवन, वाहन आदि पर बड़ी धनराशि खर्च कर सकते हैं।

कुंभः

कुंभ राशि के लिए जून का महीना मिश्रित फल देने वाला रहेगा। करियर-कारोबार की दृष्टि से जून महीने का पूर्वार्ध आपके लिए थोड़ा चुनौती भरा रह सकता है। इस दौरान रोजी-रोजगार के लिए आपको अधिक परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों पर अचानक से अतिरिक्त कार्य का बोझ आ सकता है। इस दौरान मकर राशि के जातकों को अपने काम में लापरवाही करने से बचना चाहिए अन्यथा उन्हें अपने सीनियर के गुस्से का शिकार होना पड़ सकता है।

व्यवसाय से जुड़े लोगों को इस माह के पहले सप्ताह में मनचाहा मुनाफा कमाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। इस दौरान आपको बाजार में अपनी साख बनाए रखने के लिए अपने कंपटीटर से कड़ा मुकाबला करना पड़ सकता है। इस दौरान आपको अपने कारोबार से जुड़े कागज संबंधी कार्य पूरे करके रखना उचित रहेगा, अन्यथा बेवजह की परेशानियां झेलनी पड़ सकती है।

मीनः

महीने की शुरुआत में आपको अपनी सेहत और संबंध आदि को लेकर बहुत ज्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान किसी बात को लेकर स्वजनों के साथ मतभेद या बहस हो सकती है। जिससे बचने के लिए आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता रहेगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अपने विरोधियों से खूब सतर्क रहना होगा क्योंकि वे आपके काम में बाधा डालने और आपकी छवि को धूमिल करने के लिए साजिश रच सकते हैं। हालांकि कठिन समय में आपके सीनियर और आपके शुभचिंतक जून महीने के पूर्वार्ध में आपको दूसरे शहर अथवा देश में कारोबार करने का बड़ा अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान आपकी आय में अप्रत्याशित वृद्धि के योग बनेंगे। प्रभावशाली लोगों के साथ जुड़ाव होने पर आपके काम तेजी से बनते नजर आएंगे। लाभप्रद योजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा।

पर्यटन

कुल्लू-मनाली

हरी-भरी घाटियां, किसी सुरमयी साज की तरह कानों में रस घोलते झरने, बर्फ से लकदक ऊंची-ऊंची पहाड़ियां, उनसे निकलती चमकती किरणें, कल-कल करतीं तेज गति से बहती नदियां, नागिन की तरह बल खाती खूबसूरत सड़कें, हवा में लहराते सेब, नाशपाती, अनार और प्लम के बगीचे। घने जंगल...सुकून भरा शीतल एहसास, स्वच्छ जलवायु। कुदरत के बारे में जितनी सुंदर कल्पना कर सकते हैं, उससे कहीं ज्यादा खूबसूरत हैं हिमाचल के ये पर्वतीय नगर। गर्मी के मौसम में यहां का नजारा कुछ ऐसा ही होता है। लोग मंत्रमुग्ध हो यहीं खो जाते हैं। नवविवाहित युगलों के लिए भी हनीमून का पसंदीदा पड़ाव है मनाली।

उत्तरी भारत के हिमाचल प्रदेश स्थित कुल्लू जिले का यह शहर बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग का हॉटस्पॉट रहा है। यह कुल्लू से रोहतांग दर्रा होते हुए लेह-लद्दाख की ओर जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग २१ पर स्थित है, जो साहसिक सैलानियों को अपनी ओर खींचता है। यह पूरा रास्ता कुदरत के एक से बढ़कर एक नजारों से पटा पड़ा है।

आजादी के बाद जब भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू गर्मियों की छुट्टियां बिताने यहां पहुंचे तो मनाली का नाम दुनिया में चर्चा का विषय बना। यहां भारतीय सभ्यता-संस्कृति की अमूल्य धरोहरों को प्राचीन समय से ही बड़ी शिद्दत और खूबसूरती से संजोकर रखा गया है। कुल्लू घाटी के

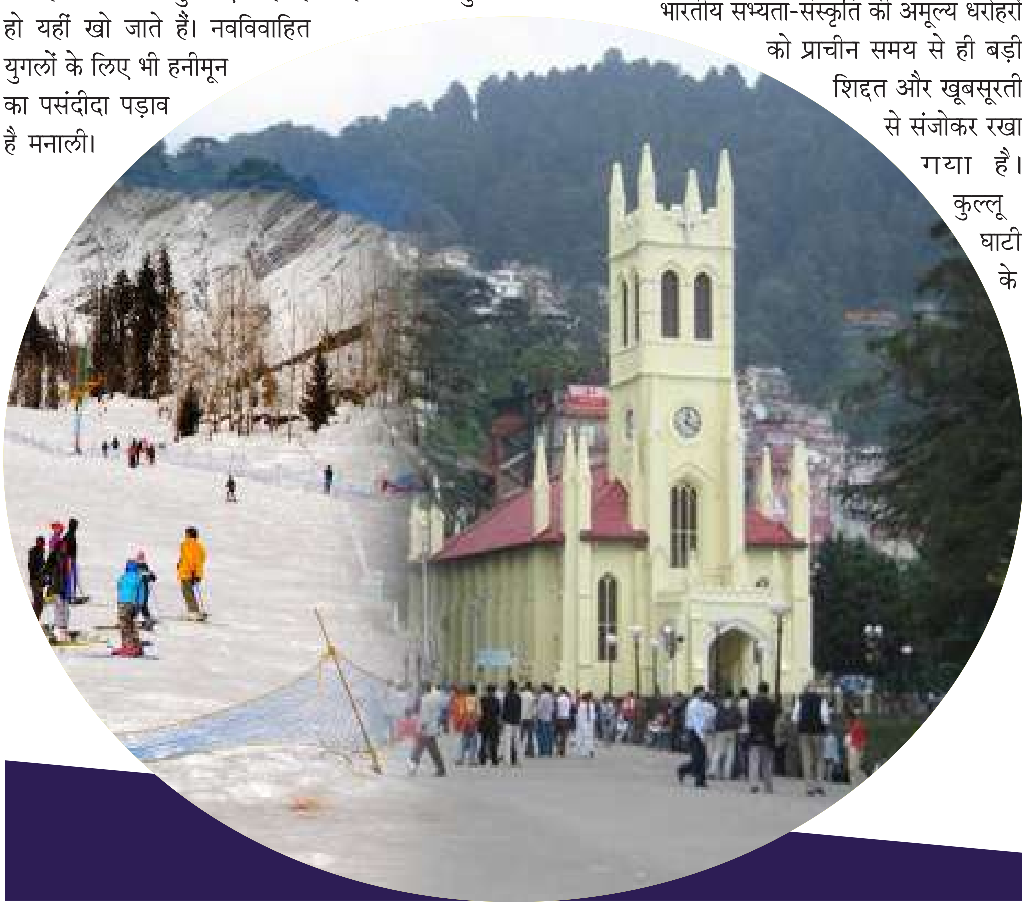

रोहतांग पास मनाली का सबसे बड़ा आकर्षण १२ महीने बर्फ से ढका रहने वाला रोहतांग पास है। यह मनाली से ५० किमी. दूर समुद्र तल से १३०५० फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह सैलानियों को ही नहीं, पर्वतारोहियों को भी खूब लुभाता है। रोहतांग पास कभी भारत व मध्य एशिया के कई देशों की संस्कृतियों को मिलाने का मुख्य मार्ग था। प्राचीन समय में पंजाब के लाहौर व अमृतसर से लेकर अफगानिस्तान, समरकंद, तुर्किस्तान, यारकंद और तिब्बत, लेह, चीन, भूटान, नेपाल, मंगोलिया तक यह व्यापार का प्रमुख जरिया था। इस रास्ते से रेशम, चरस-अफीम, अनाज व तेल के साथ बड़े पैमाने पर घोड़ों का कारोबार किया जाता था। यह अब व्यापारिक मार्ग तो नहीं रहा, पर पर्यटन के लिहाज से यह स्थान बेहद लोकप्रिय है।

मंदिर, कल्लू दशहरा, मणिकर्ण, रोरिक कला संग्रहालय यहां की पहचान हैं। गर्म कुंड भी यहां के खास आकर्षण हैं। घाटी की ऊंची पहाड़ियों पर सेब के बगान और निचले क्षेत्रों में अनार, प्लम, नाशपाती आदि के बगान हैं। यहां पर्यटन के साथ फलों के बगीचे भी आजीविका के साधन हैं।

रोहतांग पास मनाली का सबसे बड़ा आकर्षण १२ महीने बर्फ से ढका रहने वाला रोहतांग पास है। यह मनाली से ५० किमी. दूर समुद्र तल से १३०५० फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह सैलानियों को ही नहीं, पर्वतारोहियों को भी खूब लुभाता है। रोहतांग पास कभी भारत व मध्य एशिया के कई देशों की संस्कृतियों को मिलाने का मुख्य मार्ग था। प्राचीन समय में पंजाब के लाहौर व अमृतसर से लेकर अफगानिस्तान, समरकंद, तुर्किस्तान, यारकंद और तिब्बत, लेह, चीन, भूटान, नेपाल, मंगोलिया तक यह व्यापार का प्रमुख जरिया था। इस रास्ते से रेशम, चरस-अफीम, अनाज व तेल के साथ बड़े पैमाने पर घोड़ों का कारोबार किया जाता था। यह अब व्यापारिक मार्ग तो नहीं रहा, पर पर्यटन के लिहाज से यह स्थान बेहद लोकप्रिय है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने रोहतांग में पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए अब यहां रोजाना केवल १२०० वाहनों के प्रवेश की शर्त लगा दी है और इसके लिए ऑनल इन तथा मनाली में ही पैसे देकर परमिट लेना जरूरी कर दिया गया है।

स्थानीय बाशिंदों के हुनरमंद हाथों से तैयार विशेष गर्म उत्पाद है कुल्लवी शॉल। आज कुकल्लूशॉल के नाम पर यहां का 'भुट्टिको- विश्व में एक ब्रांड बन चुका है। कुकल्लूघाटी सहित प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर ऊनी वस्त्रों का उत्पादन बहुत पुराना है, लेकिन २०वीं सदी में यहां सुनियोजित व संगठित रूप में हथकरघा उद्योग विकसित हुआ। आपको एक बात का खास ख्याल रखना होगा कि हथकरघा के नाम पर आप ठगे न जाएं, क्योंकि कई दुकानदार यहां पर मैदानी राज्यों में पावर लूम से तैयार गर्म वस्त्रों को भी कुकल्लूहैंडलूम के नाम से बेचते हैं।

कल्लू के ऐतिहासिक क्षेत्र नग्गर से ३ किमी. ऊपर है, जो आज एक विकसित पर्यटन स्थल तो है ही, कला साधकों के लिए भी किसी कुंभ से कम नहीं। कल्लू को विश्व मानचित्र पर पहचान दिलाने का श्रेय रूसी चित्रकार एवं साहित्यकार निकोलस रोरिक को भी जाता है। उन्होंने अपनी कूची से पहाड़ों को एक नया रूप दिया और हिमालयी सभ्यता को ऐसे उकेरा कि वह दुनिया भर में लोकप्रिय हो गई। नग्गर स्थित यह हॉल एस्टेट, जिसमें रोरिक रहा करते थे, आज आर्ट गैलरी में तब्दील हो गया है। यहां उनकी हजारों पेटिंग्स को बखूबी सहेज कर रखा गया है। यहां एक संग्रहालय और ओपन थियेटर भी है। १९२३ में रोरिक अपनी पत्नी व दो बच्चों के साथ भारत आए थे। उनके चित्रकार पुत्र स्वेतोस्लाव रोरिक ने १९४४ में भारतीय सवाक फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री देविका रानी से विवाह किया था। कहते हैं, अपने पति हिमांशु राय के निधन और बॉम्बे टॉकीज को छोड़ने के बाद अभिनेत्री देविका रानी ल गभग टूट-सी गई थीं।

तभी उनकी मुलाकात रूसी चित्रकार और निकोल स रोरिक के पुत्र स्वेतोस्लाव रोरिक से हुई और कुछ ही समय बाद दोनों ने शादी कर ली। दिसंबर १९४७ में निकोलस रोरिक के देहांत के बाद बहू देविका रानी अपने ससुर के सपने को पूरा करने में जुट गईं। दरअसल, निकोलस रोरिक हिमालय में एकसंस्थान स्थापित करना चाहते थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने १९२८ में मंडी के राजा से यहां का हॉल एस्टेट खरीदा था, जिसे आज संग्रहालय का स्वरूप दिया गया है।

कसोल घाटी विदेशी पर्यटकों की खास पसंद है। यहां इजरायली जैसे रच-बस गए हैं। दशक भर से यह क्षेत्र देसी सैलानियों के लिए कुंभ मेले के समान हो गया है। यहां आने वालों में ९० फीसद युवा होते हैं, जो एडवेंचर और मौज-मस्ती के लिए आते हैं। वे यहां खुले आसमान के नीचे रंग-बिरंगे कैंपिंग साइट में ठहरते हैं। रेस्तरां व कैफे में भी इजरायलियों की भीड़ लगी रहती है। मणिकर्ण घाटी के कसोल सहित रसोल, छलाल, जरी, तोश व खीरगंगा में भी हलचल रहती है। वे यहां की प्राकृतिक वादियों से मिलने वाले आनंद को अधिक पसंद करते हैं। मणिकर्ण घाटी के 'मलाणा- गांव में विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र है। माना जाता है कि इसका संचालन यहां के देवता जमलू- करते हैं। इस गांव में सदियों से ग्राम स्वराज प्रणाली चल रही है। इसके लिए परिषद का गठन किया जाता है, जिसमें ११ सदस्य होते हैं। चार वार्डों से सदस्यों का चुनाव होता है। प्रशासनिक कार्रवाई के लिए दो सदन बनाए गए हैं। गांववासियों के विवाद को इन्हीं सदनों में निपटाया जाता है। फिर भी समस्या हो तो देवता जमलू की अदालत में निर्णय होता है, जो सर्वमान्य होता है। आज भी यह परंपरा है।

- सोलंगनाला के फातरु में स्की हिमालया ने २०११ में रोपवे का निर्माण किया। यह एक नये पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हुआ है।

- हिम वैली अम्यूजमेंट ऐंड कल्चर पार्क व कल्चरल इंडिया ने मनाली से चार किमी दूर बाहंग में सुंदर पार्क का निर्माण कर इसे अलग स्वरूप प्रदान किया है।

- मनाली से २० किलोमीटर दूर ऐतिहासिक गांव नग्गर है, जो कभी कुकल्लूरियासत की राजधानी हुआ करती थी।

- हिमाचल प्रदेश के पंच महादेवों में से एक हैं कुकल्लूके बिजली महादेव, जिनका स्थान यहां के देवी-देवताओं में सबसे अग्रणी है। उन्हें 'बड़ा देऊ- भी कहा जाता है।

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने ७वीं शताब्दी के दौरान 'कुलूत- देश का जिक्र किया है।

कुल्लू-मनाली की सैर?

वैसे तो यहां वर्षभर आ सकते हैं। पर मई व जून और सितंबर-अक्टूबर में जब दशहरा पर्व मनाया जाता है, तब घाटी में पर्यटन का अपना ही आनंद है। दिल्ली से सीधी वॉल्वो व दूसरी सामान्य बसें चलती हैं, जबकि चंडीगढ़ तक रेलगाड़ी से आने के बाद वहां से भी बस ली जा सकती है। दिल्ली व चंडीगढ़ से कल्लू के समीप भुंतर हवाई अड्डे के लिए उड़ानें भी उपलब्ध हैं।

देवी हिडिंबा का मंदिर मनाली बाजार से लगभग तीन किलोमीटर दूर पुरानी मनाली में देवदारों के घने जंगल के बीच स्थित है। यह पैगोडा शैली में बना काष्ठ कला का उत्कृष्ट नमूना है। मंदिर के गर्भगृह में माता की पाषाण मूर्ति है। मान्यता है कि जब पांडव वनवास में थे, उस दौरान भीम ने हिडिंबा के राक्षस भाई को मारकर क्षेत्र को उसके आतंक से मुक्ति दिलाई थी। इसके बाद हिडिंबा ने उनसे विवाह कर लिया। कहते हैं कल्लूराज परिवार के पहले शासक विहंगमणिपाल को माता ने ही यहां का राजकाज बख्शा था। यही कारण है कि राज परिवार आज भी माता को अपनी दादी मानता है।

१७वीं शताब्दी में कल्लूके राजपरिवार द्वारा देव-मिलन से शुरू हुआ महापर्व कुल्लू दशहरा आज भी घाटी की देव संस्कृति को जिंदा रखने का महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पर्व जहां कुल्लू के लोगों के भाई-चारे का मिलाप है वहीं घाटी में कृषि व बागवानी कार्य समाप्त होने के बाद ग्रामीणों की खरीदारी का भी प्रमुख पर्व है। यह दशहरा केवल कुल्लू व हिमाचल का मेला नहीं, बल्कि प्राचीन संस्कृति और विविधता में एकता का अध्ययन एवं शोध करने वालों के लिए बड़ा अवसर है। इस दौरान मेला स्थल ढालपुर मैदान की छटा देखते ही बनती है। हजारों लोगों का हुजूम रंग-बिरंगे परिधानों में अलग-अलग फूलों के गुलदस्ते के समान लगता है। मेले के आरंभ में जब भगवान रघुनाथ की शोभायात्रा निकलती है, तो ऐसा लगता है मानो मानव रूपी समुद्र में श्रद्धा की लहरें उमड़ रही हों। इसमें न रामलीला होती है, न रावण-कुंभकर्ण-मेघनाद के पुतले जलाए जाते हैं। इसकी अलग सांस्कृतिक पहचान है।

कुल्लू दशहरा के दौरान भगवान रघुनाथ के छड़ीबरदार राजपरिवार के सदस्य होते हैं। वर्तमान में महेश्वर सिंह छड़ीबरदार हैं, जिन्हें राजा साहब कहते हैं। लेखक हीरालाल ठाकुर बताते हैं, कुल्लू राजघराने का पहला शासक विहंगमणिपाल को माना जाता है। राहुल सांकृत्यायन ने इनका समय ३६० ई. बताया है। राजा सिद्धपाल के काल से इस राजवंश का आरंभ माना जाता है। फिलहाल यह परिवार कुल्लू के समीप रघुनाथपुर स्थित रूपी पैलेस में रह रहा है। यह पैलेस भी कुल्लू के दर्शनीय स्थलों में शामिल है।

कुल्लू के रेस्तरां, होटल और फूड कोर्ट आदि में हर तरह का भोजन व देश-विदेश में प्रचलित व्यंजन उपलब्ध हैं। पर घाटी के अपने पकवानों और व्यंजनों की गर्म तासीर का अपना अलग ही आनंद है। ये सर्दी के लिहाज से पकाए जाते थे, यह परंपरा आज भी चली आ रही है। इनमें प्रमुख रूप से गेहूं के आटे से पकाया जाने वाला 'सिड्डू- है। इसे आटे को खट्टा करके बनाया जाता है, जो ओवल आकार का होता है। लोई के अंदर स्वाद के हिसाब से अखरोट, मूंगफल ी, अफीमदाना का मीठा या नमकीन पेस्ट भरा जाता है। इसे मोमोज की तरह पकाया जाता है और चटनी के साथ परोसा जाता है। यहां के विभिन्न क्षेत्रों में आटे के मीठे अथवा नमकीन बबरू, आटे की घी-बाड़ी, चावल व माश की घी-खिचड़ी, चावल व गेहूं के आटे के चिलड़े व अस्कलू, मक्की की रोटी व साग सहित अन्य सभी तरह की दाल-सब्जियां बनाई जाती हैं। कुल्लू में स्थानीय लोग नाश्ते के लिए ढाल पुरस्थित फूड कोर्ट का रुख करते हैं। कुल्लू घाटी में नॉन-वेज का इस्तेमाल सदियों से मुख्य आहार के तौर पर होता रहा है, लेकिन २०वीं सदी के शुरुआती दौर में जब व्यास नदी में ट्राउट का बीज पड़ा तो यहां की तस्वीर ही बदल गई। आज कुल्लूसे लेकर मनाली तक व्यास नदी के किनारे ट्राउट मछली की संख्या लाखों में है और लाइसेंस पर इसका आखेट भी हो रहा है। यहां की ट्राउट मछली का स्वाद सैलानियों को खूब भाता है।

... अगर उस दिन सुनील दत्त नहीं आते तो संजय, राजकुमार पर हाथ उठाते...

जब प्रकाश मेहरा ने संजय दत्त को फिल्म के लिए कास्ट किया तो उन्होंने उन्हें बहुत अच्छे डायलॉग्स दिए। राजकुमार को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने प्रकाश मेहरा पर दबाव बनाया। उन्होंने कहा, 'हमें कुछ संवाद दिए जाने चाहिए। उन्होंने संजय दत्त का स्क्रीन टाइम कम करने के लिए भी कहा।

चूंकि राजकुमार बड़े स्टार हैं और उनके सामने संजय दत्त काफी जूनियर हैं, इसलिए प्रकाश मेहरा उन्हें रिजेक्ट नहीं कर पाए। उन्होंने संजय दत्त से यह बात छिपाने की कोशिश की। लेकिन संजय दत्त को आखिरकार पता चल ही गया कि राजकुमार ने उनके साथ क्या किया है। इससे संजय दत्त नाराज हो गए। उन्होंने ऐलान किया कि अगर राजकुमार सेट पर नजर आए तो वह उन्हें मार देंगे। प्रकाश मेहरा को जब पता चला कि संजय दत्त राजकुमार को छूने वाले हैं तो उन्होंने सीधे सुनील दत्त को फोन किया।

प्रकाश मेहरा ने सुनील दत्त को फोन कर पूरे मामले की जानकारी दी। उन्होंने सुनील दत्त से सेट पर आने की गुजारिश की। अगले दिन जब संजय दत्त सेट पर पहुंचे तो राजकुमार उन्हें मारने की तैयारी कर रहे थे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि सेट पर उनके पिता पहले से मौजूद हैं तो वह शांत हो गए। सुनील दत्त ने संजय दत्त और राजकुमार को फोन कर दोनों में सुलह करा ली। इस तरह उस दिन सेट पर हुई घटना को रोक दिया गया। फिल्म का नाम 'मोहब्बत के दुश्मन' है। यह ३६ साल पहले २० मई, १९८८ को जारी किया गया था।

फिल्म में हेमा मालिनी ने भी अभिनय किया था। फराह नाज संजय दत्त की एक्ट्रेस थीं। फिल्म में अमरीश पुरी ने मुख्य विलेन का किरदार निभाया था। फिल्म में प्राण, दीना पाठक और ओम प्रकाश ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। फिल्म में कल्याणजी-आनंदजी द्वारा संगीतबद्ध कुल छह गाने थे। फिल्म में इस गाने को किशोर कुमार ने भी गाया था। लेकिन जब फिल्म रिलीज हुई थी तब वे इस दुनिया में नहीं थे। गाने के बोल थे 'अल्लाह करे मौला करे'. इस फिल्म की घोषणा प्रकाश मेहरा ने १९८५ में की थी। उस समय अमन विर्क और मंदाकिनी का हीरो और हीरोइन था। लेकिन बाद में प्रकाश मेहरा ने दोनों को बाहर कर संजय दत्त और फराह नाज को कास्ट किया।

आज के बच्चे अपने माता-पिता से अनुमति नहीं लेते हैं: शत्रुघ्न सिन्हा

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा अपने बॉयफ्रेंड और एक्टर जहीर इकबाल के साथ शादी के बंधन में बंधने जा रही हैं। सोनाक्षी सिन्हा २३ जून को मुंबई में जहीर के साथ शादी के बंधन में बंधने जा रही हैं। बेटी की शादी के बारे में पूछे जाने पर दिग्गज अभिनेता और नवनिर्वाचित सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा कि सोनाक्षी ने उन्हें कुछ नहीं बताया है। उन्होंने कहा, 'मैं अभी दिल्ली में हूं. मैं चुनाव परिणाम के बाद यहां आया हूं। मैंने अपनी बेटी की योजनाओं के बारे में बात नहीं की है। तो आपका सवाल यह है कि क्या वह शादी करने जा रही है? जवाब यह है कि उसने मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया है। मैंने उतना ही पढ़ा है जितना मैं मीडिया में पढ़ा हूं। अगर और जब वह मुझे और मेरी पत्नी को इसके बारे में विश्वास में लेंगी, तो हम जोड़े को आशीर्वाद देंगे।

उन्होंने कहा, 'मुझे विश्वास है कि सोनाक्षी अपने लिए सही निर्णय लेंगी। हमें अपनी बेटी के फैसले पर पूरा भरोसा है। वह कभी भी अवैध या गलत निर्णय नहीं लेगा। एक समझदार व्यक्ति के रूप में, उसे अपने निर्णय लेने का अधिकार है। इस पर मैं बस इतना ही कह सकता हूं कि आज के बच्चे अपने माता-पिता से अनुमति नहीं लेते, बल्कि उन्हें सूचित करते हैं। हम भी इसी का इंतजार कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो सोनाक्षी और जहीर मुंबई में शादी कर रहे हैं। दोनों पिछले कुछ समय से शादी की तैयारी कर रहे हैं। हाल ांकि, हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव के कारण उन्होंने अपनी योजनाओं को स्थगित कर दिया। सोनाक्षी के पिता, अभिनेता और राजनेता शत्रुघ्न सिन्हा ने तृणमूल कांग्रेस की पार्टी के टिकट पर पश्चिम बंगाल की आसनसोल सीट से चुनाव लड़ा और जीत हासिल की।

व्यक्तित्व

एक विश्लेषण :

महान शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत का वास्तविक जीवन-दर्शन : आर्ट ऑफ गिविंग

महान शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत का वास्तविक जीवन दर्शनःआर्ट ऑफ गिविंग - शांति, खुशहाली, सद्भाव और प्रेम को पूरे विश्व में फैलाने, मानवीय संबंधों को मजबूत बनाने और सुमधुर बनाने रखते हुए जरूरतमंदों की मदद करने के लिए आरंभ किया गया है जिसकी शुरुआत वे १७ मई, २०१३ से आरंभ किये। प्रो.अच्युत सामंत चाहते हैं कि उनके वास्तविक जीवन दर्शन से सभी लोगों के जीवन में कृतज्ञता और करुणा का सतत संचार हो। सच तो यह है कि प्रो.अच्युत सामंत के उस वास्तविक जीवन दर्शन आर्ट ऑफ गिविंग को विश्व के करीब १३० देश के लोग अन्तर्राष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग के रुप में मनाते हैं। इसके अनुपालन में न तो भाषा की दीवार है न ही प्रांतीयता का बंधन, न जातीयता का मोह है न जाति,भाषा, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय आदि का कोई भेदभाव...

ओड़िशा प्रदेश की राजधानी भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस दो डीम्ड विश्वविद्यालयों के प्राणप्रतिष्ठाता प्रो.अच्युत सामंत एक महान शिक्षाविद् हैं जिन्होंने अपने वास्तविक जीवन-दर्शनः आर्ट ऑफ गिविंग की शुरुआत १७ मई,२०१३ को शुरु की और आज उसे पूरा विश्व अन्तर्राष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग के रुप में स्वेच्छापूर्वक तथा हर्षोल्लास के साथ मनाता है।कहते हैं कि आदमी जन्म से नहीं अपितु अपने कर्म से महान होता है। कर्म का पहला कदम परिवार होता है, उसकी अपनी जन्मभूमि और मातृभूमि होती है जहां वह अपने माता-पिता के सानिध्य और संस्कार में पल-बढ़कर,शिक्षित तथा परिपक्व होकर, आत्मविश्वासी, सत्यनिष्ठ तथा निःस्वार्थ समाजसेवी बनता है। वह कर्तव्यनिष्ठ बनकर सतत समर्पण से जनसेवा और लोकसेवा करता है। उसका जीवन आध्यात्मिक जीवन होता है जिसका अनुसरण सभी करते हैं। वह मन, वचन, कर्म तथा अपने स्वच्छ आचरण से भारतीय संस्कृति का उन्नायक बनता है। उसका परोपकारी विचार ही वास्तव में अध्यात्म दर्शन हो जाता है। वह सभी प्रकार से न केवल युवापीढी का रोलमॉडल बनता है अपितु वह सच्चा कर्मयोगी बनकर मानवता का सृजनकर्ता बन जाता है। महान शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत का सरल, सहज, सौम्य और सदा मुस्कराता चेहरा आत्मीयता का एक ऐसा चुंबक है जिसकी ओर सभी स्वतः खीचे चले आते हैं। उनका सादगीभरा पहनावा उनको संतों के भी संत बना दिया है। प्रो.सामंत ओड़िशा की धरती के अमृतपुत्र हैं। वे अपनी विश्व विख्यात आदिवासी आवासीय विद्यालय, कीस के माध्यम से (१९९२-९३ से आरंभ) जो अब विश्व का प्रथम आदिवासी आवासीय डीम्ड विश्वविद्यालयट बन चुका है उसके माध्यम से निःशुल्क उत्कृष्ट शिक्षा प्रदानकर आदिवासियों के जीवित मसीहा बन चुके हैं। वे धीर-वीर और गंभीर हैं। वे सदा समय के पाबंद रहते हैं। वे उदार विचारवाले सहृदय और मित्तभाषी हैं। वे अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक दायित्व के प्रति सतत सजग तथा जागरुक हैं।

सच कहा जाय तो प्रो. सामंत एक निःस्वार्थ समाजसेवी हैं। वे अपने जीवन के मात्र ५९ वर्ष में जनसेवा, समाजसेवा और लोकसेवा के क्षेत्र में जो कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं वह स्वर्णिम अक्षरों में हमेशा अमर रहेगा। वे सच्चे लोकनायक के रुप में ओडिशा की सभी कलाओं, ओड़िया भाषा, साहित्य, खेल, सूचना तकनीकी शिक्षा, विज्ञान, फिल्म, मनोरंजन, संस्कृति, चिकित्सा, समाज कल्याण तथा लोककल्याण के क्षेत्र में जिस प्रकार की उल्लेखनीय

उपलब्धियां हांसिल की हैं उनके बदौलत वे आज एक सच्चे लोकनायक बन चुके हैं।

प्रो. अच्युत सामंत की सरलता, सादगी,सहजता, सेवाभावना, समानता, सहयोग, सहिष्णुता,सकारात्मक सोच,समन्वय आदि की उनकी संवेदनशील भावनाओं का अनुभव कर हम निःसंकोचभाव से उन्हें सच्चे मानवतावादी, आजीवन गांधीवादी तथा जननायक कह सकते हैं। कहते हैं कि जहां पर अहंकार है, वहां अंधकार हो जाता है। प्रो. अच्युत सामंत के निःस्वार्थ सेवा के सभी कार्यों में अहंकार बिलकुल ही नहीं है। वे तो सादगी और विनम्रता के आलोकपुरुष हैं, दिव्यपुरुष हैं, ओडिशा की धरती के जीवित देवदूत हैं। उनकी विचारशक्ति की ताकत अप्रतिम है। उनकी रचनात्मकता तथा सादगीपूर्ण जीवन अनुकरणीय और वंदनीय है। वे विश्व की भावी पीढी के जीवित प्रेरणास्त्रोत हैं। महान शिक्षाविद् प्रो अच्युत सामंत का कहना है कि विद्या बालक को विनय देती है, विनय से बालक के स्वभाव में तथा आचरण में पात्रता आती है। पात्रता से उसे धन प्राप्त होता है और धन से वह अपने जीवन में मन, वचन और कर्म से सुखी होता है। प्रो अच्युत सामंत उपर्युक्त सभी पवित्र कार्यों में सपल बनाने में लगे हुए हैं।

आर्ट ऑफ गिविंग

महान शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत का वास्तविक जीवन दर्शनःआर्ट ऑफ गिविंग - शांति, खुशहाली, सद्भाव और प्रेम को पूरे विश्व में फैलाने, मानवीय संबंधों को मजबूत बनाने और सुमधुर बनाने रखते हुए जरूरतमंदों की मदद करने के लिए आरंभ किया गया है जिसकी शुरुआत वे १७ मई, २०१३ से आरंभ किये। प्रो.अच्युत सामंत चाहते हैं कि उनके वास्तविक जीवन दर्शन से सभी लोगों के जीवन में कृतज्ञता और करुणा का सतत संचार हो। सच तो यह है कि प्रो.अच्युत सामंत के उस वास्तविक जीवन दर्शन आर्ट ऑफ गिविंग को विश्व के करीब १३० देश के लोग अन्तर्राष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग के रुप में मनाते हैं। इसके अनुपालन में न तो भाषा की दीवार है न ही प्रांतीयता का बंधन, न जातीयता का मोह है न जाति,भाषा, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय आदि का कोई भेदभाव।

प्रोफेसर अच्युत सामंत मानते हैं कि जीवन का सबसे बडा सत्य है कि गरीबी है जो पाप को जन्म देती है। पापी पेट कुछ भी गलत कर सकता है। लेकिन प्रोफेसर सामंत की बाल्यकाल की घोर गरीबी ने उन्हें सच्चा मानव बना दिया है।वे कीट-कीस के माध्यम से आर्ट ऑफ गिविंग जीवन-दर्शन की ऐतिहासिक पहल दुनिया के सभी जरूरतमंदों के लिए प्यार और मोहब्बत के समर्थन के सार्वभौमिक मूल्यों का शाश्वत पैगाम दे रहे हैं। आर्ट ऑफ गिविंग के प्रत्येक साल के लिए एक विशेष थीम रखा जाता है जिसमें वर्ष २०२४ का थीम है- आर्ट ऑफ गिविंग को अपनाकर हम अपने जीवन के तौर-तरीकों को बदलें। पिछले कुछ वर्षों में आर्ट ऑफ गिविंग का थीम शिक्षकों, सहायकों, माताओं-बहनों, बच्चों और समाज के विकास की मुख्य धारा से वंचित लोगों को प्रसन्न रखना रहा है। आर्ट ऑफ गिविंग का मूल संदेश है-देकर खुश रहना। आर्ट ऑफ गिविंग जीवन-दर्शन ने परिभाषित किया है कि किसे देना है और क्या देना है। प्रो.सामंत का यह जीवन-दर्शन भौतिकवाद से ऊपर उठकर आपसी संवेदनात्मक तथा भावनात्मक संबंधों और खुशियों को जन-जन तक पहुंचाना है।यह जीवन दर्शन एक सामाजिक आंदोलन बन चुका है जिसकी शुरुआत सबसे पहले व्यक्ति से शुरु होती है जो सामूहिक प्रयास के माध्यम से सतत बढ़ रहा है। आर्ट ऑफ गिविंग के समीक्षक यह मानते हैं कि एक जीवन दर्शन व्यक्तिगत कार्य से उदारता और दयालुता से आरंभ होकर सामूहिक लहर बन चुकी है। इसलिए आज यह आवश्यक है कि हमसब मिलकर महान शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत के आर्ट ऑफ गिविंग जीवन दर्शन को सार्वभौमिक बनायें।

-अशोक पाण्डेय

टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग २०२४ में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय चमका

वार्षिक टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग की दिनांकः १४ मई को घोषणा की गई । अपनी अकादमिक रैंकिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि में, कीट डीम्ड यूनिवर्सिटी २०२४ के लिए टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग में भारत में ११वें स्थान पर पहुंच गई है। यह कदम केआईआईटी के निरंतर सुधार और उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को स्पष्ट करता है। गौरतलब है कि सिर्फ २६ साल पुराना केआईआईटी ने कई आईआईटी सहित कई पुराने संस्थानों को पीछे छोड़ दिया है। यह उपलब्धि अन्य संस्थानों की तुलना में संस्थान के युवाओं को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है जो लगभग आधी शताब्दी से शैक्षिक स्तंभ रहे हैं। पिछले साल की रैंकिंग में कीट को वैश्विक स्तर पर १५१-२०० रैंकिंग के समूह में रखा गया था। इस वर्ष की रैंकिंग में कीट की वैश्विक रैंक में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और यह रैंकिंग १६८ हो गई है। इस साल की रैंकिंग में दुनिया भर के ६७३ विश्वविद्याल यों का मूल्यांकन किया गया जिनमें से ५५ भारत से थे, जिससे केआईआईटी को युवा विश्वविद्यालयों के शीर्ष पायदान पर आंका गया है। टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग विशेष रूप से दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों को सूचीबद्ध करती है जो ५० वर्ष या उससे कम उम्र के हैं, उनका मूल्यांकन उनके मुख्य मिशनों में किया जाता हैः शिक्षण, अनुसंधान, ज्ञान हस्तांतरण और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण। रैंकिंग में कीट की वृद्धि इसके मजबूत शैक्षणिक ढांचे और नवीन शैक्षणिक गुणवत्ता का प्रमाण है। विश्वविद्यालय को शिक्षा के प्रति अपने गतिशील दृष्टिकोण के लिए लगातार पहचाना जाता है जो न केवल शैक्षणिक कठोरता बल्कि अपने छात्रों के समग्र विकास पर भी जोर देता है। कीट और कीस के सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों ने संस्थापक प्रो. अच्युत सामंत के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की है। उनका दूरदर्शी नेतृत्व और समर्पण कीट के तेजी से बढ़ने और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर पर्याप्त प्रभाव डालने में महत्त्वपूर्ण रहा है। प्रो. सामंत ने कीट की असाधारण उपलब्धि पर अपनी प्रतिक्रिया देते कहा कि यह रैंकिंग अकादमिक उत्कृष्टता की हमारी निरंतर खोज का प्रतिबिंब है। केआईआईटी में हम विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करने और अपने छात्रों को वैश्विक नेता बनने के लिए तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए सभी शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी और छात्रों को बधाई भी दी।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय का विशेष दीक्षांत समारोह

'मंगोलिया में कीट की तरह मंगोलिया में भी महिलाओं को महत्त्व देता हुआ': भारत में मंगोलिया के राजदूत

भुवनेश्वर, ३० मईः केआईआईटी, कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के विशेष दीक्षांत समारोह में प्रेरक भाषणों और संस्थान की उल्लेखनीय उपलब्धियों को मान्यता दी गई। भारत में मंगोलिया के राजदूत श्री गनबोल्ड डंबजय सहित प्रतिष्ठित वक्ताओं ने शिक्षा और महिला सशक्तिकरण में विश्वविद्यालय के योगदान की सराहना की। हर साल, केआईआईटी डीयू में पढ़ने वाले अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए एक विशेष दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाता है।

महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयासों के लिए कीट -कीस और कीम्स की प्रशंसा करते हुए श्री दंबजय ने कहा, 'किसी भी घर में असली ताकत महिलाओं की होती है। मेरे देश में, महिलाएं समाज में एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि कीस ने लड़कियों को आत्म-सशक्तिकरण की दिशा में भी अवसर प्रदान किए। समय के साथ, वे समाज को महत्त्वपूर्ण लाभ पहुंचाएंगे।'

उन्होंने युवा स्नातकों को अपनी कड़ी मेहनत और समाज के प्रति समर्पण से दुनिया को जीतने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजदूत श्री दंबजय ने भारत और मंगोलिया के बीच ऐतिहासिक और आध्यात्मिक संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, 'मंगोलियाई-भारतीय संबंध २००० साल पुराने हैं। उन्होंने कहा, 'मंगोलिया-भारतीय संबंध २००० साल पुराने हैं। नालंदा विश्वविद्यालय में भिक्षु अध्ययन करने आते थे और वह भी ऐसे समय में जब परिवहन के कोई साधन नहीं थे।' उन्होंने आध्यात्मिक बंधन को भी याद करते हुए कहा, 'यहां के सन्यासियों ने गंगा नदी से पानी एकत्र किया और इसे पूर्वी मंगोलिया में एक झील में डाला, जिसे गंगा झील के रूप में जाना जाता है।'

केआईआईटी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री अशोक परीजा ने छात्रों की उपलब्धियों का जश्न मनाते हुए कहा, 'हमारे छात्रों ने शिक्षा के साथ-साथ अन्यान क्षेत्रों में भी अपनी अलग पहचान बनाई है।' उन्होंने कीट और कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत के अथक समर्पण को कीट की सफलता के पीछे प्रेरक शक्ति बताया और छात्रों से 'चुनौती को स्वीकार करने, अपनी आकांक्षाओं में साहसी बनने और अपने कार्यों में दयालु बनने' का आग्रह किया।

केआईआईटी के प्रो- चांसलर डॉ. सुब्रत कुमार आचार्य ने विश्वविद्यालय की तीव्र प्रगति को रेखांकित

किया तथा टाइम्स हायर एजुकेशन द्वारा देश में शीर्ष १० में इसके स्थान का उल्लेख किया।

प्रो वाइस चांसलर डॉ. सीबीके मोहंती ने स्नातक छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, 'यह उत्तीर्ण छात्रों के शैक्षणिक करियर का यादगार लम्हा है, लेकिन यह भविष्य के लिए मील के पत्थर हासिल करने की सीढ़ी है। कृपया एक उज्ज्वल भविष्य के लिए एक सपना देखें, योजना बनाएं और आगे एक अच्छा जीवन जियें।'

कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह ने विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ २० से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिनमें २२ अमेरिकी विश्वविद्यालय शामिल हैं।' उन्होंने गर्व से उल्लेख किया कि केआईआईटी के टीबीआई ने स्टार्टअप ओडिशा द्वारा सफल इनक्यूबेटर पुरस्कार जीता है और पेरिस ओलंपिक के लिए अर्हता प्राप्त करने वाले पांच छात्रों का जश्न मनाया ।

सी एच एस इ १२ की परीक्षा में कीस ने दर्ज किया १००% रिजल्ट

भुवनेश्वर, २७ मईः कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (केआईएसएस) कीस के सभी १,८८५ छात्र, जो काउंसिल ऑफ हायर सेकेंडरी एजुकेशन (सीएचएसई) द्वारा आयोजित कक्षा १२ की परीक्षा में शामिल हुए थे, कला, विज्ञान और वाणिज्य तीनों संकायों में १००% सफलता दर हासिल करते हुए उत्तीर्ण हुए हैं। नतीजे रविवार को घोषित किये गये। इस साल के नतीजों में लड़कियां लड़कों से आगे रहीं।कीस के छात्रों में से ३८% ने प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त किया। स्ट्रीम के अनुसार इसे तोड़ते हुए, विज्ञान के ४०% छात्रों, वाणिज्य के ४१% छात्रों और कल ा के ३३% छात्रों ने प्रथम श्रेणी अंक हासिल किए। हीरामणि मलिक ने ८८% अंक हासिल किए और कॉलेज में कला में टॉप किया। विज्ञान में लिबू सरदार ने ८०% अंकों के साथ टॉप किया। शंकर भूमिज ने ८७% अंक हासिल किए और कॉलेज में वाणिज्य में शीर्ष स्थान हासिल किया। विभिन्न पीवीटीजी समूहों के पचहत्तर छात्रों ने भी विज्ञान, कला और वाणिज्य धाराओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि ये उत्कृष्ट परिणाम कीस में छात्रों और संकाय दोनों के समर्पण को दर्शाते हैं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सफलता के अवसर प्रदान करने में इस शैक्षिक संस्थान की भूमिका को रेखांकित करते हैं।

ओडिशा की १०वीं बोर्ड परीक्षा के घोषित परिणाम में कीस ने दर्ज किया शत-प्रतिशत रिजल्ट उत्कृष्ट प्रदर्शन ही

कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस) ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (BSE), ओडिशा द्वारा आयोजित १०वीं बोर्ड परीक्षा में १००% परिणाम पोस्ट किया है, जिसके परिणाम आज घोषित किए गए। राज्य का औसत पास प्रतिशत लगभग ९६.७% है जबकि कीस का शत-प्रतिशत। अपनी स्थापना के बाद से १७ वर्षों से अधिक समय से, स्कूल बोर्ड परीक्षाओं में लगभग १००% परिणाम अर्जित कर रहा है।

लगातार १७ वर्षों से कीस के नाम दर्ज रहा १००% परिणाम

गौरतलब है कि २००८ छात्रों ने इस वर्ष दशवीं बोर्ड परीक्षा दी थी जो राज्य के किसी भी स्कूल के लिए सबसे अधिक है, जिनमें से ४०% छात्रों ने ६०% अंक हासिल किए और बाकी ने ५०% से अधिक अंक हासिल किए। सगुन टुडू ने ९०% अंकों के साथ स्कूल टॉपर रहे। विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) के सौरा, बोंडा और पौडी भुइयां समुदायों के पचास छात्रों ने परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ अच्छा प्रदर्शन किया, जबकि पड़ोसी राज्य झारखंड के केआईएसएस के छात्रों ने भी मैट्रिक बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

छात्रों और शिक्षकों को बधाई देते हुए, केआईआईटी और केआईएसएस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत ने कहा कि केआईएसएस छात्रों की साल-दर-साल निरंतर सफलता केवल शिक्षकों और कर्मचारियों के निरंतर प्रयास और केआईएसएस छात्रों के ईमानदार और सतत समर्पण के कारण संभव हो पाई है।

कर्म का फल तो भुगतना ही पड़ता है...

एक बहुत ही यशस्वी राजा था। वह अपने हर कार्य में सर्वश्रेस्ट था।प्रजा का खूब ध्यान रखता था,उन्हें कभी भी किसी भी बात के लिये तंग नही करता था,धर्मत्मा व दयालु था. उसकी एक आदत यह भी थी की वह सप्ताह में एक दिन गोशाला की सफाई, गायों को नहलाने का कार्य भी स्वयं ही करता था, एक बार वह गोशाला में अपने कार्य में लगा हुआ था, तभी एक साधू भिक्षा मांगता हुआ गोशाला तक आ गया, उसने राजा से भिक्षा मांगी, राजा अपने ध्यान में मग्न सफाई कर रहा था, शायद कुछ खिजा भी हुआ था. उसने दोनों हाथो से उठा कर गोबर साधु की झोली में डाल दिया, साधू आशीर्वाद देते हुए वंहा से चला गिया, राजा को कुछ देर बाद अपनी गलती का एहसास हुआ, राजा ने सैनिको को साधु को ढूढ़ने के लिए भेजा परन्तु साधु नही मिला.

इस बात को ना जाने कितना समय बीत गया. एक बार राजा शिकार करने जंगल में गया हुआ था, खूब थकने पर वह पानी की तलाश में भटकते भटकते

साधु ने कहा राजन कोई कार्य ऐसा करो की तुम्हारी चारो कुंठो में बदनामी हो. इस से इसी जन्म में तुम्हारे इस कार्य का कुछ तो भार अवश्य ही कम हो जायेगा, राजा महल में गया बहुत सोचने के बाद अगले दिन सुबह उसने राज्य की सबसे सुंदर वेश्या को बुलाया, वह खूब सजधज कर आई, राजा उस वेश्या को ले कर रथ पर पूरे राज्य का भर्मण करने निकल पड़ा. जिसने भी राजा वेश्या के साथ देखा वह आचम्भित रह गया व साथ ही थू थू करने लगा. प्रजा कहने लग पड़ी लगता है राजा का दिमाग खराब हो गया है.,,, राजा ने इस प्रकार की महीनो तक किया,काफी दिन घूमने के बाद राजा जब गोबर के ढेर के को देखने गया तो उसने पाया अब वहां केवल शायद उतना ही गोबर रह गया है जो उसने साधु को दिया था, ...

एक कुटिया के बाहर पहुंचा. कुटिया के अंदर झांकने पर उसने देखा वहां एक साधु धयान में मग्न बैठा था, वहीं उसके पास एक खूब बड़ा गोबर का ढेर लगा हुआ था, राजा अचंभित व परेशान हो कर सोचने लगा की साधु के चेहरे का तेज कितना अधिक है, पर यह गोबर का ढेर क्यों है यहाँ,,,

राजा साधु के पास गया, प्रणाम किया, जल माँगा व पिया और पूछा साधू से, अगर आप बुरा ना माने तो क्या में जान सकता हूँ कि आप के चेहरे का तेज कहता है की आप एक तपस्वी है, फिर आप की कुटिया में इतनी गंदगी क्यो है, साधू ने कहा राजन हम जीवन में जो कुछ भी जाने या अनजाने, अच्छा या बुरा करते है, वह हमें इसी जन्म में या अगले जनम में की गुना हो कर मिलता है, यह गोबर भी किसी दयालु ने दान में दिया है, राजा को झटका लगा और सारी घटना कई की साल पहले की स्मरण हो आई

राजा ने साधू से क्षमा मांगी व प्रायश्चित का मार्ग पूछा, साधु ने कहा राजन इस गोबर को तुम्हें खा कर समाप्त करना है, इसे जला कर राख में बदल लो या थोड़ा थोड़ा खा कर समाप्त करो. राजा ने कहा साधु महाराज कोई और उपाय बताये क्योकि थोड़ा थोड़ा खा कर समाप्त करने में कई वर्ष बीत जायेगे, साधु ने कहा राजन और उपाए तुम कर नही पाओगे, राजा अड़ गया तो साधु ने कहा राजन कोई कार्य ऐसा करो की तुम्हारी चारो कुंठो में बदनामी हो. इस से इसी जन्म में तुम्हारे इस कार्य का कुछ तो भार अवश्य ही कम हो जायेगा, राजा महल में गया बहुत सोचने के बाद अगले दिन सुबह उसने राज्य की सबसे सुंदर वेश्या को बुलाया, वह खूब सजधज कर आई, राजा उस वेश्या को ले कर रथ पर पूरे राज्य का भर्मण करने निकल पड़ा.

जिसने भी राजा वेश्या के साथ देखा वह आचम्भित रह गया व साथ ही थू थू करने लगा. प्रजा कहने लग पड़ी लगता है राजा का दिमाग खराब हो गया है.,,,

राजा ने इस प्रकार की महीनो तक किया,काफी दिन घूमने के बाद राजा जब गोबर के ढेर के को देखने गया तो उसने पाया अब वहां केवल शायद उतना ही गोबर रह गया है जो उसने साधु को दिया था, वह और भी कई दिनों के उसी प्रकार के कार्य के बाद भी समाप्त नहीं हो रहा था। अचानक एक दिन साधु महल में आया उसने राजा से कहा राजन यह तो मूल है इसे तो तुम्हे खा कर ही समाप्त करना पड़ेगा. राजा ने उस गोबर को राख में बदला व खा कर समाप्त किया.

एयर प्यूरीफायर की जरूरत नहीं, इन उपायों के जरिये बच सकते हैं प्रदूषण से

वायु प्रदूषण की स्थिति ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। वैसे तो जीने के लिए सांस लेना जरूरी होता है लेकिन हर सांस अगर गंभीर बीमारियों या मौत को दावत दे तो सवाल यही उठता है कि जिएं तो जिएं कैसे बिन साफ हवा के। प्रकृति ने मनुष्य को कुछ चीजें उपहार में दी हैं जैसे जल, धरती, हवा, सूर्य, चाँद, नदियां, पहाड़, हरे भरे वन और धरती के नीचे छिपी हुई खजिन सम्पदा। लेकिन विकास की अंधी दौड़ कह लें या मनुष्य के लालच की सीमा का नहीं होना, प्रकृति के सभी उपहारों का हमने बुरा हाल करके छोड़ दिया है।

- प्रदूषण के दिनों में आप यह ध्यान रखें कि सूयीदय से पहले घर से बाहर नहीं निकलें। योग आदि करना हो तो घर पर ही करें।
- नारियल पानी का ज्यादा से ज्यादा उपयोग भी प्रदूषण के दुष्प्रभाव से आपको बचाता है।
- भोजन भी संतुलित करें और मौसमी फल तथा सब्जियों का ज्यादा उपयोग करना चाहिए।
- सुबह और शाम को आंखों को अच्छी तरह से धोना चाहिए। साथ ही जलनेति का उपयोग भी प्रदूषण के दिनों में करना लाभकारी रहता है।
- घर में एयर प्यूरीफायर की जगह प्रदूषण से लड़ने की ताकत रखने वाले पौधे रखना लाभकारी रहता है। पौधे लगाते समय यह नहीं सोचना चाहिए कि एक ही जगह १०-१२ पौधे रख दें तो सही रहेगा। ऐसा करने की बजाय पूरे घर में जगह-जगह २-३ पौधे रखने चाहिए। जो पौधे प्रदूषण से लड़ सकते हैं उनमें तुलसी का पौधा, स्नेक प्लांट यानि नाग पौधा, बैंबू पाम, स्पाइडर प्लांट और एरेका पाम प्रमुख हैं। ये जो पौधे हमने आपको बताये हैं उनमें एरेका पाम को छोड़ दें तो यह सभी बेहद सस्ते हैं और इनकी देखरेख भी बेहद आसान है।

- प्रदूषण जब ज्यादा हो तो घर में तीन या चार बार गीला पोंछा लगाना चाहिए क्योंकि इससे आपके घर में धूल के कण बिलकुल नहीं रहेंगे।
- ज्यादा प्रदूषण के दिनों में घर की खिड़कियां और दरवाजे बंद ही रखने चाहिए साथ ही यह भी ध्यान रखें कि कोई भी मास्क आपको ज्यादा समय सुरक्षित नहीं रख सकता इसलिए ज्यादा देर खुले में नहीं रहें। खासकर जिन लोगों को सांस की समस्या है उनके लिए मास्क ज्यादा उपयोगी नहीं हैं।
- एक-एक चम्मच च्यवनप्राश का सेवन सुबह-शाम करने से बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।
- सुबह खाली पेट तुलसी की कुछ पत्तियों का सेवन करें।
- बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने के लिए सुबह-सुबह नीम की कुछ पत्तियों या लहसुन की एक कली का सेवन भी कर सकते हैं।
- घर से बाहर जाने से पहले तिल या सरसों का तेल या देसी घी को हल्का-सा गर्म करें और फिर उसे ठंडा करके २-३ बूंदें नाक में अंदर की तरफ लगाने से जहां एलर्जी पैदा करने वाली चीजें अथवा धूल कण सांस के जरिये शरीर के भीतर नहीं पहुँच पाते। ■

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
SM
स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८४

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

प्रश्न १ : साल में कितने महीने होते हैं?

प्रश्न २ : साल में कितने दिन होते हैं?

प्रश्न ३ : 2+2 कितने होते हैं?

प्रश्न ४ : आंखों से आप क्या करते हैं?

प्रश्न ५ : सुबह के समय जो खाते हैं, उसे क्या कहते हैं?

प्रश्न ६ : आसमान का क्या रंग होता है?

प्रश्न ७ : इंद्रधनुष यानी रेनबो में कितने रंग होते हैं?

प्रश्न ८ : जंगल का राजा कौन है?

प्रश्न ९ : चिड़िया कहां रहती है?

प्रश्न १० : जल की रानी कौन है?

प्रश्न ११ : हमें स्वाद किससे पता चलता है?

प्रश्न १२ : भारतीय सेना के तीन अंग कौन-कौन से हैं?

प्रश्न १३ : हमारे राष्ट्रपिता कौन हैं?

प्रश्न १४ : हमारे प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

प्रश्न १५ : हमारा राष्ट्रगान क्या है?

प्रश्न १६ : हमारा राष्ट्रीय पशु कौन है?

प्रश्न १७ : हमारा राष्ट्रीय पक्षी कौन है?

प्रश्न १८ : फलों का राजा किसे कहते हैं?

प्रश्न १९ : पनीर किससे बनता है?

प्रश्न २० : हमारे यहां चिट्ठी कौन पहुंचाता है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः...

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

नसीब का लिखा...

किसी एक गांव में बहुत ज्ञानी पंडित रहा करता था। पंडित आजू बाजू के सारे ही गावों मैं बहुत प्रख्यात था और इसी वजह से धनवान भी। पंडित का परिवार ज्यादा बड़ा नहीं था। पंडित अपनी पत्नी के साथ अपने बहुत बड़े घर में अकेला रहता था क्योंकि पंडित को कोई बेटा था नहीं और एक बेटी थी जिसका विवाह पास के गांव वाले एक श्रीमंत लड़के से हो चुका था।

पंडित ने शादी से पहले अपने होनेवाले दामाद की अच्छे से जांच पड़ताल की थी और अपनी बेटी का भविष्य भी ठीक से पढ़ा था तब जाकर उसने बेटी की शादी की थी। लेकिन चंद सालो में ही पंडित का दामाद बुरी आदतों के चंगुल में फंस गया। जुआ और शराब की बुरी लत ने उन्हें सड़क पर लाकर रख दिया था।

अपने बेटी की ऐसी दुर्दशा देखकर पंडित की पत्नी काफी दुखी होती थी और अक्सर पंडित को कहा करती थी तुम जाकर उनकी मदद कर आओ। पंडित हमेशा अपनी बीवी को यह कहकर उनकी मदद करने के लिए मना कर देता था कि अभी कुछ समय तक उनका बुरा वक्त चलना है। हम चाहे कितनी ही कोशिश कर ले जो उनके नसीब में नहीं है वह उन्हें नहीं मिल पाएगा।

पंडित की ऐसी बातों से उसकी पत्नी काफी दुखी हो जाया करती थी और मन ही मन सोचती थी कि,' कैसा स्वार्थी पिता है अपनी बेटी को इतने कष्टों में देखकर भी उसकी मदद करने के लिए मना करता है। आखिर भगवान ने जो इतना सारा धन धान्य दिया है उसका क्या करेंगे? हमें कोई और औलाद भी तो है नहीं ले देकर एक यही बेटी है और उसके लिए भी कुछ नहीं करेंगे तो किसके लिए करेंगे?' पंडित ऐसा नहीं सोचता था। ऐसा नहीं है कि पंडित अपनी पुत्री से प्रेम नहीं करता था लेकिन उसने अपनी पुत्री की कुंडली इतने अच्छे से पढ़ी थी और वह यह पहले से ही जानता था की वह चाहे किसी भी लड़के से शादी करती लेकिन उसके जीवन में यह समय आने वाला ही था और बिना इसे भुगते उसको छुटकारा नहीं मिल ने वाला था। एक दिन खाने पीने के लिए भी मोहताज हो चुके पंडित के बेटी और दामाद उसके घर पर आए। पंडित ने और उसकी बीवी ने दोनों का खूब आदर सत्कार किया और खूब अच्छा खाना खिलाया। बेटी और दामाद की पंडित से सहायता मांगने की हिम्मत ना हुई इसलिए वह बिना बोले ही वापस अपने घर को लौटने लगे।

लेकिन मां तो मां होती है पंडिताइन से रहा नहीं गया और बिना पंडित की इजाजत के उसने चोरी छुपे बूंदी के लड्डू बनाकर उसमें सोने के सिक्के रख दिए और बेटी और दामाद को दे दिए ताकि बेटी और दामाद की कुछ आर्थिक सहायता हो सके। पंडिताइन यह भी जान गई थी कि बेटी और दामाद शर्म के मारे उनसे मदद नहीं मांग रहे थे इसलिए उसने बेटी और दामाद को भी लड्डुओं में छिपे सिक्कों के बारे में कुछ नहीं बताया। 'जाहिर सी बात है कि जब वो लोग घर पर जाकर लड्डू खाएंगे तो उन्हें उसमें सोने के सिक्के मिल जाएंगे इस तरह बिना उनके मांगे ही उन तक मदद पहुंच जाएगी' सोच कर पंडिताइन मन ही मन अपने बेटी की मदद करने के लिए खुश होने लगी।

पंडित के दामाद और बेटी उन दोनों का आशीर्वाद लेकर अपने घर के तरफ रवाना हो गए। उन दिनों गाड़ियां तो होती नहीं थी घोड़ा गाड़ी या बेल गाड़ियां चलती थी। पैसे ना होते तो और चीजों की लेनदेन से भी व्यवहार होता था। बेटी और दामाद का गांव पंडित के घर से कोसों दूर था, फिर भी पैसों की कमी के चल ते वह चलकर अपने गांव की तरफ निकल पड़े। थोड़े दूर ही चले थे कि पंडित की बेटी के पैर में मोच आ गई और अब उसको चलना भी मुश्किल हो गया। पंडित के दामाद ने जब देखा कि उसकी बीवी अब बिल्कुल चल ने में सक्षम नहीं है तो उसने एक टांगा अपने घर तक किराए पर ले लिया। दोनों पति पत्नी टांगे में बैठकर घर तक पहुंच गए लेकिन टांगे वाले को देने के लिए उनके पास पैसे थे नहीं इसलिए पंडिताईनने जो बूंदी के लड्डू उन्हे दिए थे वही किराया के तौर पर उस टांगे वाले को दे दिए।

टांगेवाला बूंदी के लड्डू को लेकर वहां से चला गया। टांगेवाला अपने घर की तरफ जा रहा था तब उसे एक हलवाई की दुकान दिखी। उसने सोचा कि थोड़े से बूंदी के लड्डूओ से मेरे घर के लोगों का पेट थोड़ी भरनेवाला है! इससे अच्छा मैं इन बूंदी के लड्डूओ को बेचकर उनसे कुछ चावल खरीद लेता हूं। टांगे वाले ने बूंदी के लड्डू हलवाई को बेच दिए।जिस गांव में वह हलवाई रहता था उसी गांव में एक आदमी ने अपने घर पर पूजा रखी थी और उसी पंडित को उस पूजा के लिए बुलवाया था। पूजा में लगने वाले प्रसाद के लिए उस आदमी ने उसी हलवाई से बूंदी के लड्डू लिए जहां पर उस टांगे वाल ने बेचे थे। हलवाई ने भी उस आदमी को टांगेवाले से खरीदे हुए लड्डू ही पहले दिए ताकि वह खराब ना हो जाए क्योंकि वह नहीं जानता था यह लड्डू कब बने हैं।

पूजा खत्म होने पर दक्षिणा और बूंदी के लड्डू लेकर जब पंडित अपने घर आया और खाना खाने बैठा तो प्रसाद में लाए बूंदी के लड्डू खाते वक्त लड्डू से सोने का सिक्का निकला! इस घटना को देखकर पंडिताइन की आंखों से आंसू बहने लगे। पंडित ने जब पंडिताइन से उसके रोने का कारण पूछा तो पंडिताइन ने पंडित को सब कुछ बताया और पंडित से उनकी बातों पर भरोसा ना करने के लिए माफी मांगी।

पंडित ने पंडिताइन के आंसू पोछे और कहा कि तुम्हारी तरह मैं भी हमारी बेटी को बहुत प्रेम करता हूं। लेकिन अगर हम उसकी अब मदद करते हैं तो दामाद हमसे हमेशा ऐसे ही मदद की अपेक्षा रखेगा और अपनी बुरी आदतों को कभी नहीं छोड़ेगा। पंडिताइन भी अब पंडित की बातों से सहमत हो गई। दो-तीन महीने बीत गए। पंडित के दामाद और बेटी फिर से एक बार उसके घर आए और इस बार उनकी परिस्थिति पहले से बेहतर थी क्योंकि पिछली बार खाली हाथ जाने के बाद दामाद ने नया काम शुरू किया था और अपनी सारी बुरी आदतें भी छोड़ दी थी।

-Pravin Kate

पूजा खत्म होने पर दक्षिणा और बूंदी के लड्डू लेकर जब पंडित अपने घर आया और खाना खाने बैठा तो प्रसाद में लाए बूंदी के लड्डू खाते वक्त लड्डू से सोने का सिक्का निकला! इस घटना को देखकर पंडिताइन की आंखों से आंसू बहने लगे। पंडित ने जब पंडिताइन से उसके रोने का कारण पूछा तो पंडिताइन ने पंडित को सब कुछ बताया और पंडित से उनकी बातों पर भरोसा ना करने के लिए माफी मांगी। पंडित ने पंडिताइन के आंसू पोछे और कहा कि तुम्हारी तरह मैं भी हमारी बेटी को बहुत प्रेम करता हूं। लेकिन अगर हम उसकी अब मदद करते हैं तो दामाद हमसे हमेशा ऐसे ही मदद की अपेक्षा रखेगा और अपनी बुरी आदतों को कभी नहीं छोड़ेगा। पंडिताइन भी अब पंडित की बातों से सहमत हो गई।

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER
MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE
₹ 100
MENS 100% CORDUROY
16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE
₹ 100
MENS 100% COTTON
SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE
₹ 100
MENS FORMAL
TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

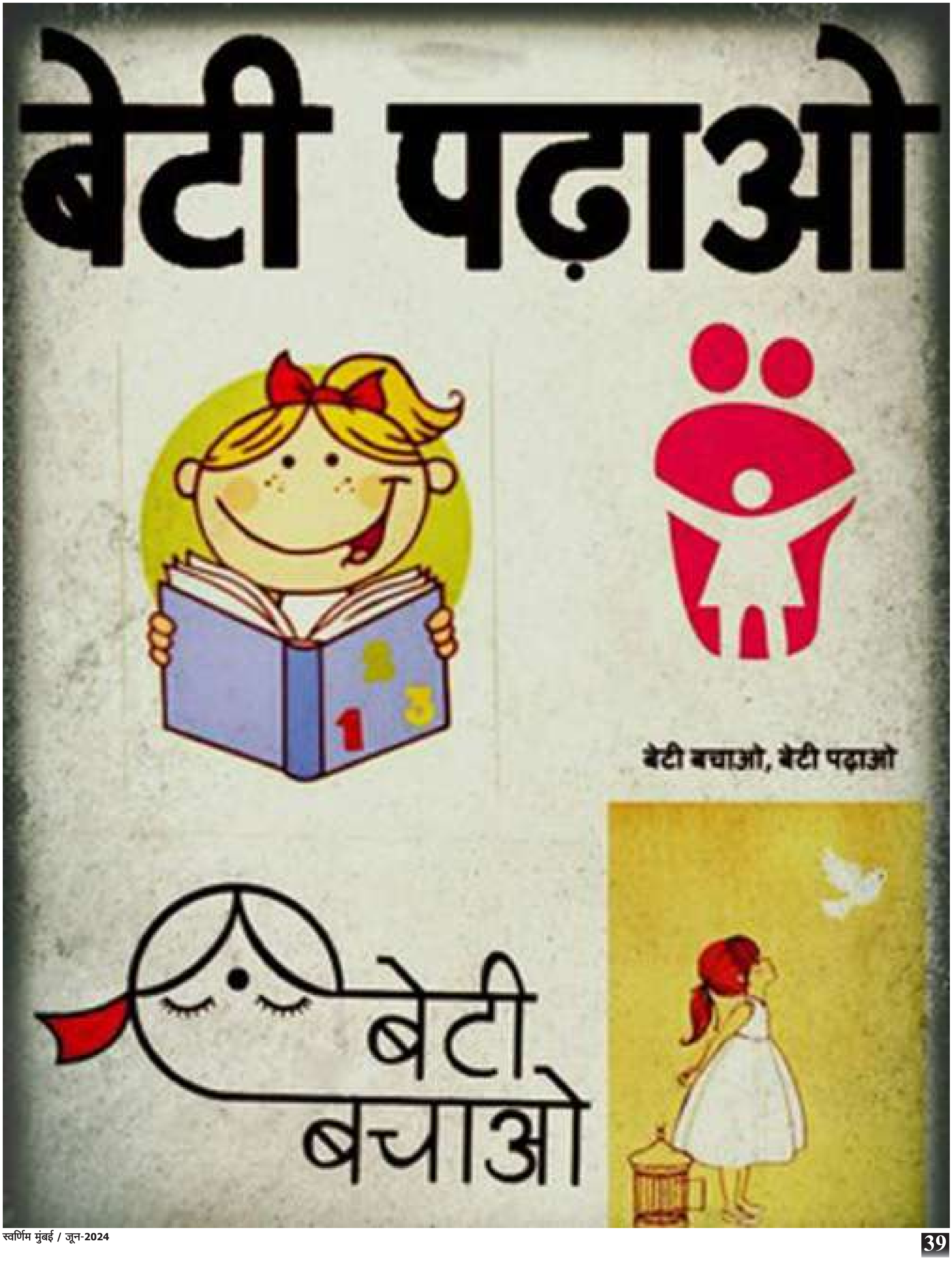
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ

नदी के लुटेरे...

हम तो अपने धान खुद ही लगाएंगे, कौन दे उनकी मजदूरी, हमारे पास तो दो ही खेत हैं। मैहरों व ठाकुरों के पास बथेरे खेत हैं, वही लगाएंगे इन्हें अपने खेतों में'' जगतू की पत्नी खिल्लो बोली, ''मैहरों ने ही बुलाएं होंगे ये लोग, पूरे गांव के आधे खेत तो उनके पास ही हैं। जगतू बैलों को रोककर बीड़ी सुलगाने लगा। ''तुम्हें पता है ये लोग बड़े पागल आदमी हैं असली मकसद तो इनका नदी की बाढ़ में बहते सामान लूटने का है, धान तो ये गांव की ज़मीन में अपनी जगह बनाने के लिए लगाते हैं नदी से मोटे पत्थर भी इक्ट्ठा करते हैं, कुल्हें भी बना देते हैं नदी के पानी को खेतों तक भी मोड़ लाते हैं। वैसे हैं बड़े काम के आदमी। गांव में तो अब लोगों को इनकी आदत पड़ गई है।'' पहले चार लोग आए। फिर शाम तक और चार लोग आ गए। अपने काम से थोड़ी फुर्सत के वक्त गांव इक्का दुक्का मर्द उनकी ओर हो लिए।

वे आ गए, वे फिर से आ गए हैं। धान के खेतों को तैयार करते उनको आते सबने देखा। उनको धान के खेतों के उस पार खाली रेतीली ज़मीन में फैले सरपड़ों के बीच कंधों पर बड़े बोरू उठाए सबने देखा। उन्होंने नदी के एक कोने के सरपड़ के बीच खाली ज़मीनों में अपना सामान रखा और तंबू लगाने शुरू कर दिए। उनके आते ही खेतों को धान रोपने से पहले तैयार करते गांव के मर्दों व औरतों में उनके बारे में चर्चा शुरू हो गई।

''लो जी, इस बार भी धान लगाने के काम में उनकी मदद मिल जाएगी।'' बैल हांकता जगतू अपनी पत्नी से बोला। ''हां जी, पर हम तो अपने धान खुद ही लगाएंगे, कौन दे उनकी मजदूरी, हमारे पास तो दो ही खेत हैं। मैहरों व ठाकुरों के पास बथेरे खेत हैं, वही लगाएंगे इन्हें अपने खेतों में'' जगतू की पत्नी खिल्लो बोली, ''मैहरों ने ही बुलाएं होंगे ये लोग, पूरे गांव के आधे खेत तो उनके पास ही हैं। जगतू बैलों को रोककर बीड़ी सुलगाने लगा। ''तुम्हें पता है ये लोग बड़े पागल आदमी हैं असली मकसद तो इनका नदी की बाढ़ में बहते सामान लूटने का है, धान तो ये गांव की ज़मीन में अपनी जगह बनाने के लिए लगाते हैं नदी से मोटे पत्थर भी इक्ट्ठा करते हैं, कुल्हें भी बना देते हैं नदी के पानी को खेतों तक भी मोड़ लाते हैं। वैसे हैं बड़े काम के आदमी। गांव में तो अब लोगों को इनकी आदत पड़ गई है।'' पहले चार लोग आए। फिर शाम तक और चार लोग आ गए। अपने काम से थोड़ी फुर्सत के वक्त गांव इक्का दुक्का मर्द उनकी ओर हो लिए। गांव के नानकू ने जिज्ञासा वश उनके पास पहुंचते ही बोला, ''आ गए भई ! अच्छा हुआ, कहां से आए हो? तुम्हारे बारे में गांव के लोग बात करते हैं मैं तो अमृतसर में हलवाई हूं, इस बार बरसात तक लंबी छुट्टी पर आया हूं, किस ईलाके के हो, कौन सी जात है तुम्हारी। और क्या - क्या कीता है तंबू गाड़ते सबसे उम्रदराज अधेड़ से व्यक्ति ने विस्मय सी आंखों से नानकू की ओर देखा और तंबू गाड़ते ही बोला,''जी, दूर धार के उस पार के कोई पचास कोह में बसे गांव के झीर हैं हम, बरसात के मौसम में हमारे यहां कोई काम नहीं होता। न किसी के पास अच्छी खासी ज़मीन है और न करने के कुछ और, बस काम की तलाश में निकल आते हैं यहां। जहां से ये नदी अपना बहाव बढ़ाना शुरू करती है, वहीं है हमारा गांव। मैं ध्यानू हूं, ये मनोहर, श्यामू, शूंका, बलैतू और ये जो लकड़ियां फाड़ रहा है न, ये हममें सबसे छोटी उम्र का हीरू है। बड़ा बहादुर है यह लड़का हीरू। पिछले दो सालों से

आ रहा हैं अभी सीख रहा हैं हुनर पर इसके इरादों में अलग ही पंख हैं। हीरू कुल्हाड़ी से नदी के इधर-उधर से किए सूखे गट्ठों को फाड़ता रहा।

नानकू बोला,'' वैसे मैंने सुना है कि नदी में वहां सामान भी ईक्ट्ठा करते हो, चलो अच्छी बात है इस बार बरसात तो खूब होगी पर तुम लोगों को कुछ नदी में से मिलेगा कि नहीं यह तो भगवान ही जाने। पर मैंने सुना है कि तुम उफनती लहरों में से सब कुछ खींच लाते हो। क्या ये सच है।'' ध्यानू बोला,'' नदी की छोटी मोटी धाराओं में सीखते हैं मस्ती में चोबियां (डुबकियां) लगाना और फिर उस ख्वाजा की मर्जी से यहां तक पहुंच जाते हैं उफनती लहरों में अपनी जान जोखिम में डालने। बस मजबूरी ने ये काम भी सीखा दिया है। हमारे बुर्जुगों ने भी किया है यही सब। जनाब! ये तो ख्वाजा पीर की मर्जी है कि वह हमारी झोली में कुछ सामान डालता है न भी मिलेगा तो भी उसकी मर्जी है। बरसात के आखिरी दिनों तक हम यहां रहेंगे ही। धान लगाएंगे, खेत तैयार कर दिए है

सबने बांध बनाएंगे और नदी के बचे खुचे पानी को खेतों तक मोड़ लाएंगे। वर्शों से हमारे दादा पड़दादाओं के समय से यहां आते रहे हैं हम भी आ रहे हैं जब तक यह कीता चलेगा हमसे बस काम करेंगे, बाकी ख्वाजा की मर्जी। " हां! उसकी मर्जी! ठीक है भाईयों फिर मिलेगें। तुम्हारा अनोखा खेल इस बार मैं जरूर देखूंगा। कोई चीज की जरूरत हो तो बताना। वैसे मैं उस छप्पर में रहूंगा। बुर्जुगों के टाइम का बना है। मेरे पिता का नाम जानकू है।" "हां! हां! महाराज बड़े नेक इंसान है आपके पिता उनके खेतों में धान लगाते हैं हम और खाने पीने का सामान दिल खोल कर देते हैं। अधिया हैं वे इस गांव के। आधी ज़मीन है पूरे गांव की हमारे पास। भला हो उनका" ध्यानू बोला। नानकू बोला, "शुक्र है तुम आ जाते हो। वर्ना पूरे गांव की औरतों व मर्दों से धान रूपाने के लिए तरले करने पड़ते हमें। अच्छा भाईयो"

कुछ ही दिनों में नदी में पत्थरों, आस पास की झाड़ियों व सबाल की मदद से बांध बनता। पानी भरने लगता खेतों में। मयान होता। मैहर के खेतों में उन प्रवासियों की टोली घुस जाती धान रोपने। पर इस सबके बावजूद वे अपने मनों में कई तरह के सपने भी रोपते रहते। जब धान रोपने का काम पूरे जोरों पर होता तो गांव की लड़कियां अपने ससुराल से कुछ दिनों की छुट्टी लेकर अपने माइके पहुंचकर धान लगाने में मदद करती। कोई घर खाली न बचता। साथ में ये अद्भुत लोग भी सिर्फ उन्हीं के खेतों में रोपते जो उन्हें उनकी मजदूरी दे सकें।

जब तपते जयेश्ठ की धूप उनके जिस्मों के अंदर छुपी महीन जीवनदायनी खून के साथ घुल मिली पानी की बूंदों को सोखनी शुरू कर देती, तो वे भी बड़े खुश होते, इसलिए नहीं कि शरीर का भार खाली हो रहा है बल्कि इसलिए कि इस बार का सावन का अंधा घोड़ा उनके लिए कई नेमते लाएगा। दूसरी ओर गांव के किसान इसी जयेश्ठ की गर्मी में अपने शरीर से सारी उर्जा को पसीने की बूंदों के साथ निचोड़ रहे होते। दिन की मेहनत के बाद हर रात को नदी की सारी मछलियों को वो लियाड़े से मारने के लिए निकलते और जब पत्थरों के बीच से गोदल 'लम्बी पूंछ वाली मछलियां' पानी की कमी व आग की तेज लौ से चुंधया चुकी उनकी कोमल आंखों के कारण बाहर आती, तो वे लोहे के सख्त दराटों के प्रहार से उनकी आत्माओं को उनकी मामूली वसा से परिपूर्ण काया से अलग कर देते। फिर वे लम्बी पूंछ वाली मछलियां उन नासमझ मछुआरों या फिर शौकिया शिकारियों के लिए उर्जा दायक भोजन के रूप में परिवर्तित हो जातीं।

ज्येश्ठ की समाप्ति तक जब नदी हर ओर से सूखने लग जाती तो कुछ परेशान से बगुले भी वहां से पलायन कर जाते। सिर्फ नदी में जलीय जीव बचते जो अपने वसापूर्ण भोजन को एक अतिरिक्त व्यंजन के रूप में किसी के परोसे जाने का दुस्वप्न पाल बैठे हैं। जब आषाढ़ अपनी तपस से मेघ रूपी रथ के पहियों को दौड़ाने के लिए सुनियोजित कर रहा होता तो वे अपना काला मुंह करके 'काली इंटे काला मुंह' का खेल खेलने का प्रंपच भी करते ताकि मेघ उनकी प्रार्थना के झांसे में आकर उनके हिस्से के आर-पार इतना मेघ बरसाए कि उस मेघ रूपी दानव के पीछे भागते लश्कर के साथ सब जीवन रूपी काया के मददगार पदार्थ बहते आएं और फिर वे अपनी हिम्मत, मस्ती, स्वार्थ व कलापूर्ण मेहनत के दम पर बीस-तीस उंचे उठे बाढ़ के पानी से वो सब सामान इक्ट्ठा कर सकें या लूट सकें जिससे उनके लिए कुछ महीनों का सामान इक्ट्ठा हो सके और जो उनकी पहचान, उनके अस्तित्व को बचा कर रख सके, जो वो करते आए हैं। वे न तो लुटेरे हैं न शिकारी, वे सिर्फ कलापूर्ण हुनर के दम पर नदी में बाढ़ के साथ बहने वाले सामान को सही दिशा की ओर मोड़ने वाले हिम्मती मर्द हैं जिसकी तुच्छ यांत्रिक जीवन की आदतों ने उन्हें रहस्यमयी इन्सान बनाने का जोखिम ले लिया है। यही यांत्रिक संसार उन्हें सब मर्दों से विभिन्न दर्जा दे रहा है और उनके अस्तित्व के कणों में नए कण जोड़ रहा है ताकि वे मानस पटल के सजाए दृश्यों में अपना नाम जोड़ सकें। दूर गांव से आए ये वे रहस्यमयी पुरूष समय के अंतराल के बाद अपनी उपस्थिती से गांव के मानसिक ताने बाने में दखल देते आ रहे हैं वे जिस विशेष स्थान से आते हैं पर न ही उनकी संख्या में कमी आती है। वे स्वर्णिम दिनों की रचना करके ही अपने ठिकानों को लौटते हैं वे अपने उर्जा से भरे शरीरों को गांव के किसानों के उन खेतों में धान लगाने के लिए भी झौंक देते, ताकि किसी को उनका आना खटके न। जब नदी के किनारे खाली पड़ी जमीन में उनके तंबू लग जाते तो गांव के लड़के, बुर्जुग और अन्य तंबूओं के पास कभी-कभार मंडराना शुरू कर देते। नदी की मछलियां अब भागने की फिराक में गहरी पानी की कंधराओं में छुपने लग पड़ती पर उन्हें ये पता नहीं कि ये हिम्मती पगलाए आदमी उन्हें ज़मीन व पानी की सात तहों से भी बाहर निकाल लेंगे।

औरतें उनके तबूंओं की ओर नहीं जाती पर उनकी विशेष कर्मों की चर्चा एक दूसरे से जरूर करतीं वे सभी अपनी कल्पनाओं की एक अनोखी दुनिया जरूर सजाती जो उन्होंने उन प्रतापी मर्दों के बारे में अपने शांत व सूखे पड़े विचारहीन मस्तिष्कों में की होती। उनकी कल्पनाओं में विविधता पूर्ण लहरें होती। कुछ मन ही मन उन मर्दों की तुलना अपने मेहनती मर्दों से करतीं जो वर्षों से इन खेतों में जुते हुए होने के बाद कभी उन्हें गांव से बाहर का क्षितिज आज तक दिखा न पाए। कुछ उनके बारे में सोचती कि जो प्रतापी मर्द नदी के तीव्र वेग से भी जीवन उपयोगी चीज़े निकाल लाते हैं वे कितने मज़ेदार व हसीन मर्द होंगे। वे अपनी स्वार्थी कल्पनाओं को भी अपने मन में सजातीं।

औरतों की नैपथ्य मानसिकता में अप्रत्याशित परिवर्तन ये मायवी लुटेरे चुपचाप किसी को बिना बताए कर चुके होते। उनका स्मरण सघन होकर उन लुटेरे मर्दों के नित्य कर्मों पर केंद्र निर्मित करता जाता। वे किसी भी बहाने उन मर्दों की चर्चा की खुमारी की अवस्था धारण कर लेतीं उन्हें उन दिनों सितारों में अधिक प्रकाश नज़र आता, उन्हें नीले आकाश में अधिक नील नज़र आता। उन्हें रातें अधिक स्वपनिल महसूस होती, उन्हें सूखती नदी एक मायावी जादूगरनी की तरह नज़र आती, उन्हें नीरस जिंदगी में ख्वाइशों की बेलों के फैलने और खिलते फूलों की अत्यधिक गंध महसूस होती। उनमें दिव्यता की मादकता को पीने की लालसा जागने लगती। वे समतल खेतों में शिखरों के उगने का आभास करतीं। उन्हें अपने कच्चे घरों के कमरों में एक रहस्यमय प्रकाश दौड़ता नज़र आता। उन्हें गांव की भूमि का हर हिस्सा रमणीय नजर आता। उन्हें ज्येष्ठ के उग्र सूर्य की प्राणदायक किरणें भी पृथ्वी के गुप्त आलिंगन में मदहोश नज़र आती। वे उनकी सुघड़ शक्तिशाली आकृतियों और प्रचंड इच्छा शक्ति की गुप्त भक्ति करने लगती। गांव के आभाविहीन सिर्फ देहाती किसान मर्दों के पास भी औरतों से विभिन्न विचित्र कल्पनाएं भी होती। वे अपनी मर्दानगी की उन बहादुर व रहस्यमय मर्दों के साथ तुलना में लगे रहते। कोई सोचता,"मैंने इसी नदी से पांच-पांच मण के पत्थर अपने मजबूत कधों पर उठाए हैं पर क्या वे ऐसा कर सकते हैं?" कोई सोचता कि उसने जेठ की पूरी रातें इसी नदी के किनारे शमशान के करीब बिताई हैं क्या वे ऐसा कर सकते? कुछ अपनी मर्दानगी को अपनी सहवास की शक्ति के प्रदर्शन के साथ उनके साथ कल्पना करते।

इन सब कल्पनाओं व मन की तसल्ली की बातों को बावजूद गांव के मर्द फिर भी पीछे छूट जाते। कुछ की विचित्र कल्पनाएं उन्हें शंका में डालती कि कहीं उनकी पत्नियां रात के स्वप्नों में उन गैर मर्दों के साथ लिप्त न हों। कईयों के साथ जब यह भ्रम उनके मन के रथ के साथ दौड़ने लगता तो वे मन ही मन उनसे नफरत करने लग पड़ते। लेकिन वे उन्हें अपने क्षेत्र से भगा नहीं सकते और फिर मज़बूरी की चादर ओढ़ कर अपने घरों के बरामदों में चुपचाप जेठ की ठंडी हवा

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

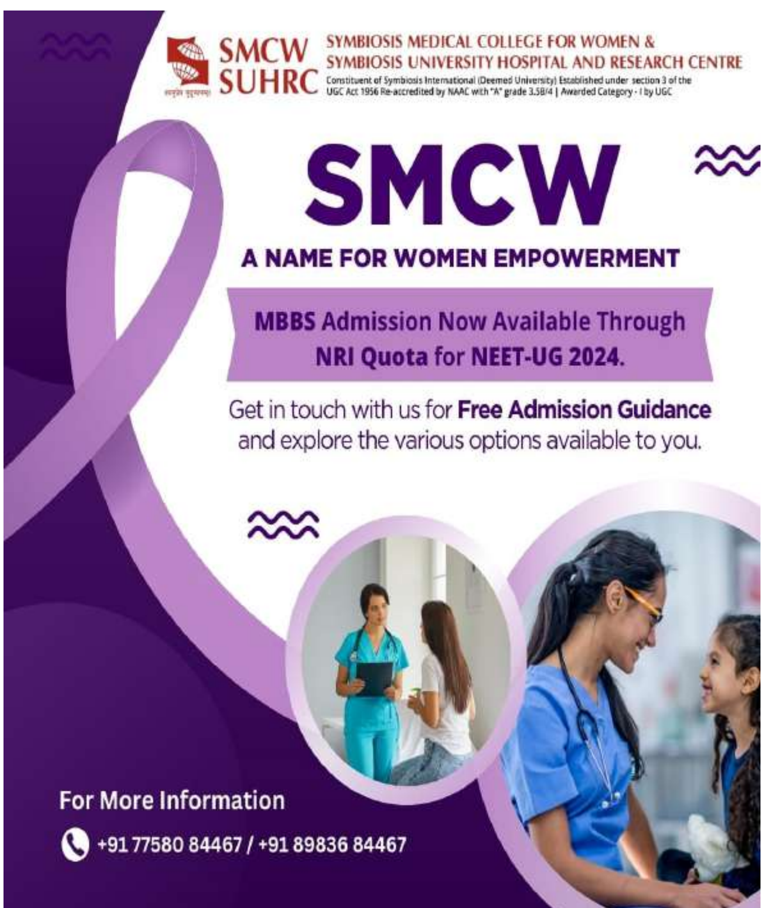

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

के साथ सोए रहते। कुछ अपनी मर्दानगी का प्रदर्शन तो चुपचाप बंद कमरे में कर आते पर उनकी शंकाएं उनका पीछा नहीं छोड़ती। वे अपनी पत्नियों के उन गैर मर्दों के साथ चर्चा से बचते, लेकिन कुछ इस चर्चा में जरूर फंसते जो सिर्फ उन्हें हताश व उनकी मूर्खता का प्रदर्शन ही करवातीं।

उधर तंबूओं में चर्चा चल रही है धयानू बोला,"मैं कहता हूं हीरू इस बार तो उन कत्थे को भट्टियों को उजड़ना ही होगा जो हम देख कर आए हैं। खैर जो भट्ठी वालों ने खैर के कई मोछे रख छोड़े हैं काफी हैं, जो पानी के रास्ते आ सकते हैं। जंगलात वालों ने कई शहतीर भी नदी के किनारे रख छोड़े हैं, कुछ छप्पर भी उड़ जाएंगे। मैं कल तड़के ऊपर कोई पांच कोह तक गया था वहां फकीरू राम का घराट भी इस बार बह जाएगा, मुझे पक्का यकीन है, नदी की धारा घराट के करीब आ चुकी है। नदी का कभी कोई भरोसा नहीं और बाढ़ तो महाराश्रसी होती है। सभी हंस दिए। "बस इस बार मेघ खूब बरसे, सभी यही प्रार्थना करो, बाकी ख्वाजा पीर पर भरोसा रखो, वो हमें खाली हाथ घर वापिस नहीं भेजेंगे। दूसरा इलाके में हम चर्चा में आते हैं सब हमारे गुण गाते हैं। दूर - दूर से बाढ़ के समय हमारे कारनामे देखने आते हैं। अब जिसका घर बाढ़ में बह जाए वो तो हम जैसों को गालियां देता होगा। सौ-सौ मण की, पर आखिर किसी का सामान बहेगा तो ही हमारा काम चलेगा न।

उधर गांव में कुछ मन ही मन उनकी शिकायत गांव के पंच से करने की आधार विहिन योजनाएं बनाते लेकिन गांव का पंच उन्हें किस आधार पर नदी से भगाएगा, इस बात पर उन्हें कोई तर्क नहीं सूझता। नदी सरकार की है वे अपनी हिम्मत से उस जोखिम पूर्ण काम को अंदाज देते हैं इसमें पंच कुछ नहीं कर सकता, इस बात पर उनके मन में उठे अर्थविहिन विचार नदी की अथाह गहराई में डूब जाते। कुछ अपने मन में उन बहादुर लुटेरों की तरह नदी की बाढ़ में से कीमती सामान निकाल लाने के स्वप्न सजाते। लेकिन नदी की लहरों का वेग और बाढ़ का प्रचण्ड रूप जब हकीकत के आइने में धुंधला सा भी उनको नज़र आता तो उनकी आंखें फिर से बंद हो जाती और खेतों और खेतों, अपने कमजोर बच्चों, अपनी थकी हारी रोज के काम निपटाती व सिर पर गोबर उठाए खेतों की ओर दौड़ती पत्नियों व घर में बुजुर्गों के खांसने की आवाज़ों के साथ ही निम्न स्तर के सपने लेने लग पड़ते। कुछ इन सब के बीच कुछ हठ से पूर्ण रोमांचक सपने लेने से भी बाज नहीं आते।

गांव के पंच पुन्नू राम के जग में सब इक्ट्ठे हुए तो गांव के संगतू ने बात छेड़ दी, "पंच साहब! उन तबुओं वालों का कुछ करो, वो हर साल आ जाते हैं, सब कुछ लूट ले जाते हैं। कौन रोकेगा उन्हें गांव की मां बहनें हैं गैर प्रदेशियों का क्या भरोसा।" पंच बोले, "भई वर्षों से आ रहे हैं हमारे बुजुर्गों के समय से आते हैं, धान लगाने में हमारी मदद भी करते हैं। कभी किसी मां बहन पर नज़र नहीं डालते। मैं अब उन्हें क्या बोल सकता हूं। अब वो नदी के किनारे ही रहते हैं गांव में घुसते भी नहीं, हमसे ज्यादा मेल भाव नहीं करते बरसात के बाद चले जाते हैं।" संगतू फिर बोला, "अगर कहीं कुछ गलत हुआ तो फिर जवाब आपको ही देना होगा मुझे तो उन लोगों की नीयत में खोट दिखता है।" इस बात पर मंगतू भी बोल पड़ा, "अरे किसी का छप्पर बहे, खैर बहे कत्थे वाले ठेकेदारों की भट्ठियों उजड़े, तो वे खुश होते हैं लूट मचाते हैं।" अब सातूं राम बोला, "अरे इसमें उनका क्या कसूर है नदी में जो बह गया वो नदी का हो गया, अगर कोई लूट सके तो लूट लो, गांव के लड़के भी तो बाढ़ में उतरते हैं कभी कभार, याद नहीं है सबको बलैतू का लड़का बह गया था कोई पांच वर्ष पहले बाढ़ में से जंगलात के शहतीरों के लट्ठे पकड़ते वक्त। जिस साल बड़ी भयंकर बाढ़ आई थी और हम सब भी तो बाढ़ में से कई कुछ पकड़ कर लाए थे। अरे भई हिम्मत का काम है। रही बात उनकी हरकतों की तो हमें तो उनकी कोई बात बुरी नहीं लगती। हिम्मती मर्द है, कभी कोई शिकायत भी नहीं आई न कभी किसी औरत व लड़की के साथ बुरी नज़र की बात आई है। चलो फिर भी हमें चौकन्ना रहना होगा। अपनी सरहदों में रहते हैं, नदी के रोड़ों में भटकते फिरते हैं, कभी कभार अनाज के लिए आते हैं गांव में।"पंच ने आखिरी बात कही, भई हमारे समाज, हमारी परम्पराओं से जुड़ गए हैं, वर्षों का सिलसिला है हमारे बुर्जुगों के समय से आते है, जब तक आ रहे हैं आते रहें। कभी दो चार बह गए तो फिर कभी न आएगा कोई।" सबने जोर से ठहाका लगाया।

धान लगने का काम खत्म होते ही जब मानसून की प्रथम छोटी किश्तों से नदी का प्रवाह बढ़ता तो नदी में कूदने, गहरी लहरों को पार करने का वे अभ्यास करते, वो चुपचाप ग्रनेड़, गहरी आल में फेंकते और डुबकियां मार मार कर हर मरी मछली को ढूंढ लाते। जब मछलियां उनकी झोली में भर जाती तो वे उन्हें भी आस - पास के गांवों के लोगों को बेच देते। बची हुई मछलियां शाम को अपने लिए पकाते ।

इसके बाद जब मेघ अपने अंदर पानी को इक्ट्ठा करके उनके आसमान में बरसाने अपनी अंतिम इच्छा का उद्घोष कर देते तो पूरा गांव उन लुटेरे मर्दों के प्रदर्शन को देखने की इच्छा को और अधिक अंकुरित करने के लिए अपने खाली समय की खाद डालना शुरू कर देते। प्रदर्शन का समय जब नजदीक आ रहा होता तो भी वे लुटेरे मजे से रात को नदी की मछलियों से कई खेल खेलते। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि लोग उनके बारे में किस विचार धारा को अपने घरों के बाहर रखी पालकियों में सजा रहे हैं। वे अल्हड़, हिम्मती मर्द अपने ही नशे में खोए, गांव वालों से उचित दूरी बना कर रखते ताकि गांव के स्त्री- पुरूष, बच्चे- बूढ़े उनकी कमजोरियों का ज़रा भी भान न पा सके और हमेशा उनके होते हुए या फिर चले जाने के बाद भी उनसे प्रभावित रहे और अपने नीरस व थके हारे जीवन के कुछ पलों की उनके लिए चर्चा में आहूति देते रहें। उनका दबदबा, उनका आभामंडिल व्यक्तित्व गांव की औरतों को सदा प्रभावित करता रहे वे अगर जब भी किसी गैर मर्द के बारे में सोचें तो उन हिम्मती मर्दों में से किसी एक को जरूर चुने।

सावन का अंधा घोड़ा उस नदी के ऊपर फैले आकाश में अपने ऊपर उठाया बादलों में जकड़ा अमोघ जल का भार इधर-उधर फेंकने लगा और नदी का शांत स्वभाव तीन दिन की मूसलाधार बारिश के बाद प्रचंड और बर्बर स्वभाव बढ़ने लगा। लुटेरों की बड़ी एवं तीक्ष्ण आंखों में चमक बढ़ गई। उनके तबूं बरसात के मौसम में बेसुध होने लगे पर अब तबुंओं की परवाह किसे थी। अंधे घोड़े ने एक दिन अपना सारा भार फेंक देने की जिद् कर ली और नदी के किसी दूसरे हिस्से के किसी आकाश में बादल फूट उठे। लुटेरों ने ईश्वर की ओर मन में दुबके धन्यवाद भेजे। उम्मीद से बड़ी लहरें बाढ़ रूपी दानव की रंगरलियों में अपना आपा खो बैठीं और अपने साथ कई पेड, शहतीर,खैर के मोछे और नदी के किनारे कई तरह के कीमती सामान को बहाती हुई लाने लगी। गांव के मर्द अपनी बरसातियों और कई तो अपने बोरी से लिपटे सिरों से नदी की प्रचंड लहरों में गोते लगाते लुटेरों को एकटक कौतूहल से देख रहे थे। कुछ बच्चे भी उनके शरीरों से चिपके थे।

सभी पहाड़ी के कच्चे रास्ते पर अपने - अपने हिस्से के दृश्य अपनी इंद्रियों को मुफ़्त में बांटने के लिए उतावले थे। "एक बड़ा शहतीर बहता हुआ आ रहा है।" नदी के एक हिस्से के एक मोड़ पर खड़े बाज की दृष्टि से लहरों पर नजरें टिकाए सबसे बड़ी उम्र के ध्यानू ने चिल्लाना शुरू कर दिया, "मोड़ खाती नदी शहतीर को किनारे से कुछ फासले पर बहाती हुई आगे निकल रही। कुद पड़ो! समय सही है।" चार तैराकों ने नदी की प्रचंड लहरों में छलांग लगा दी। उनमें से कुछ शहतीर से कई फुट दूर नदी में लुप्त होते दिखाई दिए और फिर गांव के लोगों की सांसे रूक गई। "वे बह गए, उनका काम खत्म हो गया , प्रतापी मर्द अब फिर से यहां नहीं आएंगे।" गांव का कोई बूढ़ा चिल्लाया,

"कोई उनकी मदद करो।" पलक झपकते ही उनमें से दो प्रतापी शहतीर को अपने अपने मजबूत कंधों में जकड़े नजर आए और डूबे हुए तैराक फिर अपने काले सिरों के साथ नज़र आए।

गांव के लोग चिल्ला उठे , "जय हो! जय हो! ऐसे बहादुर मर्दों की।" चारों ने शहतीर को जकड़ लिया और उस पर सवार होकर नदी के एक किनारे तक उसे खींच लाए। गांव के कुछ युवा उनकी ओर दौड़ने को हुए तो उन्हें किसी ने रोक दिया। वे बेचारे अपनी कुछ बहादुरी को अपने अंदर दुबकने को मजबूर कर बैठे। मोड़ पर खड़े बाज की आंखों वाले ध्यानू ने फिर आवाज दी, "शहतीरों का झुंड आ रहा है तैयार रहो।" इस बार पांच -छः लोगों ने लहरों में प्रवेश कर दिया, वे कंधों तक पानी में दौड़ते रहे, जैसे ही शहतीर उनके कुछ फासले से निकला वे उस पर बाज की तरह झपट्टा मारने को डूबकी लगा देते। गांव वालों की सांसें रूक जाती उनका मुंह खुला और आंखें फटी रह जाती। उनके इतनी बरसात में भी होंठ सूख रहे थे। अद्भुत साहस के आभामयी नजारों से उनकी इंद्रियों के सारे रोम खुल रहे थे। कईयों की स्वप्निल इच्छाएं उनके अंदर छिपे भीरूता के बादलों को दूर भगा रही थी। वे भी मन ही मन नदी के लहरों में गोते लगाने के दिव्य स्वप्न खुली आंखों से ल रहे थे। पर हिम्मत किसी से उधार में नहीं मिलती, ये बात शायद उन्हें पता चल चुकी है।

लहरों का प्रचंड वेग उन्हें अपने भीरू ख्यालों को पकने का स्वांग रचने को रोक रहा था। बाढ़ की लहरे निर्बाध गति से आगे बढ़ती जा रही थी और अपने साथ उजड़ी दुनिया के अवशेष उठा कर शान से अपनी प्रचंडता दिखा रही थी। उसे रोकने वाले नहीं बल्कि चाहिए, उसके साथ बहने वाले चाहिए। टकराने वाले नहीं बल्कि उसकी कल्पना से भौतिक ख्याल चुराने वाले चाहिए। बहुत सी चीजें दूर वेग में बहती जा रही थी जिन्हें लुटेरे अपनी बुद्धि व चातुर्य कला से छोड़ देना नहीं चाह रहे थे। एक नया वेग लहरों ने अपनाया, पानी की गंध में कीमती सामान की गंध को सबसे माहिर लुटेरे ने महसूस कर लिया। वह फिर चिल्लाया," अपनी बाजुओं में फिर से जोश भर लो, कत्थे की किसी भट्ठी की अंतिम यात्रा में शामिल होना है। तैयार रहो।" खैरों के मोछे भी आ रहे हैं बहते हुए कोई सप्ताह बाद फिर पूरा दिन व पूरी रात मूसलाधार बारिश ने रिकार्ड तोड़ दिया। इस बार बेचारे कई लोगों के नदी के किनारे के छप्पर बाढ़ में बह आए थे। एक तरफ मुसीबतों का पहाड़ गिरा था और दूसरी तरफ लूट का बाज़ार सजा था। जो एक बार बाढ़ में बह गया, भला उसको कौन रोक पाता। कई छप्पर ५० कोह पर उजड़, तो कई ३० कोह पर।

एक के बाद एक कत्थे की भट्ठी से उजड़े कत्था बनाने वाले खांचे नदी में तैरते नजर आए। लुटेरों ने फिर से अपने अनुभव व जुनून को नदी के प्रचंड वेग के अहसान पर छोड़ दिया। काले बादलों ने इस दृश्य को देखकर अपना मुंह खोल दिया और छम - छम बारिश बरसने ल गी। कभी प्रतापी शरीर लहरों में ओझल होते, तो कभी उनके काले सिर वाले शरीर फिर से नज़र आते तो देखने वाले दर्शकों की जान में जान आती। वे छम - छम बारिश में भी वे इन दृश्य को देखने का मौका खोना नहीं चाहते। नदी की खर - पतवार के गुच्छे, बड़े पेड़ों की जड़ों के अवशेष नदी के प्रवाह में ऐसे नाचते जैसे वे अपनी ही जिंदगी की अंतिम यात्रा में शामिल होकर जश्न मनाते हुए किसी स्वर्ग के सागर की ओर भागे जा रहे हों। लेकिन कहीं न कहीं शायद उनकी किस्मत को रोकने वाले लुटेरे जरूर उन पर स्वार्थी निगाहें टिका कर नदी के अगले किसी मोड़ पर बैठे होंगे।

शाम को लुटेरों ने अपने - अपने हिस्से का बंटवारा कर डाला, सुबह लूट के सामान को कम दाम में उड़ाने वाल खरीददारों ने सब साफ कर दिया। नदी की लहरें अब कुछ शांति का पाठ जपने की तैयारी कर रही थीं। सबसे बड़े व दल के मुखिया ने सबसे कम उम्र के लुटेरे के हाथ कुछ कम माल थमाया और उसे आज ही दल छोड़ने को कहा। सबसे उम्रदराज लुटेरे ने उसके हिस्से में भी कुछ कटौती कर दी। छोटे लुटेरे के मन ने इस बंटवारे को नामंजूर कर दिया। लुटेरों में फूट की झाड़ियां अकुंरित हो गई जबकि नदी के किनारे के सारी खर - पतवार नदी की बाढ़ के पहले वेग में ही किसी दूरस्थ इलाके में अपने लिए छांव तलाशने निकल गई थी। सब लुटेरों के काले सिरों के अंदर छिपे चतुर मस्तिष्कों में अलग-अल ग विचार कौंध रहे थे। पर वे दल के मुखिया से सहमत होने के लिए विवश थे। सबसे कम उम्र के जाबांज तैराक ने अपना तंबू उखाड़ लिया। वह जाते-जाते बोला ,"अब मैं कभी हिस्सा न मागूंगा , चाहे तो अकेले ही नदी में कूदना पड़े।" उम्रदराज जाबांज ने उसकी जिद् को पिघल ाना चाहा, उसे अधिक मेहनताना भी देना चाहा पर वह सिर्फ एक नियम के कारण नहीं माना।

उम्रदराज जांबाज ध्यानू ने अपने दल की ऐकता की दुहाई दी और अपने नियमों के जंजाल को भी समझाना चाहा। आखिर एक नियम ही उनके इस बिखराव का कारण था। नियम सबसे छोटे जांबाज हीरू ने तोड़ा था। जवानी के नशे में उसने गांव की एक युवती से गठजोड़ रात के अंधेरे में जोड़ा था और ये बात उम्रदराज जांबाज से नहीं छिपी थी। उसने कुछ दिन पहले अकेले में चेतावनी भी दी थी, इस बार सब के सामने ध्यानू ने फिर वही बात दोहराई "हमारा दल गांव की मेहरबानी पर टिका है और हम भविष्य के लिए अपने हिस्से की नदी का क्षेत्र अपने हौसले से इन गांव वालों से उधार में मांगते आए हैं। हमें गांव की हर औरत को आदर भाव से देखना है हमें गांव के विश्वास को विश्वासघात में नहीं बदलना है हम सिर्फ यहां अपनी साहसपूर्ण अद्भुत कला से उन्हें अचंभित करते आए हैं और भविष्य में उनकी बस्तियों में अपनी छवि को आकाश तक ऊंचा बनाना चाहते हैं वे हमें हमेशा पूजनीय समझे, हमारी जांबाजी की तारीफ करे ना कि वे हमें विश्वासघाती समझें। तुम्हें यह प्रेम प्रपंच छोड़ना होगा, वर्ना तुम्हें दल छोड़कर अभी यहां से जाना होगा। हम यहां सिर्फ नदी का बहता सामान लूटने आते हैं दिलों में बहते प्रेम की लूट करने के लिए नहीं। हमें नदी के पत्थरों की तरह कठोर बनना होगा। हमारे दल का एक ही नियम साफ है कि गांव के किसी इंसान से न कोई रिश्ता होगा, चाहे वे तुम्हारी बहादुरी के आगे नतमस्तक होकर तुमसे प्रभावित होकर तुम्हारे लिए अपने दिलों में प्रेम वफा के सपने सजाए।" पूरा दल एक दूसरे को ओर अचंभित व आतंकित देख रहा था।

राह से भटके दिल के अंदर उठती लहरों में डूबे प्रतापी लुटेरे ने अपना तर्क दिया, "मैं उससे वादा कर चुका हूं, वे मेरे अदभुत अचंभित हैरत अंग्रेज कारनामों की बातें सुनकर व प्रभावित होकर मेरी ओर खिंची आई है, हम दोनों ने साथ रहने की कसमें खा ली हैं मैं बड़ी - बड़ी उफनती प्रचंड लहरों से आज तक नहीं हारा, अब एक युवती की नजरों के सामने खुद को मृत नहीं घोषित कर सकता। उसका अस्तित्व अवर्णनीय रूप से मेरे शरीर के अंदर अथाह गहराई में डूब चुका है और मैं उसकी रमणीय व कोमल शरीर का गुलाम बन चुका हूं। प्यार का उपजाऊपन मैं अपने पत्थर जैसे सख्त शरीर में महसूस करने लगा हूं। मैं यू ही उसे छोड़ कर नहीं भाग सकता। मुझे वह अंधेरे की काली उलझनों में मेरी पीछे भागती दिखाई देती है। उसने मुझ जैसे अनुरक्त युवा में विरक्ति पैदा कर दी है। वह मेरे प्रति अपनी प्रशंसनीय भक्ति के कारण मेरे दिल की डोर से बंधना चाहती है।"

"नहीं ! नहीं ! हम किसी भी शर्त पर गांव के लोगों के आगे अपनी छवि को बिगाड़ नहीं सकते। तुम अपनी उत्कंठा और युवती की गुप्त प्रेम मयी आराधना को छोड़ो," दल के मुखिया ने अपने अंदर अपने बनाए नियम को जकड़ कर पकड़ते कहा , "अगर यह बंधन फलता फूलता है तो भविष्य के लिए हमारा अस्तित्व मिट जाएगा, पूरा गांव जो हमारी गुप्त आराधना में मग्न रहता है, वह हमें महत्वाकांक्षी, स्वार्थी व चरित्रहीन समझेगा , हम वर्षों से अपनी छवि को बचाते आए है सिर्फ तुम्हारे खातिर हम अपने दल की छवि पर आंच नहीं आने दे सकते।" लुटेरों के मुखिया ने आखिरी फरमान सुना दिया। सबसे कम उम्र के जांबाज ने अपना तंबू का सामान पीठ पर लादा और नदी के बहाव की उल्टी दिशा की ओर निकल गया।

ऊपर काले बादलों ने फिर से दस्तक देना शुरू कर दी

थी। पूरा दल पानी की बहशी बूंदों के साथ दुख और अशांति से भर गया। सभी मन ही मन पूछता उठे कि आखिर उन्होंने अपना एक नया व सबसे कम उम्र का जांबाज साथी बीच मंझदार में खो दिया है। उन में कुछ ने जब अपनी चेतना में कई तरह दृश्य उभरते देखे तो वे अपने आप को रोक नहीं पाए। आखिर उसके गुनाह की इतनी बड़ी सजा क्यों मिल रही है, क्या उसे पत्थर जैसी जिंदगी में फूल खिलाने का हम नहीं है? क्या लुटेरों के भी कोई नियम होते है? पर यह विचार उनके मन की तहों में ही उभरते रहे, उन्हें दल के मुखिया के कानों तक पहुंचाने की हिम्मत किसी में नहीं थी। बरसात में भीगता छोटा पुरुषार्थी योद्धा अपने प्यार की उत्कंठा में दल से निकाल दिया गया था। अपने प्यार को पाने की मूक लालसा के अकस्मात ढेर बन जाने से उसकी आंखों की रोशनी धुंधली और गीली हो रही थी। ऊपर काले आकाश ने फिर एक बार घमण्डी रोशनी को बिजली के रूप में परिवर्तित कर नदी के ऊपर फेंका। इस तेज आवाज से उसका मन दो फाड़ हो गया। एक हिस्से ने कहा- ''रात के अंधेरों में घिरा गांव बरसात के थपेड़ों से अधमरा सा हो गया है , नवयुवती को अपने संग उड़ाकर वह नदी की उफनती लहरों से पार ले जाएगा।'' दो फाड़ हुए दूसरे मन ने कहा, ''लुटेरों का स्वाभिमान उसकी इस हरकत के बाद सदा के लिए प्रचंड नदी के वेग में बह जाएगा और उसे कई लुटेरों का दल कभी नहीं पकड़ पाएगा।'' विचित्र कल्पनाओं का जैसा पूरा ब्रह्मांड उसके मस्तिष्क में संतुलन बनाने का नया प्रयोग कर रहा था। अशांत आंखें चहुं दिशाओं को छोड़कार एक रास्ते की तलाश में लगी थी। मन सिसक - सिसक कर रो रहा था।

वह नदी के किनारे -किनारे असंख्य झाड़ झगाड़ों को लांघता बहुत दूर निकला जा रहा था। पर उसका अतीत साया बनके उसके पीछे- पीछे दौड़ रहा था। उसके शरीर से सारा प्रताप बारिश की बूंदों में घुलकर निचुड़ चुका था, वह असंख्य ख्यालों के घेरे में फंस चुका था। उसका अस्तित्व नदी की लहरों में बहता जा रहा था । उसने ख्वाजा पीर से मन ही मन प्रार्थना की - ''हे पीर, दिव्य देवलोक के वासी, तुम्हारा दिव्य घोड़ों का रथ इन्हीं प्रचंड लहरों पर सवार होकर निकलता है, तुम्हारी दिव्यता के गुण अभी भी इन वेगवान लहरों में समाया है , मेरे लिए कोई रास्ता दिखाओ, मैं तुम्हारी नेमतों से अपने अस्तित्व की नींव रखकर आगे बढ़ा हूं , मुझे अपनी प्रकाशमयी किरणों से मेरे मन में खुंबों की तरह उगती गहरी कंघराओं के सयाह अंधेरों को मेरे मन से भगाओ, मैं धैर्य का पुजारी रहा हूं पर मैं आज भीरूता के स्पप्नों में घिरा हूं , मुझ पर अपनी दया बख्शो। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने भी अपनी कृपा के हाथ मेरे सिर पर से उठा लिए हैं मुझ पर कृपा करो। मैं जिंदगी की एक विशाल विपत्ति में घिरा हूं। मेरा मन मुझे लहरों में आंखें मूंद कर समा जाने को कह रहा है। मेरा सब कुछ खो चुका है। गोपनीय दुःख मेरे मन में कलुषित नृत्य कर रहे हैं। मैं विश्वासघात के दंश को महसूस कर रहा हूं। मैंने अपने दल और उस नवयुवती के ख्वाबों से भी विश्वासघात किया है। मैं भयावह व प्रचंड लहरों से लड़ सकता हूं पर अपने मन में संवेदनामयी छोटी ल हरों के आगे भीरूता भरे इन्सान के समान खड़ा महसूस कर रहा हूं।''

ख्वाजा पीर की नेपतों की झोली अभी खाली नहीं हुई थी। नदी का प्रवाह बढ़ता जा रहा था। मटमैले पानी के बीच लहरों से एक रोशनी उभरी, कोई बड़ा सा संदूक नदी के खरपतवारों में जकड़ा लहरों के बीच बहता हुआ आया। चूर -चूर ह्रदय वाले लंबे चौड़े सबसे छोटे लुटेरे की आंखों में रोशनी की एक बेतरतीब पुंज प्रकट हुआ। रात में नहाती नदी के बीच और इस छोटे लुटेरे के मन के बीच एक गुप्त मंत्रणा हुई। आदमी जिस कार्य में पारंगत हो उसे न करने के लिए कभी नहीं कहता।

छोटे लुटेरे ने जैसे अपने मन के दुखों के बड़े झोले को वहीं फेंका जैसे नदी में उसकी प्रेमिका उसे पुकार रही हो। उसने प्रचंड लहरों में छलांग लगा दी । अंधेरे ने उसके साथ धोखा कर दिया वह जितना हाथ पैर मारे, वही संदूक उतना ही आगे बढ़ता जाए। अकेला लुटेरा कभी लुप्त हो जाए तो कभी नदी उसे उछाल कर बाहर फेंक दे। उसे सर्वाधिक इस मुश्किल क्षणों के वेग में भी अपने लक्ष्य उस बेजान संदूक को नहीं छोड़ा। जिंदगी भर चुनौतियों से खेलने वाला लुटेरा रात के भंवर में नदी के भंवर को नहीं जान पाया और न ही उसे कोई दिशा निर्देश देना वाला था। संदूक और उसका लुटेरा बीच भंवर घूमते जा रहे थे। वह भंवर वैसा ही था जिससे यह लुटेरा निकलना चाहता था। यह प्रेम और अपने दल को धोखा देने के घटनाक्रम से पैदा हुआ भंवर था। लेकिन प्रेम के भंवर ने उसे बच निकल ने का एक मौका दिया था। यहां अंधेरा और गुस्सैल नदी दोनों ने मिलकर प्रपंच रच डाला था। वह भंवर के चक्रव्यूह में कुछ पल छटपटाता रहा, वह तब तक छटपटाता रहा, जब तक वह अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं कर पाया था। बुरा यह था कि उसके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का कोई दर्शक नहीं था। उसकी आंखों में धुंधली होती जा रही थी। परपरागंत परिभाषाओं को चुनौती देने वाला स्वयं को सम्बोधित तत्परता का परिचायक, असाधारण चुनौतियों का संरक्षक एक अविमुक्त युवक नदी की अनभिज्ञता के जाल में फंस गया। प्रचंड नदी का पूरा क्षितिज उसे अपनी सीमाओं में रहने का ज्ञान बांटकर उसकी जिंदगी की कुछ सांसों को रोककर उसके लिए उसकी वीरता को नेपथ्य में ले जा रहा था। सारी पारंगतता पानी में डूब रही थी, पर हिम्मत वहीं की वहीं जिंदा थी। वह डूबना नहीं चाहती थी। फिर हिम्मती मन ने एक शिशु की तरह जिद् छोड़ दी और आखिरी सांस ने इस लुटेरे का अलविदा कहकर अंधेरे में पसरा कोई एक रास्ता अपनाकर अपना मुंह मोड़ लिया। उत्कंठा और वीरता का पुजारी इस जहान के उर्जामयी कणों द्वारा अवशोषित हो चुका था।

दूसरी ओर का उदास दल अभी भी अपने दल के जांबाज साथी की राह देख रहा था। दल का कोई सदस्य सुबह तड़के नदी के घटते प्रवाह को नापने निकला। नदी ने जैसे उसे आवाज दी , ''ये लो अपने साथी को, संभालो इसे मैं इसे फिर से वापिस ले आई हूं मैंने इसकी जिद् को चकनाचूर कर दिया हैं ये अब कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगा मैंने इसके शरीर में पश्चाताप का रस घोल दिया है , यह कभी भी तुमसे विश्वासघात नहीं करेगा और न ही तुम्हारी परंपरागत परिभाषाओं को अपनी तीव्र ध्वनियों से चुनौती देगा। मैंने इसकी वीरता के श्रेष्ठ प्रदर्शन को देख लिया है। अब यह मेरी उर्जा के संग जीएगा और इस ब्रहमाण्ड की अथाह लहरों में अपनी वीरता का प्रदर्शन करेगा।'' वह साथी चिल्लाया, ''नदी मैं इंसानी लाश तैर रही है, आओ, दौड़े आओ, ख्वाजा रहम करे, ये लाश हमारे छोटे साथी की लग रही है।'' पूरा दल भागा, कुछ ही पलों में जांबाज लुटेरा नदी के किनारे बारीक पत्थरों के बिछौने पर आराम कर रहा था। पूरे दल की आंखों में आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी। सिर्फ एक ही सदस्य ऐसा था जिसकी आंखों में एक शुष्क रेगिस्तान फैल रहा था, वह दल का मुखिया था। उसकी आंखों में एक अजीब ही तरह की चमक थी, वह चमक उसकी किसी गुप्त जीत की ओर इशारा कर रही थी यह शायद उसके दल की प्रतिष्ठा इस भयावह हादसे के बाद और अधिक बढ़ने की जीत की चमक थी।

एक और जहां पूरा दल इस असमय हादसे से गहरे शोक में इसकी तह तक जाने को प्रत्यनशील था, वहीं दूसरी ओर दल का मुखिया मन ही मन इस घटना को अपनी दल की परंपरा की जीत में बदलने के लिए प्रबंधन में जुटा था। उसके मन ने यह युक्ति बनाई- दल का एक सबसे छोटा व जांबाज सदस्य रात के अंधेरे में किसी अन्जान चीज़ को कोई इन्सानी लाश समझ कर नदी में अकेला ही परिस्थिति अनुरूप कूदा और वह भंवर में फंस कर बड़ी बहादुरी निभाते हुए ,दल की प्रतिष्ठा बचाते हुए अपनी जिंदगी को अर्पित कर बैठा। दल का स्वाभिमान और जांबाज सदा उसकी अहसान मंद रहेगी। हम अगले वर्ष फिर आएंगे यही नदी की इच्छा है और यही ख्वाजा पीर की मर्जी। संताप दिवंगत जांबाज आत्मा को भव सागर में मिलने के बीच की मुख्य बाधा है। ■

- संदीप शर्मा

वंशबेल

पुजारी अपना रोना रोए जा रहा था और पीतांबर था कि दमयंती के ख्याल में खोया हुआ था। उसके दिमाग में तो, बस दमयंती का आकर्षक रूप चक्कर काट रहा था। ऐसा नहीं था कि उसने नारी देह की चमचमाहट पहले कभी न देखी हो। उसने दो-दो शादियाँ की थीं। जब पहली से बच्चा नहीं हुआ, तो उसने दूसरी खरीद ली, जो अब वह गठिया रोग से ग्रस्त हो बिस्तर से लगी पड़ी है। उसका समूचा शरीर सूखकर ठठरी हो गया है। पीतांबर को हर समय यही डर खाए जाता था कि वह निस्संतान ही मर जाएगा। उसकी वंशबेल खत्म हो जाएगी। उसका यह डर तब और बढ़ जाता, जब पुजारी या दूसरे लोग उसके सामने यही बात छेड़ देते। इस बात से उसकी दिमागी हालत भी कुछ गड़बड़ा गयी थी। 'पीतांबर, गाँव वाले तुम्हारे बारे में बेपर की उड़ा रहे हैं। कहते हैं कि तुम्हारा दिमाग चला गया है। तुम चिंता मत किया करो, इस दुनिया में ऐसे बेशुमार लोग हैं, जिनके तुम्हारी तरह बच्चा नहीं है। ये बच्चे-कच्चे, दुनियादारी सब माया है, प्रपंच है। छोड़ो इसे।'

गाँव का महाजन पीतांबर अपने घर के सामने पेड़ के ठूँठ पर बैठा था। वह पचास को पार कर चुका था। कभी वह काफी हट्टा-कट्टा था, लेकिन अब उसे चिंता ने दुबला दिया था। उसकी ठुड्डी के नीचे की खाल ढीली पड़कर लटकने लगी थी। वह दूर निगाहें टिकाए एक बच्चे को देखे जा रहा था, जो अपनी बंसी की फंसी डोरी को छुड़ाने की कोशिश में था।

एकाएक उसका ध्यान टूटा। गाँव का पुजारी अपनी खड़खड़ाती आवाज़ में उससे कह रहा था, 'तुम्हारा अपना तो कोई बच्चा है नहीं। तब तुम उस बच्चे को भूखी निगाहों से क्यों देखे जा रहे हो, फिर रुककर पूछा, 'अब तुम्हारी पत्नी कैसी है?'

'कई बार उसे शहर के अस्पताल में ले जा चुका हूँ, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसके सारे शरीर पर सूजन आ गयी है।'

'तब तो उससे बच्चा होने की कोई उम्मीद नहीं। लगता है पीतांबर, तुम्हारा वंश चलाने वाला कोई नहीं रहेगा।'

थोड़ी देर तक चुप खड़े रहने के बाद अपनी छोटी-छोटी आँखों में धूर्तता की चमक लिये पुजारी ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'दूसरी शादी के बारे में क्या सोचा है तुमने?'

पीतांबर अभी उत्तर देने ही वाला था कि वहाँ से गुजरती दमयंती पर उसकी निगाहें जा टिकीं। वह मठ के एक पुजारी की युवा विधवा थी। वर्षा के कारण भीगे कपड़े उसके शरीर से चिपक गए थे। उसकी जवान देह का रंग वैसा ही था, जैसा कि खौलते हुए गन्ने के रस के घने झाग का होता है। कद-काठ तो उसका अधिक नहीं था, पर थी वह बेहद आकर्षक। लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते थे। कुछ लोग तो उसे वेश्या कहते थे, ब्राह्मण वेश्या।

'अरी दमयंती, कहाँ से आ रही है? पुजारी ने आवाज लगाते हुए पूछा।

'देख नहीं रहे हो तुम ये रेशम के कौवे?

'तो तुमने अब उन मारवाड़ी व्यापारियों से भी मेलजोल बढ़ाना शुरू कर दिया?

दमयंती चुप रही। उसने अपनी साड़ी की तहों को निचोड़कर पानी निकाला। वे दोनों उसे ललचायी नज़रों से देखते रहे। जब यह चली गयी, तो पीतांबर ने कहा, 'सुना है कि वह गोश्त, मच्छी, सब कुछ खाती है?

'हाँ, उसने तो ब्राह्मणों की नाक कटवा दी है। विधवाओं के लिए जो विधान बना है, उसकी इसने रेड़ मारकर रख दी है। छीः छीः, कलियुग-घोर कलियुग।'

'खैर छोड़ो इसे, ये बताओ आपके यजमानों का क्या हाल है? पीतांबर ने पूछा।

'सब कुछ तो तुम जानते हो, और फिर भी पूछ रहे हो? मेरे बड़े भाई का मुझसे झगड़ा हो गया। ज्यादा काम तो उसी ने हथिया लिया। मैं तो बरबाद हो गया।'

'पुजारीजी, आपको मंत्र पढ़ना तो ठीक से आते नहीं, संस्कृत आप जानते नहीं, इसलिए तुम्हारे यजमान तुम से बिदक गए।'

'ये बात नहीं हैं। आज जमाना ही बदल गया है। पहले तो हर यजमान के घर से हर महीने एक जनेऊ, दो धोतियाँ और पाँच रुपए मिल जाते थे, पर अब तो कोई इन बातों को मानता ही नहीं। अपना खर्चा बचाने के लिए मेरा पुराना यजमान मणिकांत अपने दोनों बेटों को कामाख्या ले गया और वहीं उनका यज्ञोपवीत करवा आया। माइतानपुर के यजमानों ने अब अपने माता-पिता का श्राद्ध एक साथ ही करना शुरू कर दिया है।'

पुजारी अपना रोना रोए जा रहा था और पीतांबर था कि दमयंती के ख्याल में खोया हुआ था। उसके दिमाग में तो, बस दमयंती का आकर्षक रूप चक्कर काट रहा था। ऐसा नहीं था कि उसने नारी देह की चमचमाहट पहले कभी न देखी हो। उसने दो-दो शादियाँ की थीं। जब पहली से बच्चा नहीं हुआ, तो उसने दूसरी खरीद ली, जो अब वह गठिया रोग से ग्रस्त हो बिस्तर से लगी पड़ी है। उसका समूचा शरीर सूखकर ठठरी हो गया है।

पीतांबर को हर समय यही डर खाए जाता था कि वह निस्संतान ही मर जाएगा। उसकी वंशबेल खत्म हो जाएगी। उसका यह डर तब और बढ़ जाता, जब पुजारी या दूसरे लोग उसके सामने यही बात

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

छेड़ देते। इस बात से उसकी दिमागी हालत भी कुछ गड़बड़ा गयी थी।

'पीतांबर, गाँव वाले तुम्हारे बारे में बेपर की उड़ा रहे हैं। कहते हैं कि तुम्हारा दिमाग चला गया है। तुम चिंता मत किया करो, इस दुनिया में ऐसे बेशुमार लोग हैं, जिनके तुम्हारी तरह बच्चा नहीं है। ये बच्चे-कच्चे, दुनियादारी सब माया है, प्रपंच है। छोड़ो इसे।'

पुजारी ने देखा पीतांबर की बीमार पत्नी बिस्तर पर लेटी है। उसकी आँखें ऐसे जल रही हैं, जैसे अंधियारे जंगल में किसी हिंसक जानवर की जलती हैं। लगता था जैसे वह यह जानने की कोशिश कर रही हो कि उसके पति और पुजारी में क्या बातचीत हो रही है। उसकी जलती आँखों की चमक इतनी तेज थी कि दूर से भी उसकी वेदना का एहसास दे रही थी। पुजारी ने इधर-उधर देखकर पीतांबर के कान में फुसफुसाया, 'मैं तुम्हें इस चिंता से छुटकारा दिला सकता हूँ।'

'कैसे?

'इस बार गर्भपात का सवाल ही नहीं उठता। वह चार बार गर्भपात करा चुकी है और हर बार घर के पिछवाड़े बाँस के झुरमुट में उसे दफना चुकी है।'

'तुम क्या दमयंती की बात कर रहे हो? पीतांबर में जैसे किसी आवेश की लहर उठी हो, बोला, 'कहना क्या चाहते हो? 'यही कि अगर तुम चाहो तो दमयंती को अपना बना सकते हो।'

पीतांबर उठ खड़ा हुआ। उसकी हालत ऐसी हो रही थी जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। पुजारी ने उसकी बीमार पत्नी की ओर एक बार फिर देखा। उसकी आँखें पूरी तरह बंद थीं। शायद उसे दर्द का दौरा पड़ता था।

'मुझे दमयंती दिला दीजिए। मैं उसे हर तरफ का सुख दूँगा।' पुजारी के पोपले मुँह पर एक क्षण के लिए मक्कारीभरी मुस्कान तैर गयी। 'अच्छा, ठीक है। देखूँगा। उसकी दो छोटी बेटियाँ भी हैं। तुम्हें उनके बारे में भी सोचना होगा।'

पीतांबर ने अंदर जाकर रुपए निकाले और पुजारी के हाथ पर रख दिये। पुजारी गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ गया।

इंतजार करते हुए एक सप्ताह गुजर गया। पीतांबर का समूचा अस्तित्व जैसे पुजारी पर टिक गया था। इस बीच उसने कई बार दमयंती को आते-जाते देखा। देखते ही उसके भीतर और खलबली मच जाती। वह उसके खयाल में इतना डूब जाता था कि दमयंती उसे तरह-तरह की मुद्राओं में दिखायी देने लगती। वह हर वक्त घर के बाहर ही बैठा रहता। ये दिन भी ऐसे थे कि दमयंती सड़क के दोनों ओर बहने वाले नालों के किनारे उग आयी कलमी और दूसरी वनस्पतियों को बटोरने आती थी। दमयंती के लंबे, भूरे बाल पीतांबर की आँखों में अटक जाते।

एक दिन पीतांबर ने हिम्मत जुटा ही ली। दमयंती जब हरे पत्ते तोड़ रही थीं, तो वह उसके निकट गया और बोला, 'अगर तुम हर रोज इसी तरह कीच भरे पानी में खड़ी रहोगी, तो तुम्हें ठंड लग जाएगी।'

दमयंती ने केवल एक बार उसकी ओर देखा। फिर काम में लग गयी। बोली कुछ भी नहीं।

'मैं नोकर को भेज दूँगा। तुम उसे बता देना जितनी वनस्पति चाहिए वह इकट्ठी कर देगा। और...' पीतांबर ने फिर कहा। लेकिन उसका वाक्य अधूरा ही रहा। दमयंती ने हिकारतभरी तीखी नज़रों से जैसे ही उसकी ओर देखा, वह तुरंत वहाँ से हट गया। उसने देखा कि उसकी पत्नी टूटे पंखों वाले पक्षी की तरह फिर बिस्तर पर लुढ़क गयी है।

इंतजार करते-करते पीतांबर का धैर्य जवाब दे ही रहा था कि तभी पुजारी आ पहुँचे। उन्हें देखकर ही वह पूछने लगा, 'क्या खबर लाए हो मेरे लिए, फटाफट बताओ।'

पुजारी ने चारों तरफ अपनी नज़र घुमायी। उसकी बीमार पत्नी लाश की तरह बिस्तर पर पड़ी थी। पुजारी ने पीतांबर के कानों में फुसफुसाया, 'ध्यान से सुनो। मुझे एक खबर मिली है। इस समय उसका पेट बिल कुल खाली है। अभी मुश्किल से एक महीना हुआ है, जब उसने अपनी पिछली करतूत का फल जमीन में दबाया हैं। मैंने उससे तुम्हारे बारे में बात की थी। वह एकदम लाल-पीली हो गयी। बल्कि उसने जमीन पर थूक दिया, कहने लगी- 'वह कुत्ता, कैसे हिम्मत की उसने ऐसी बात मुझ तक पहुँचाने की, वह जानता नहीं कि मैं यजमानी ब्राह्मण कुल से हूँ और वह कीड़ा नीच जाति का महाजन, मैंने उससे कहा कि जब तू पाप की कीचड़ में लोट लगा ही रही है, तब ऊँची जाति क्या और नीची जाति क्या? कोई ब्राह्मण लड़का तो तुझसे शादी करने से रहा। एक तो विधवा उस पर से दो-दो बेटियाँ। कम-से-कम वह तुमसे शादी करने को तैयार तो है। मैंने उसे साफ-साफ कह दिया कि तुम पंचायत की रजामंदी ले लोगे, और हवन करके विधिवत शादी कर लोगे। उसने तुम्हारी पत्नी के बारे में पूछताछ की। मैंने उसे बताया कि तुम्हारी पत्नी तो उस तिनके की तरह है जो हवा के झोंके से कभी भी उड़ सकता है। एकाएक उसने रोना शुरू कर दिया, बोली- 'मेरी तबियत ठीक नहीं रहती। मैं चाहती हूँ कि मुझे ऐसा सहारा मिले, जो ठोस हो और बना रहने वाला हो। मैंने उससे कहा, 'तुम्हारी तबियत ठीक कैसे रह सकती है, मैंने सुना है कि तुमने अपने पेट से चार बार कचरा निकलवाया है। अगर पंचायत ने इस बात को पकड़ लिया, तो समझ लो, तुम्हारा जीना दुश्वार हो जाएगा। तुम अब तक इसलिए बची हुई हो कि तुम ब्राह्मण हो।

लेकिन कब तक चलेगा यह, उसका कहना था, 'मैं कर भी क्या सकती हूँ, मुझे जिंदा भी तो रहना है। अब मेरे पास न कोई काम है न धंधा। सभी मुझे भ्रष्ट और पतित समझते हैं। और मेरे असामी, वे सब चोट्टे हो गए। धान का मेरा हिस्सा भी नहीं देते। मेरी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। ऐसी हालत में मै इन दो नन्हीं बच्चियों को लेकर कहाँ जाऊँ? मैंने लगान भी नहीं चुकाया। एक दिन मेरी जमीन की भी नीलामी हो जाएगी। बताओ मैं क्या करूँ?

'खैर मेरे प्रस्ताव का क्या हुआ?

'हाँ... हाँ... मैं उसी पर आ रहा हूँ। वह तुमसे मिलना चाहती है। पूर्णमासीवाली रात को... अपने ठिकाने पर... पिछवाड़े वाले कोठे में।' यह सुनते ही पीतांबर गदगद हो गया। पुजारी ने इस मौके को हाथ से न जाने दिया, उसके कान में फुसफुसाया, 'चलो, मेरे लिए चालीस रुपए निकालो। मच्छरों ने नाक में दम कर रखा है। मैंने एक मच्छरदानी लानी है।'

पीतांबर अब अपने घर के भीतर गया। उसने देखा कि उसकी पत्नी पूरी तरह जागी हुई है। उसने उसकी चिंता किये बिना संदूकची से पैसे निकाले। वापस मुड़ा तो देखा कि वह टकटकी लगाए देखे जा रही है। एकाएक भड़क उठा, मुझे इस तरह घूर रही है, मैं तेरी आँखें नोंच लूँगा।'

पुजारी ने सुना तो सब कुछ समझ गया और पीतांबर से पैसे लेते हुए बोलो 'देखो, अगर यह ज्यादा घूरती हो, तो इसे थोड़ी अफीम दे दो।' कहकर वह अपने दो दाँतों को दिखाते हुए पोपले मुँह से हँस दिया। फिर संजीदा होकर कहना शुरू किया, 'लेकिन उस कुतिया को पैसे की बहुत हूक है। अब सब तय हो गया है। तुम अब उसे उसके उसी ठिकाने पर दबोच सकते हो।'

पीतांबर ने अपनी पत्नी की ओर एक नज़र डाली। उतनी दूरी से भी वह देख सकता था कि उसके माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदे चू आयी हैं।

अगस्त का महीना था। पूर्णमासी की रात। पीतांबर ने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने। फिर आइना उठा

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

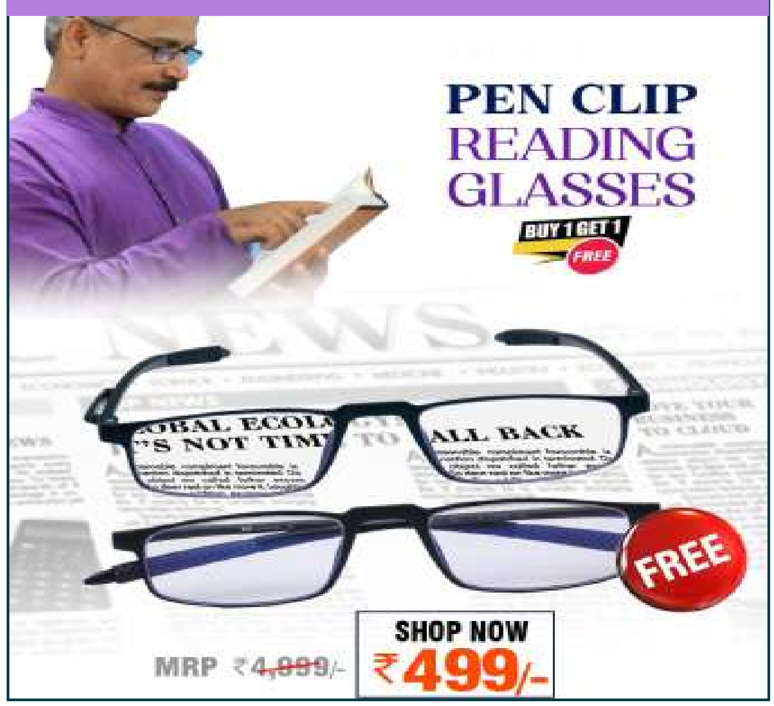

अपना चेहरा निहारने लगा। चेहरे पर उसे वे झुर्रियाँ दिखायी दीं, जो एक-दूसरे को काट रहीं थीं। वह दमयंती के घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में साल का घना जंगल पड़ता था। उसका घर जंगल के पार, गाँव के बाहरी हिस्से में था। एक तरह से यह जगह बहुत ही उपयुक्त थी, क्योंकि दमयंती यहाँ निश्चिंत होकर जो मन में आए, कर सकती थी।

साल के जंगल को पार करते उसे रास्ता काटता गीदड़ों का एक झुंड दिखायी दिया। वह दमयंती के घर के फाटक के पास पहुँचा और चुपके से उसके भीतर हो लिया। एक कमरे में मद्धिम-सी मिट्टी के तेल की ढिबरी जल रही थी। उसने भीतर झाँका। दमयंती इंतजार करती पिछवाड़े के कोठे से पीतांबर की हर गतिविधि देख रही थी। उसने वहीं से पुकारा, 'अरे इधर। यहाँ?

दमयंती कोठे की टूटी हुई दीवार से लगी खड़ी थी। पीतांबर उसकी आँखों में आँखें डालकर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। तभी उसने सुना, वह कह रही थी, 'पैसे लाए हो? वह स्तब्ध रह गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि उसका पहला सवाल पैसा ही होगा। 'यह रहे। पकड़ो। मेरा जो कुछ है, सब तुम्हारा है।'

पैसे रखते हुए उसने अपनी कमर में खोंसा हुआ बटुआ अपने ब्लाउज में रख लिया। अब उसने दीया उठाया और उसे एक कमरे में ले गयी। वहाँ एक खटिया पड़ी थी। यह खटिया उसके पति को गोसाई की अंत्येष्टि के समय मिली थी। फूँक मारकर उसने दीया बुझा दिया। दो माह बीत चुके थे इसी तरह पीतांबर को दमयंती के पास आते-जाते। पीतांबर उसके घर से निकला ही था कि दमयंती अलसाती-सी कुएँ की ओर बढ़ी और वहाँ नहाने लगी। ठीक उसी समय पुजारी आ पहुँचा और बड़े व्यंग्य से बोला, 'उस ब्राह्मण लड़के का संग पाने के बाद तो तुम नहाती नहीं थीं? अब क्या हो गया है?

दमयंती ने कोई उत्तर नहीं दिया। 'जानता हूँ पीतांबर निचली जाति का है। यही बात है न?

एकाएक दमयंती उठ दौड़ी। वह सहन के दूसरे कोने में पहुँची और वहाँ दुहरी होकर उल्टी करने लगी। पुजारी लपककर उसके पास पहुँचा और धीरे-से पूछा, 'यह पीतांबर का ही होगा?'

उसने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

वाह-कितनी बढ़िया खबर है। पीतांबर तो बच्चे के लिए तरस रहा है।

दमयंती ने इस पर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। अब मैं चलता हूँ और और उसे यह खबर देता हूँ। अब वह तुमसे खुल्लमखुल्ला शादी कर सकता है।' फिर दमयंती के निकट आया और फुसफुसाता हुआ बोला, 'तुम्हारे यहाँ जो कुछ चलता रहता है, लोग उससे परेशान हैं। बीच-बीच में बात भी होती रहती है कि पंचायत बुलायी जाए। और सुनो...

दमयंती ने कुछ नहीं सुना, वह उल्टियाँ करती रही। पुजारी कहता गया, 'इस सबके बावजूद पीतांबर तुमसे शादी करने को तैयार है। देखो, मै इस जनेऊ पर हाथ रखकर कसम खाता हूँ कि अगर इस बार भी तुमने इस बच्चे को गिराया। तो तुम नरक की आग में जलोगी।'

पीतांबर को सारी खबर सुनाकर पुजारी बोला, 'अब लगता है तुम्हारा स्वप्न पूरा होने को है। अगर उसने इस बच्चे को न गिराया तो विश्वास रखो, वह तुमसे शादी कर लेगी।'

पीतांबर का समूचा शरीर खुशी से थरथराने लगा, क्या यह वाकई सच है, दमयंती के पेट में बच्चा मेरा ही है- होगा। पुजारी झूठ क्यों बोलेगा, मेरा ही बच्चा होगा। 'देखना कहीं मेरी उम्मीद पर पानी न फिर जाए। तुम जानते ही हो, यदि यह बच्चा गिर गया, तो मेरी वंशबेल को आगे बढ़ाने वाला कोई नहीं रहेगा। अब तो दमयंती की मुट्ठी में ही मेरी जान है।'

'तुम चिन्ता मत करो। जैसे एक गिद्ध लाश की चौकसी करता है, मैं भी उसी तरह दमयंती की चौकसी करूँगा। साथ ही उस बुढ़िया दाई को भी चेतावनी दे दूँगा कि बच्चा गिराने के लिए वह इसे कोई उल्टी-सीधी जड़ी-बूटी न दे। लेकिन खेल सारा पैसे का है। इसके लिए मुझे ढेर सारी रकम चाहिए।'

रकम लेने के लिए पीतांबर घर में दाखिल हुआ। उसे फिर बीमारी पत्नी की छेदती पत्थर हुई आँखों का सामना करना पड़ा। उन आँखों में लांछना का भाव था, चाहे उसके लिए हो या पुजारी के लिए। वह जोर से गुर्राते हुए बोला, 'अरी, बाँझ कुतिया। इस तरह मेरी तरफ क्यों देख रही है?

पीतांबर अब हर समय अपने घर के बाहर बैठ दमयंती के पेट में पल रहे अपने बच्चे के बारे में सपने लेता रहता। कल्पना करता कि अब उसका बेटा अपनी पूरी जवानी में हैं, और उसे नदी के किनारे घुमाने ले गया है। फिर उसे ऐसे लगता कि उसकी वंश बेल उसे चमचमाते भविष्य की ओर खींचे ले जा रही है।

पाँच महीने बीत गए। पीतांबर ने सुन रखा था कि पाँच महीने का गर्भ नष्ट नहीं किया जा सकता। वह चाह रहा था कि किसी तरह दिन जल्दी-जल्दी बढ़ जाएँ।

एक दिन दोपहर को तेज अंधड़ आया। चारों ओर घुप्प अँधेरा छा गया। भारी वर्षा हुई। बादलों से बिजली गिरी और सहन वाले पेड़ को दो-फाड़ कर गयी। ऐसी घनघोर बरसाती रात में एकाएक पीतांबर के कानों में कोई स्वर सुनायी पड़ा। कोई उसे बुला रहा था। हाथ में लालटेन लेकर वह बाहर की ओर लपका। एक आकृति उसकी आखों के सामने उभरी। पुजारी की थी। उसके मुँह से निकल पड़ा, 'अरे, पुजारीजी तुम?

पुजारी घबराया हुआ-सा बोला, 'पीतांबर, तुम्हारी पहली पत्नी अशुभ घड़ी में मरी थी न, उसी की वजह से ये सब हो रहा है। 'क्या हो रहा है? क्या हुआ?

'शास्त्रों में कहा गया है कि जब किसी व्यक्ति की ऐसी अशुभ घड़ी में मृत्यु होती है, जैसी कि तुम्हारी पत्नी की हुई थी, तो घास का तिनका भी नहीं उपजता। बल्कि, जो होता भी तो वह भी जलकर राख हो जाता है। तुम्हारे लिए अब सब कुछ जलकर राख हो गया।'

पीतांबर लगभग चीख पड़ा, 'हुआ क्या है, ईश्वर के लिए मुझे जल्दी बताओ।'

'क्या कहूँ। उसने बच्चे को नष्ट कर दिया। कहती थी कि वह किसी छोटी जाति वाले का बीज अपने भीतर नहीं पनपने दे सकती।'

पीतांबर के साथ सपने में नदी किनारे टहलने वाले युवक का पाँव एकाएक फिसल गया और वह नदी में जा गिरा।

एक रोज आधी रात को दमयंती एकाएक चौंककर उठी। उसके पिछवाड़े जमीन खोदने की आवाज आ रही थी। जमीन वही थी, जहाँ कुछ रोज पहले दमयंती ने अपने भ्रूण को दबाया था। दमयंती ने देखा, पीतांबर पागलों की तरह जमीन खोदे जा रहा है। दमयंती का शरीर सर से पाँव तक काँप गया। हिम्मत कर उसने आवाज दी, 'ए महाजन, अरे महाजन, क्यों खोदे जा रहे हो जमीन?

पीतांबर ने कोई जवाब नहीं दिया। बस खोदता रहा। दमयंती पागलों की तरह चिल्लायी, 'क्या मिल `गा तुझे वहाँ, हाँ मैंने उसे दबा दिया है। वह नर ही था, पर वह मांस का एक लोथड़ा भर ही था।'

पीतांबर का चेहरा तमतमाया हुआ था और उसकी आँखें जल रहीं थीं, वह चीखकर बोला, 'मैं उस लोथड़े को अपने इन हाथों से छूना चाहता हूँ। वह मेरी वंशबेल की कड़ी थी, मेरे ही खून से बना था वह। मै उसे एक बार जरूर छूकर देखूँगा।' ■

-इंदिरा गोस्वामी (रूपांतरकार : श्रवण कुमार)

3 Austrian Diamond Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,099
Only At
₹499

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

सिंघाड़ा के फायदे...

सर्दियां शुरू होते ही बाजार में सिंघाड़ा बिकना शुरू हो जाता है. क्या आप जानते हैं सिंघाड़े में कई औषधीय गुण होते हैं, जो शरीर तमाम समस्याओं को दूर कर सकते हैं. बहुत सारे लोग इसे पीसकर बने आटे का भी इस्तेमाल करते हैं. अस्थमा के रोगी जिन्हें सांस से जुड़ी तकलीफ ज्यादा होती है, उनके लिए सिंघाड़ा बेहद फायदेमंद है. डॉक्टर्स कहते हैं कि सिंघाड़ा नियमित रूप से खाने से सांस संबंधी समस्याओं में आराम मिलता है.

कैल्शियम से भरपूर सिंघाड़ा आपकी हड्डियों में जान डालने का काम करता है. आगे चल कर इससे ऑस्टोपरोसिस की समस्या भी नहीं होती है. हड्डियां के अलावा यह आपके दांत और आंखों के लिए भी फायदेमंद है.

गर्भवती महिलाओं की सेहत के लिए भी सिंघाड़े को काफी अच्छा माना जाता है. शिशु और मां की सेहत के लिए यह काफी अच्छा है. इससे पीरियड्स और गर्भपात दोनों ही समस्याओं से राहत मिलती है.

शरीर के ब्लड सर्कुलेशन के लिए भी सिंघाड़े को अच्छा माना जाता है. यूरीन से जुड़े रोगों में भी इसके कई चमत्कारी फायदे है. यह थाइरॉयड और दस्त जैसी दिक्कतों मे भी बेहद कारगर है.

सिंघाड़ा बवासीर जैसी मुश्किल समस्याओं से भी निजात दिलाने में कारगर साबित होता है. १०० ग्राम सिंघाड़े में ६% विटामिन सी और १५% विटामिन बी-६ पाया जाता है

सिंघाड़ा फटी एड़ियों को भी ठीक करने में बेहद कारगर है. शरीर के किसी हिस्से में दर्द या सूजन से राहत पाने के लिए भी आप इसका पेस्ट बनाकर उस जगह लगा सकते हैं.

सिंघाड़े में आयोडीन भी पाया जाता है जो गले संबंधी रोगों से रक्षा करता है. इसके अलावा इसमें पाए जाने वाले पॉलिफेनल्स और फ्लेवोनॉयड जैसे एंटी ऑक्सीडेंट एंटी-वायरल, एंटी बैक्टीरियल, एंटी कैंसर और एंटी फंगल फूड माने जाते हैं.

चाय अजवाइन की...

अजवाइन हर घर में पाया जाता है। और आपको इसके फायदे भी पता होने चाहिए। इसका उपयोग सब्जियों, सूप, सजावट, पुरी, स्नैक्स आदि में किया जाता है, जो न केवल स्वाद बढ़ाता है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी स्वस्थ है। अजवाइन एक दर्द निवारक के रूप में कार्य करता है। जिस तरह अजवाइन स्वस्थ होता है, उसी तरह इसके पत्ते भी स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छे होते हैं। इसके पत्तों को उबालकर चाय बनाएं। इसे पीने से शरीर के अंदर से डिटॉक्स निकलता है। चाय बनाकर पीने से यह शरीर को डिटॉक्स करता है। चाय बनाने के लिए अजवायन की पत्ती को सुखाएं। इसे पानी में डालकर चाय की तरह बना लें। इसकी पत्तियां कैरोटिनॉयड, फाइबर, कैल्शियम, मैंगनीज, फोलेट आदि से भरपूर होती हैं, अगर आप इसकी चाय रोज पीते हैं, तो आप लंबे समय तक जवान और स्वस्थ बने रहेंगे।

अगर आपको सर्दी, खांसी और जुकाम की लगातार समस्या है, तो इसकी पत्तियों को पानी में उबालें। इससे बने काढ़े से खांसी और गले की खराश जल्दी ठीक हो जाएगी। यदि स्वाद फीका पड़ता है, तो आप शहद जोड़ सकते हैं।

पेट साफ करने के साथ-साथ यह फेफड़ों के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखता है। अगर आपको फेफड़ों या किसी भी तरह के संक्रमण में कोई असुविधा है, तो इस औषधीय जड़ी बूटी का भी उपयोग करें। इसमें शक्तिशाली एंटीबायोटिक, एंटीकैंसर, एंटीऑक्सिडेंट और विरोधी भड़काऊ गुण होते हैं, जो आपको कई बीमारियों से बचाते हैं ताकि आप एक स्वस्थ जीवन जी सकें।

अगर आप बार-बार जलन, बार-बार संक्रमण से परेशान हैं, तो अजवायन की पत्ती इन समस्याओं को दूर करती है। इसमें सोडियम, कैल्शियम, आयरन, पोटैशियम होता है, जो मूत्र संबंधी समस्याओं को ठीक करता है। ये पत्तियां पाचन तंत्र और मस्तिष्क में होने वाले संक्रमण, सूजन आदि को भी रोकती हैं। इसमें एंटी-एजिंग गुण भी होते हैं, जो आपकी त्वचा को लंबे समय तक जवान रख सकते हैं। गठिया स्वास्थ्य के लिए एक बीमारी है, इसलिए कुछ दिनों के लिए इन पत्तियों से तैयार रस पीने की कोशिश करें। इससे तंत्रिका थकान समाप्त होती है और शरीर कमजोर नहीं लगता है। यह उन लोगों के लिए भी फायदेमंद है जिन्हें गठिया है। यह हड्डियों में सूजन को भी कम करता है।

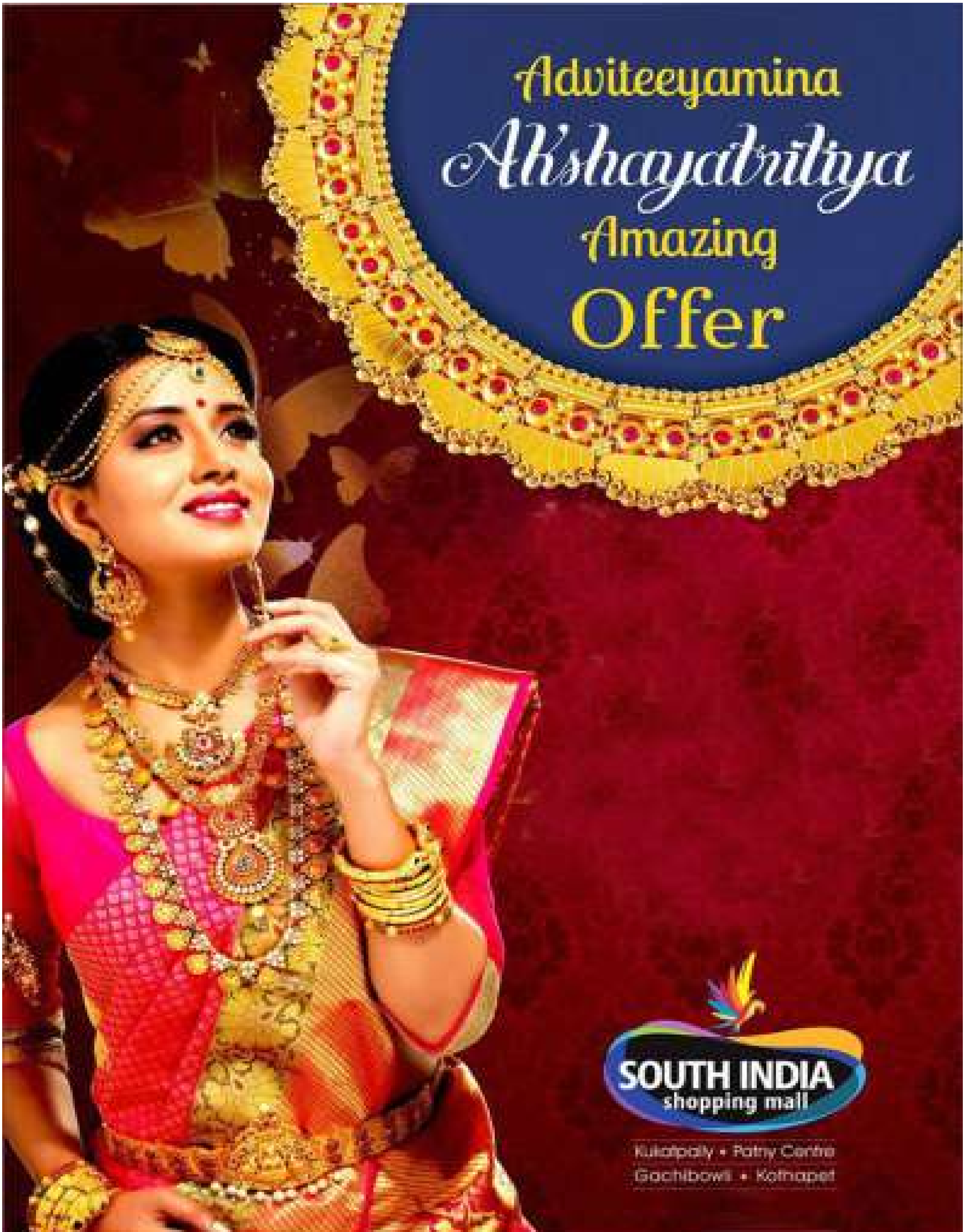
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. : ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
MRP
SHOP NOW
₹1,999/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
MRP
SHOP NOW
₹1,499/-

आंवला की खेती

आंवला को अमर फल भी कहा जाता है। मुरब्बा,अचार,सब्जी, जैम, जैली, त्रिफला चूर्ण, च्यवनप्राश, अवलेह, शक्तिवर्धक औषधियों सहित अनेक आयुर्वेदिक औषधियों तथा केश तेल, चूर्ण, शैम्पू आदि के उत्पादन में इसका इस्तेमाल किया जाता है। कहने का मतलब इस फल की व्यापारिक खेती करके अच्छी कमाई की जा सकती है।

मिट्टी एवं जलवायु

किसी भी प्रकार की मिट्टी में आंवला की खेती की जा सकती है। लेकिन बलुई भूमि से लेकर चिकनी मिट्टी तक में आंवले को उगाया जा सकता है। गहरी उर्वरा बलुई दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे उत्तम मानी जाती है। लेकिन आंवला को ऊसर, बंजर एवं क्षारीय जमीन पर भी लगाया जा सकता है। आंवला की खेती समशीतोष्ण जलवायु वाली जगह पर अच्छी होती है। जहां पर अधिक सर्दी और अधिक गर्मी न पड़े, वहां पर आंवला की खेती में अच्छी पैदावार होती है। आंवला के पौधों की बुआई के समय सामान्य तापमान की आवश्यकता होती है। आंवला के पौधों की बढ़वार के लिए गर्मी के मौसम की आवश्यकता होती है। आंवले का पौधा शून्य डिग्री तापमान से ४५ डिग्री तक तापमान सहन कर सकता है। लेकिन पाला इसके लिए हानिकारक है।

खेत की तैयारी कैसे करें

आंवला के पौधे को लगाने से पहले खेत को काफी अच्छे तरीके से तैयार करना होता है। खेत को रोटावेटर से जुताई करके मिट्टी पलटनी चाहिये। उसके बाद खेत को कुछ दिन के लिए खुला छोड़ देना चाहिये ताकि सूर्य के प्रभाव से दीमक आदि कीटों का उपचार हो सके। बाद में खेत की जुताई करके और पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिये। इसके बाद पौधों को लगाने के लिए गड्ढों को तैयार करना चाहिये। पथरील ी भूमि हो तो गड्ढे में आने वाली कंकरीली परत अथवा कंकड़ आदि को हटा देना चाहिये। यदि ऊसर भूमि में खेती कर रहे हों तो ऊसर भूमि में बुवाई से एक माह पहले ८ मीटर के आसपास गड्ढों की खुदाई कर लेनी चाहिये। गड्ढे १ से १.५ मीटर की लम्बाई चौड़ाई वाले होने चाहिये। लाइन से लाइन की दूरी भी ८-१० मीटर की होनी चाहिये। एक सप्ताह तक खुले छोड़ने के बाद सामान्य भूमि के प्रत्येक गड्ढे में लगभग ५० किलोग्राम गोबर की खाद, नाइट्रोजन १०० ग्राम, २०-२० ग्राम फास्फोरस और पोटाश देना चाहिये। इसके साथ ही ५०० ग्राम नीम की खली व १५० ग्राम क्लोरोपाइरिफास पाउडर मिलाकर गड्ढे को १० से १५ दिन के लिए खुला छोड़ दें। उसके बार किसी अच्छी नर्सरी से पौध लाकर उसमें रोपाई करें।

आंवला का वैज्ञानिक नाम अम्बेलिका आकिसिनेलिस है। यह मध्यम आकार का औषधीय पौधा है। आयुर्वेद की महत्वपूर्ण औषधि त्रिफला इससे बनाई जाती है। इस वृक्ष का धार्मिक महत्व भी है कार्तिक के माह में इस वृक्ष के नीचे खाना बनना शुभ माना गया है। इसे घर के पीछे एवं छोटे उद्यानों में भी उगाया जाता है। इस वृक्ष के समस्त भाग जैसे फल, पत्ते, जड़ तथा छाल उपयोग में लाये जाते हैं। पौराणिक ग्रंथों में भी इसका महत्व बतलाया गया है पद्यम पुराण में कहा गया है कि जहाँ-जहाँ आंवले के वृक्ष होते हैं वहाँ-वहाँ अलक्ष्मी का नाश हो जाता है। सभी देवता आंवले के वृक्ष से अत्यंत संतुष्ट होते हैं और वे प्रसन्न होकर आंवले के वृक्ष में स्थिर रहते हैं तथा एक क्षण को भी उस स्थान का त्याग नहीं करते हैं।

पौधे कैसे तैयार करें

आंवला के पौधे बीज और कलम दोनों ही तरीके से तैयार किये जा सकते हैं। कलम के माध्यम से पौध तैयार करना उत्तम माना जाता है। नर्सरियों से अच्छे किस्म के पौधों की कलम मिल जाती है। आंवले की पौध को भेट कलम एवं छल्ला विधि से भी तैयार किया जाता है। बीज से पौध तैयार करने के लिए सूखे फलों से बीज निकाल कर १२ घंटे तक गोमूत्र या बाविस्टिन

के घोल में डुबा दिया जाता है और उसके बाद बीजों को नर्सरी में पॉलीथिन में उर्वरक और मिट्टी मिलाकर रख दिया जाता है। बीजों से जब अंकुर निकलने लगते हैं तब जरूरत के समय उन्हें खेत में बने गड्ढों में रोप दिया जाता है।

पौधों की रोपाई का समय और विधि

आंवला के पौधों को लगाने का सबसे सही समय जून से लेकर सितम्बर तक होता है। इसलिये खेत यानी गड्ढों को मई में ही तैयार कर लेना चाहिये। जून में जब आपकी पौध तैयार हो जाये तो एक महीने पहले से तैयार गड्ढों में पौध को रोप देना चाहिये। गड्ढों में पिंडी की साइज का एक छोटा गड्ढा तैयार कर लेना चाहिये। पौधों को रोपते समय पिंडी पर लगायी गयी पॉलिथिन या पुआल को हटा देना चाहिये। छोटे गड्ढे में पौधों को रोपने के बाद चारों ओर की मिट्टी को खुरपा के बेंट या अपने हाथों से अच्छी तरह से दबा देना चाहिये। उसके बाद हजारा से हल्की सिंचाई करनी चाहिये। किसान भाइयों पौधों को लगाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि एक खेत में एक किस्म के पौधे न लगायें।

सिंचाई का प्रबंधन

आंवला के पौधों को शुरुआत में ही सबसे ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता होती है। पौधों की रोपाई के साथ ही पहली सिंचाई हल्की करनी चाहिये। इसके बाद गर्मियों में प्रत्येक सप्ताह और सर्दियों में १५ दिन के बाद सिंचाई अवश्य करनी चाहिये। वर्षा के मौसम में यदि बरसात न हो तब पानी देने का प्रबंध करना चाहिये। पौधा बड़ा हो जाये तब महीने में एक बार ही सिंचाई की जरूरत होती है। जब कलियां आने लगें तभी से सिंचाई बंद कर देनी चाहिये अन्यथा फूल फल बनने से पहले ही झड़ कर गिर सकते हैं। पैदावार कम हो सकती है।

उर्वरक व खाद प्रबंधन

आंवले की खेती के लिए पोषक तत्वों को नियमानुसार दिया जाना चाहिये। पौधों की रोपाई से पहले गड्ढे को करते समय खाद दिये जाने के बाद एकवर्ष पूरा होने पर प्रत्येक पौधे को ५ किलो गोबर की खाद, १०० ग्राम पोटाश, ५० ग्राम फास्फोरस और १०० ग्राम नाइट्रोजन दिया जाना चाहिये। इन सभी खाद व उर्वरकों की मात्रा को प्रत्येक वर्ष एक गुना बढ़ाते रहना चाहिये। जैसे पहले वर्ष में आपने गोबर की खाद ५ किलो डाली, तो दूसरे वर्ष १० किलो और तीसरे वर्ष १५ किलो देनी चाहिये। इसी तरह से अन्य उर्वरकों की मात्रा को बढ़ाना चाहिये जैसे फास्फोरस को ५० ग्राम से बढ़ा कर १०० ग्राम और १५०ग्राम कर देना चाहिये। पोटाश और नाइट्रोजन की मात्रा को १००-१०० ग्राम से बढ़ाकर २०० और ३०० ग्राम कर देनी चाहिये। खाद और उर्वरक देने का क्रम दस वर्ष या उससे अधिक समय तक बनाये रखना चाहिये। खाद डालने के लिए समय का भी किसान भाइयों को ध्यान रखना चाहिये। जनवरी माह में फूल आने से पहले गोबर, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा डाल देनी चाहिये जबकि नाइट्रोजन की आधी मात्रा डाली जानी चाहिये। नाइट्रोजन की बची हुई आधी मात्रा को जुल ाई व अगस्त माह में डालनी चाहिये। यदि मृदा क्षारीय है तो उसके खाद में १०० ग्राम बोरेक्स यानी सुहागा के साथ जिंक सल्फेट और कॉपर सल्फेट १००-१०० ग्राम मिलाना चाहिये।

आंवले की खेती में खाद, उर्वरकों के अलावा जैविक खाद भी दिये जाने से फल की गुणवत्ता काफी अच्छी हो जाती है। प्रत्येक पौधे को १ किलो केंचुए की खाद डालने के बाद केले के पत्तों और पुआल से पलवार करने से काफी अच्छी फसल मिलती है।

पेड़ों की कटाई-छंटाई तथा निराई

आंवला के पौधों को एक मीटर तक बढ़ने के बाद कटाई-छंटाई करना चाहिये ताकि पौधों की बढ़वार सीधी न होकर घने वृक्ष की तरह हो ताकि अधिक फल लग सकें। पौधों की समय-समय पर निगरानी करते रहना चाहिये। सूखे व रोग ग्रस्त पौधों को निकाल कर बाहर करते रहना चाहिये। खरपतवार को नियंत्रण के लिए पौधों की रोपाई के बाद उनकी निगरानी करते रहना चाहिये। एक साल में सात या आठ बार निराई-गुड़ाई करने से जहां खरपतवार का नियंत्रण हो जाता है वहीं पौधों को विकास के लिए आवश्यक ऑक्सीजन जड़ों को मिल जाता है। आंवला में फल लगने के समय कई रोग व कीट लगते हैं। इनका नियंत्रण करना जरूरी होता है। ल गने वाले रोग व कीट इस प्रकार हैं:-

काला धब्बा रोग: आंवला के फलों पर काले धब्बे का रोग लगता है। इस रोग के लगने परआंवला के फल ों पर गोल-गोल काले धब्बे दिखाई देने लगते हैं। इस रोग को देखते ही पौधों की जड़ों व पौधे पर बोरेक्स का छिड़काव करना चाहिये।

छाल भक्षी कीट: यह कीट पौधे की शाखाओं के जोड़ में छेद बनाकर रहते हैं। इनके लगने से पौधों का विकास रुक जाता है। इसलिये इस कीट के हमले को देखने के बाद किसान भाइयों को पौधों के जोड़ों पर डाइक्लोरवास को डाल कर छेदों को मिट्टी से बंद कर देना चाहिये।

लाल रंग के धब्बे दिखने लगते हैं। इस रोग के नियंत्रण के लिए इंडोफिल एम-४५ का छिड़काव पेड़ों पर करना चाहिये।

गुठली छेदक कीट: यह कीट सीधे फल पर हमला करता है। इसका लार्वा फल और उसकी गुठली को नष्ट कर देता है। इस कीट पर नियंत्रण के लिए किसान भाइयों को चाहिये कि वे पौधों पर कार्बारिल यामोनोक्रोटोफॉस का छिड़काव करें।

फल फफूंदी रोग: यह रोग भी कीट के माध्यम से लगता है। इस रोग के लगने से फल सड़ने लगता है। इसके नियंत्रण के लिए पौधों पर एम-४५ साफ और शोर जैसी कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिये।

फलों की तुड़ाई-छटाई और लाभ

आंवला का पौधा तीन से चार साल बाद फल देना शुरू कर देता है। फूल लगने के ५ से ६ महीने के बाद ही आंवला पककर तैयार हो जाता है। पहले यह फल हरे दिखते हैं फिर पकने के बाद हल्के पीले रंग के दिखाई देने लगते हैं। जब फल पके नजर आयें तब उन्हें तोड़ लेना चाहिये। साथ ही उन्हें ठंडे पानी से धोकर छाया में सुखायें उसके बाद बाजार में बेचने के लिए भेजें। किसान भाइयों एक अनुमान के अनुसार एक पेड़ से लगभग १०० से १२५ किलो तक फल मिलते हैं। एक एकड़ में लगभग २०० पौधे होते हैं। इस तरह से आंवले का उत्पादन लगभग २० हजार किलो हो जाता है। यदि बाजार में आंवले का भाव १० किलो भी है तो किसान भाई को दो लाख रुपये की आमदनी हो सकती है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
ज्यादा लंबी रचना न भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532